प्रकाशक :—
रामप्रसाद लोहिया,
प्रोप्राइटर
बम्बई पुस्तक भण्डार,
१६५।१, हरिसन रोड
कलकत्ता।



मुद्रक
रामदेव झा
नेशनल लिटरेचर प्रेस,
१०६, काटन स्ट्रीट,
कलकत्ता।

प्राथमिका

जो युवक मंजिलकी ओर चल तो पड़े हैं किन्तु मार्गकी कठिनाइयाँ जिन्हें कदम-कदमपर संत्रस्त करती रहती हैं, उनके प्राणोंको नूतन शक्तिसे समन्वित करनेके लिये मैंने यह पुस्तक लिखी है।

मेरा विश्वास है, जीवनके इस दुर्गम एवं तिमिराकीर्ण यात्रा-पथमें यह पुस्तक केवल उनके आंसुओंको ही पोंछनेमें समर्थ नहीं होगी, अपितु उनके झुके हुए मस्तकको ऊपर उठाते हुए उनमें अभिनव कर्मोन्मादनका सन्निवेश करनेमें भी समर्थ हो सकेगी।

दुर्भाग्यकी अमावसने झंझानिलके द्वारा जिनके समस्त दीपकोंको निर्वापित कर दिया हो और अन्तरिक्षके दूरवर्त्ती तारकोंसे आलोककी भीख माँगते- मांगते जिनके प्राण थक गये हों, वे युवक यदि मेरी पुस्तकको पढ़कर केवल अपने मार्गको ही नहीं, बल्कि अपने अन्तर्देशको भी किरण-ज्योतित पा सके तो मैं समझूँगा मेरा परिश्रम व्यर्थ न गया।

—सत्यनारायण शर्म्मा।

अर्पण

जिसकी स्नेह-श्री इस कण्टकाकीर्ण यात्रा-पथमें प्राणोंको सदैव सशक्त करती रहती है, उसीको !

लेखक के विषय में--

वर्त्तमान युगके महान् दार्शनिक और क्रान्ति... कलाकार श्री सत्यनारायण शर्मा की प्रतिभा के आलोकसे विद्वत्समाज अच्छी तरह परिचित हैं। योरप और भारत की अनेकानेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं के तथा अनेकानेक विषयों के प्रकाण्ड विद्वान् इस युवक लेखक की लेखनी से जो कुछ निकलता है, हिन्दी के लिये वह वरदान सिद्ध होता है। वह दिन दूर नहीं, जब शर्मा जी की आलोकदायिनी पुस्तकें संसार के कोने-कोनेमें आदरके साथ पढ़ी जायँगी।

इतनी कम उम्रमें इतनी विराट और तेजस्विनी प्रतिभाका प्रदर्शन मानवी इतिहास में बहुत कम देखने को मिलता है। वाणी और लेखनी दोनोंकी अपराजेय शक्तियों से समन्वित यह युवक दार्शनिक सच्चे अर्थों में आलोकदानी है।

विज्ञापनके इस युगमें शर्माजी को वह सन्मान नहीं मिल सका है, जो कि उन्हें मिलना चाहिये था, लेकिन जिन लोगोंने उनके साहित्यका गंभीर अध्ययन किया है और उन्हें कुछ अंशोंमें समझ सके हैं, वे यही कहते हैं

कि शर्मा जी की प्रतिभा और विद्वत्ताका लोहा एक दिन दुनियांवालों को मानना ही पड़ेगा।

सदैव गंभीर चिन्तन में तल्लीन शर्मा जी न जाने विश्वके किन अविदित रहस्योंपर विचार करते रहते हैं। 'आंसुओं का देश' नाम्नी पुस्तक में उनकी प्रखर अन्तर्दृष्टिका अनुपम परिचय मिलता हैं।

'जीवन-यात्रा' खास करके युवकों के लिये लिखी गई है। शर्माजी को ज्वलन्त लेखनी से इस पुस्तक में जो चिनगारियां निकली हैं, वे वर्तमान युगके युवकों की दुर्बलता को भस्म करने की अभूतपूर्व क्षमता रखती हैं।

शर्माजी की लेखनी पीयूषवर्षिणी भी है, मदिरा-वर्षिणी भी और अग्निकणवर्षिणी भी। इतना अडिग आत्म-विश्वास और अभिव्यक्ति की ऐसी ज्वाला इस युवक दार्शनिक में हैं कि युग-युगान्त तक उनका साहित्य अपनी उपमा नहीं खोज सकेगा।

श्रीराम पाण्डेय

भूतपूर्व प्रधान सम्पादक

'लोकमान्य'

[१]

युवक हो तुम !

मौन, चिन्तातुर यहाँ खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो ? डर लग रहा है क्या ?

आनेवाले सङ्कटोंकी कल्पनासे त्रस्त हो रहे हो तुम !

निशाका अभी अवसान नहीं हो पाया है।

तारक—प्रदीप अन्धकारको ज्योतित करनेका हास्यास्पद प्रयास अभी तक कर ही रहे हैं !

अंशुमाली अभी दूर है—बहुत दूर !

उसकी स्वर्णिम किरणोंसे न जाने कब प्राची-गगन चुम्बित हो सकेगा !

न जाने कब विहग-कुलके कमनीय कलरवसे पथके दोनों पार्श्व मुखरित होंगे !

अभी तो चारों ओर श्मशानकी अर्धरात्रि-सी नीरवता छायी हुई है !

पर तुम मौन यहाँ खड़े क्यों हो ?

तुम्हारे चरण आगेकी ओर क्यों नहीं बढ़ रहे ?

यह विषादकी छाया तुम्हारे आननपर कैसी ?

तुम युवक हो न ।

तुममें यौवन है न !

यौवन !···

यौवन शक्तिका प्रतीक है !

वह रुकना नहीं जानता !—वह डरना नहीं जानता ।

वह कहीं खड़ा होना नहीं जानता ।

वह अन्धड़ है—तूफान है—बवण्डर है ।

वह ज्वालागिरिका भयङ्कर विस्फोट है !

फिर तुम विषण्णवदन इस स्थानपर खड़े-खड़े क्या सोच रहे हो ?

कौन-सी वेदना तुम्हारे अन्तर्देशमें क्रन्दन कर रही है ?

कौन-सी विरहिणी तुम्हारे प्राण-प्रदेशमें अश्रुपात करती हुई आहें भर रही है ?

बावले ! तुम्हें बहुत दूर जाना है ।

ये सामने जो पर्वत-मालाएँ दिखलायी दे रही हैं, इनके भी पार !

बहुत दूर ! बहुत दूर !

न जाने ऐसी-ऐसी कितनी पर्वत-मालाएँ तुम्हें पार करनी हैं !

मञ्जिल सहज ही नहीं मिल जायगी !

तुम्हें चलना होगा, अविरत, अविश्रान्त गतिसे !

तुम्हें बढ़ना होगा, मार्गके कुश-कण्टकोंको रौंदते हुए !

स्फीत वक्षस्थल लिये हुए तुम्हें चरण आगेको बढ़ाने होंगे, पथ-बाधाओंको विदलित, विमर्दित करते हुए !

यहाँ इस स्थानपर रुककर साहस और धैर्य खो बैठना तुम्हें शोभा नहीं देता !

मार्गका प्रत्येक रजकण तुम्हें धिक्कार रहा है !

समीरणके प्रत्येक प्रकम्पनमें तुम्हारे प्रति अवमानना छिपी है !

युवक ! तुम यह क्या कर रहे हो ?

तुम्हें क्या वह शंखध्वनि नहीं सुनायी दे रही, जिसे सुनकर तुम्हारे अन्य संगी-साथी तूफानी प्रवेगसे मंजिलकी ओर बढ़े चले जा रहे हैं !

माना, तुम किसीसे छूट गये हो !

माना, तुम्हारे स्नेहकी किरण तुमसे बिछुड़ गयी है !

और यह भी माना कि तुम्हारे कोमल हृदयपर शत-शत आघात हुए हैं।

लेकिन इसीलिये तो कहता हूं कि तुम बढ़ो,—सहस्रगुणित वेगसे आगेको बढ़ो !

अपने लिये नहीं तो कमसे कम उसके लिये बढ़ो, जिसके वियोगने तुम्हारे जीवनको विपन्न बना डाला है !

यदि तुम मंजिल तक पहुंच गये तो विश्वमें सर्वत्र तुम्हारी जय-ध्वनि गुञ्जित होगी !

तुम्हारा बिछुड़ा साथी भी उस जय-ध्वनिको सुनेगा और हर्षान्वित होकर तुम्हारी याद करेगा !

गर्व होगा उसे कि उसने कभी तुम्हारे जैसा साथी पाया था !

यदि तुम मंजिल तक नहीं पहुंच सके और मार्गमें ही मरणके हिम-शीतल अधरका चुम्बन करना पड़ा तब भी कोई चिन्ता नहीं है।

तुम्हारी जय-यात्राकी गाथा समीरण तुम्हारे साथी तक पहुँचायगा !

तुम्हारे साहस और बलकी गाथा युग-युगान्त तक अन्य यात्रियोंको प्रेरणा प्रदान करती रहेगी !

लेकिन यदि तुम यहीं खड़े रहे और आगे बढ़नेकी कोई चेष्टा नहीं की . . .

यदि तुमने आसन्न विपत्तियोंकी कल्पनाके द्वारा अपनी अयोग्यता एवं कायरतासे सबोंको परिचित करा दिया ····

तो क्या यह तुम्हारे लिये कलङ्ककी बात नहीं है !

अनेकानेक युवक आगे बढ़े चले जा रहे हैं !

उनके आनन श्री-प्रफुल्ल हैं ; दीप्ति है उनके ललाट पर !

उनकी गतिमें मादकता है !

तूफानोंका आलिंगन करते हुए वे आगे बढ़े चले जा रहे हैं !

कोई रोके तो उन्हें !

कोई छेड़े तो उन्हें !

वे अंगारे हैं ; मार्गके कुश-कण्टक उनके चरणोंके स्पर्शसे भस्म होते चले जा रहे हैं।

आखिर वे भी तुम्हारी तरह युवक ही हैं !
तुम्हारी तरह वे भी मानव-तन-धारी हैं !
तुम्हारी ही तरह उनका मार्ग भी संकट-संकुल है !
एक बार उनकी ओर देखो और फिर अपनी ओर !
क्या लज्जासे तुम्हारा मस्तक अवनत नहीं हो जाता !

* * *

युवक ! क्या सोच रहे हो तुम !
यह कैसी उदासी छा रही है तुम्हारे आननपर !
प्रकाशके पिण्ड ! अन्धकारसे डर रहे हो तुम !
शक्तियोंके केन्द्र ! अपनी शक्तियों पर अविश्वास हो रहा है तुम्हें !
तुम्हारे प्रकाश पर आवरण पड़ा हुआ है !
तुम्हारी शक्तियां वन्दिनी बनी हुई हैं !
एक बार यह आवरण हटा कि चारों ओर प्रकाश हो जायगा !
एक बार ये वन्धन टूटे कि तुम्हारी शक्तियां संसारको विस्मय में डाल देंगी !
डरो मत !
अपनी शक्तियों पर शंका मत करो !
चलो, मैं कुछ दूर तुम्हारे साथ चलता हूँ !
देखता हूँ, कौन तुम्हारा पथावरोध करता है !
चलो, बढ़ाओ कदम आगे !

[२]

यह क्या ?

तुम्हारे कदम इतनी जल्दी लड़खड़ाने लगे !

क्या कहते हो, चला नहीं जाता ?

क्या कहते हो, इस स्थानको छोड़नेकी इच्छा नहीं होती !

क्यों ?

रह-रहकर तुम्हारी दृष्टि उन अट्टालिकाओंकी ओर क्यों चली जाती है !

ये महल, ये सुन्दर नारियाँ, यह चाकचिक्य !

क्या तुम्हारे मनको ये वस्तुएँ अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं !

बावले ! इन वस्तुओंकी वास्तविकता पर क्यों नहीं दृगपात करते ।

कितने दिन तुम्हें यहाँ रहना है ।

और तुम्हें यह मालूम है, इन महलोंके लिये तुम्हें कितना समय देना पड़ेगा ?

है तुम्हारे पास इतना समय ?

शक्तियोंके तुम केन्द्र हो !

उनकी कमी तुम्हारे पास नहीं है !

किन्तु समय तुम्हारे पास बहुत कम है !

और तुम्हें कितनी दूर जाना है, यह भी तो सोचो !

फिर क्यों तुम इन ऊँची-ऊँची स्वर्ण-खचित गगनचुम्बिनी अट्टालिकाओंकी ओर रस-लालस दृगोंसे देख रहे हो ।

विश्रामका तुम्हें अधिकार भी तो नहीं हो !

स्वेद-कणोंको पोंछनेमें जो समय लगता है, उससे अधिक समय तक विश्राम करना तुम्हारे लिये लज्जाकी बात है युवक !

तुम्हारे लिये क्या महल और क्या कुटीर !

सब एक-से हैं तुम्हारे लिये !

तुम यात्री हो !—तुम्हें इसकी विस्मृति क्यों हो जाती है ।

महलोंके रहनेवालोंकी रंगरेलियाँ देखो, लेकिन रुको मत ; बढ़े चलो !

तुम्हारी मंजिलके सामने ऐसे-ऐसे शत कोटि कलधौतके राज-महल नगण्य हैं !

फिर उसे छोड़कर खँड़हरोंमें परिणत होनेकी प्रतिक्षण तैयारियाँ करनेवाले इन तुच्छ मानव-निर्मित नीड़ोंकी ओर तुम्हारा ध्यान कैसे आकर्षित हो रहा है !

वह देखो, उधर दृष्टि-पात करो !

कौन बोल रहा है वह !

समझमें आ रही है उसकी भाषा !

जहाँ आज यह उल्लूक बोल रहा है, वहाँ कल रूपसियोंके

नूपुर-रवसे मुग्ध धनपति मन्मथके केशर-शरसे आहत हुआ करते थे !

वहाँ शत-शत स्वर्ण-दीपकोंके आलोकमें लक्ष्मीकी नानाविध आराधना हुआ करती थी !

नित्य नूतन महलोंके निर्माणकी योजनाएँ बनती थीं !—साम्राज्य-विस्तृतिके स्वप्न देखे जाते थे !

मदिराके कनक-पात्रोंको किसीके ओठोंसे लगाकर कोई साकी-बाला स्वर्गिक सुखका आस्वादन किया करती थी !

कहाँ गये वे सबके सब ।

कहाँ तिरोहित हो गया वह चाकचिक्य !

कहाँ चली गयीं मदिरा वितरण करके जीवनकी समस्त चिन्ताओंको नष्ट कर डालनेवाली वे साकी-बालाएँ !

किसने निर्वापित कर दिये ये स्वण-प्रदीप !

आज यहाँ उलूक बोल रहा है—उलूक !

इन महलोंका भी कल यही हाल होगा !

एक मिथ्या स्वप्नकी तरह यह चाकचिक्य तिरोहित हो जायगा !

ये दीपमालिकायें, जो लक्ष-लक्ष निर्धनोंके रक्तसे ज्योतित हो रही हैं, निर्वापित हो जायँगी !

इन रूपसियोंका नृत्य-रव अवसानके अन्धकारमें लुप्त हो जायगा !

बावले, क्षण भरके इस ऐन्द्रजालिक सुखके लिये क्यों कलंक-कालिमाका आह्वान कर रहे हो !

यहाँ सुख नहीं, सुखका भ्रम है !

और वह भ्रम भी कुछ समय तक टिकने वाला हुआ होता तो कोई बात थी !

मैं सहर्ष तुम्हें यहाँ रुककर इस भ्रमके सुखका आस्वादन करनेको कहता !

किन्तु यह तो क्षणिक है !

फिर क्यों इसकी ओर रसलालस दृगोंसे देख रहे हो !

भविष्यके इन खँडहरोंको उपेक्षाभरी दृष्टिसे देखते हुए आगे कदम बढ़ाओ !

यहाँ चारों ओर उलूकोंकी ध्वनि सुनायी दे रही है !

---

[३]

तुम बड़ी जल्दी परिश्रान्त हो जाते हो! ··· फिर रुक गये!

क्या कहा, हृदय आहत हो गया है!

किसने आहत किया उसे?

उस नारीने?·· उसके नयन-शरने?

बावले!

कौन-सा नारकीय उन्माद तुम्हारे हृदयको अभिभूत कर रहा है?

सौंदर्यके नामपर हलाहलका पान करानेवाली इस मायावती के प्रणय-पाशमें बँधकर क्या तुम अपना सर्वस्व स्वाहा कर डालना चाहते हो?

यह अन्धकारकी दूती है!

देखो मत इसकी ओर!

और यदि देखते ही हो तो बुद्धिकी तीक्ष्ण आँखोंसे देखो!

क्या है यह!

अस्थि-मांस-रक्त-वसा-चर्म!

देखो—देखो—जी खोलकर इसे देखो अब!

शिराओंसे होकर रक्त कितनी अच्छी तरह प्रवाहित हो रहा है!

मांस-पेशियाँ कितनी रक्ताभ हैं!

और आगे बढ़ो ! यहीं तुम्हारी दृष्टि क्यों रुक गयी ?

अस्थि-समूह···! उसके ऊपर कलाकारने अपनी कलाकी पराकाष्ठा दिखलायी है !

सचमुच यह सुन्दर प्रतिमा है !

देखो इसे ! अब जी भरकर देखो !

सौन्दर्य महान् है !

सौन्दर्य कलाका उद्गम-स्थल है !

सिर झुकाओ सौन्दर्यके सामने !

किन्तु अधिक विलम्ब न करो ! तुम्हें बहुत दूर जाना है, इसे न भूल जाओ !

मैं स्वयं चाहता हूँ कि हम तुम दोनों ही इस सुन्दर प्रतिमाको कुछ देर और देखते, लेकिन युवक ! समय कहाँ है ?

और तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम्हारी मञ्जिलके सौन्दर्यके सामने इसका सौन्दर्य सर्वथा नगण्य है !—सर्वथा हतप्रभ है !

मार्गमें तुम्हें इस प्रकारकी कई सजीव रूप-प्रतिमायें मिलेंगी !

सबोंको देखनेका तुम्हें अधिकार है, लेकिन उन्हें प्यार करने के लिये रुकनेका समय तुम्हारे पास नहीं है !

और इन्हें तुम प्यार आखिर करोगे ही क्या !

इनके रूपके ही कारण तो इन्हें प्यार करने पर उतारू हो रहे हो !

इनका रूप ! ···· बावले !

प्रभातके ओस-कण देखे हैं ?
क्षण-भरकी है यह ज्योत्स्ना !
फिर वही तिमिर—जाल !
यह रूप तुम्हारे प्यार करनेके लिये बना ही नहीं !
उधर देख रहे हो ?
किसकी कब्र है वह ?
कौन सोयी हुई है वहाँ ?
काश ! तुम कुछ समय पहले उसे देखते !
भूल जाते इसको, जिसके चितवन-शर तुम्हारा पथावरो कर रहे हैं !
क्या जाने कितने रूप-शलभ उसके सौन्दर्य-प्रदीपपर मँडरा करते थे !
क्या जाने कितनी-कितनी मधु-मदिरा उसकी प्रत्येक मुस्कराहटसे समीरणके प्राणोंमें व्याप्त हो जाती थी !
वह जादूगरनी थी इस राह की !
लेकिन क्षणोंमें ही मुरझा गया वह नव किसलय !
बिखर गयी सौंदर्य-पाटल की वे मसृण पंखड़ियाँ !
सूखकर धूलमें मिल गया वह किंजल्क-जाल !
मरणके हिम-शीतल अधरोंके चुम्बनने सारा जादू नष्ट कर डाला !
मखमली पलंगपर भी उसे कष्ट होता था !
इतनी सुकुमारी थी वह !''' '-नवनीतोपम अंग थे उसके !

और आज देखो उसे ! ····· कहाँ पड़ी है वह !

कहाँ हैं वे दासियाँ, जो इसकी आज्ञाकी पूर्तिके लिए सदैव-लालायित रहा करती थीं !

कहाँ हैं वे प्रेमी, जो इसकी एक मुसकराहटके लिए सारा जीवन निवेदित कर सकते थे।

कोई यहाँ आता तक नहीं !

कोई क्षणभरके लिये यहाँ रुकता तक नहीं।

और यदि एक बार तुम इसकी वर्त्तमान आकृतिको देख लो तो ·····!

रूपका इस राहमें यही परिणाम होता है युवक !

सौंदर्यको प्यार करो !

उसकी उपासना करो !

लेकिन उस सौन्दर्यकी जो शाश्वत है।

तुम्हारे मार्गका यह सौन्दर्य उस शाश्वत सौन्दर्यके सहस्रांश से भी उपमित नहीं हो सकता !

क्षणभरकी इस ऐन्द्रजालिक मायामें क्यों फँसते हो यात्री !

क्या कहते हो, प्यार किये विना मन नहीं मानता !

किसीके चरणोंपर सर्वस्व निवेदित करनेकी इच्छा वलवती हो रही है ?

ठीक है। प्यार करो—जी भरकर प्यार करो !

लेकिन अपनी मंजिलको !

राहमें मिलनेवाली इन क्षणभंगुर रूप-प्रतिमाओं को नहीं, अपने लक्ष्यको !

उसके वियोगमें तड़पो।

विकल होकर बढ़े चलो उसकी ओर !

मार्गकी बाधाओंसे जूझते चलो !

उसकी स्मृतिके अग्नि-कणोंसे निशि-वासर जीवनके प्रत्येक क्षणको उत्तप्त करते रहो !

---

[४]

जरा सम्हल-सम्हल कर ! ··

यह राह बड़ी विचित्र है। चढ़ाईकी स्थली आ गयी है न ! जरा-सी असावधानीसे महती हानिकी सम्भावना है !

सामने पर्वत-माला है !

तुम्हें इसे पार करना है !

लेकिन सम्हल-सम्हल कर ! ··

कदम जल्दी बढ़ें, किन्तु सावधानीके साथ।

तुम्हें नीचे गिरानेके बहुविध प्रयास हो रहे हैं यहाँ !

इन मायावी प्रलोभनोंके फेरेमें न पड़ जाना। तुम्हें बहुत दूर जाना है !

अपने शत्रुओंको पहचानते चलो !

अच्छा तो हो कि तुम इनकी ओर ध्यान ही न दो !

इनकी प्रेमभरी वाणीको सुनो ही नहीं !

ये स्वयं विवश होकर पराजय स्वीकार कर लेंगे !

लेकिन यदि ये तुम्हारे पास तक आकर तुम्हारा पथावरोध करनेकी चेष्टा करें तो भयाक्रान्त कदापि न होना !

भयभीत व्यक्तियों पर इनका आक्रमण द्विगुणित वेगसे होता है !

पूरे साहसके साथ इनका सामना करो!

ललकारो इन्हें!

अपनी शक्तियोंपर अदम्य आस्था रखते हुए प्रहार करो इनपर!

और तब तक विश्राम न ग्रहण करो जब तक कि तुम इन्हें पूर्णतया पराजित नहीं कर डालते हो!

तुम यात्री ही नहीं, योद्धा भी हो!

तुम्हें केवल चलना ही नहीं है, लड़ना भी है!

मंजिल तक पहुंचनेके पहले क्या जाने कितनी विजय-पताकाएँ मार्गमें तुम्हें फहरानी होंगी।

तुम अपने शत्रुओंको अच्छी तरह पहचान लो, क्योंकि इनमें से अधिकांश मित्रोंका रूप ग्रहण करके तुम्हारे मार्गमें आयेंगे!

उनके पात्रको कहीं होठोंसे न लगा लेना!

केवल उनके ऊपर ही मधु है!···अन्दर विष है!

उनकी मीठी-मीठी बातोंमें न आ जाना!

युवक! भोले युवक!

लेकिन इन शत्रुओंको पहचाननेके पहले तुम अपने आपको पहचान लेते तो अधिक अच्छा होता!

क्या कहा तुम अपनेको पहचानते हो?

बावले!······

यही तो तुम्हारी गलती है!

यदि तुम अपने आपको पहचानते होते तो बात ही क्या थी!

तुम्हारे साथ-साथ इतनी दूर तक चलनेका मुझे कष्ट ही क्यों उठाना पड़ता !

नहीं पहचानते हो तो तुम अपनेको !

तुम्हें विस्मय हो रहा है ! आश्चर्यित तुम मेरी ओर देख रहे हो !

मैं बार-बार कह रहा हूँ, तुम अपनेको नहीं पहचानते !

तुम पहचानते हो केवल इस शरीरको !

और यह तुम्हारा परिधानमात्र है !

जीर्ण हो जानेपर उतार दोगे इसे और दूसरा धारण करोगे !

और इसे भी तुम कितना कम पहचानते हो !

बतला सकते हो इसकी समस्त क्रियाओंको !

स्पष्टीकरण कर सकते हो अपने हृदयके स्पन्दनका ?

यदि इतना-सा ही अज्ञान रहा होता, तब भी कोई बात थी लेकिन दुर्भाग्यवश तुम इसे ही अपना स्वरूप समझे हुए हो !

तुम समझते हो कि यह शरीर ही तुम हो !

आत्म-स्वरूपकी कैसी कारुणिक विस्मृति है !

यही कारण है कि तुम अपनेमें इतनी दुर्वलता पा रहे हो !

यही कारण है कि तुम्हें कदम-कदमपर नूतन दुर्वासनाओंका शिकार होना पड़ता है !

यही कारण है कि चिन्ताएँ क्षणभरके लिये भी तुम्हारा साथ नहीं छोड़तीं !

मायाकी मदिरा पीकर सब कुछ भूल जाने वाले जीवन-यात्री! होशमें आओ!

यह बेहोशी तुम्हें कहींका न रखेगी!

तुम शरीर नहीं, शरीरी हो!

तुम रथी हो शरीर रथ है!

तुम अमर हो, शरीर मरणधर्मा है!

तुम प्रकाश-पुत्र हो, शरीर इस ग्रहकी धूल है!

आलोककी किरण रजकणको अपना स्वरूप समझ रही है!

कैसा कारुणिक दृश्य है यह!

ऐसे-ऐसे क्या जाने कितने शरीर तुम धारण कर चुके हो!

और क्या जाने कितने धारण करोगे!

क्या पूछते हो, उन जीवनोंकी स्मृतियाँ क्यों नहीं हैं?

इसी जीवनकी कितनी स्मृतियाँ अवशिष्ट हैं?

अधिक दूर जानेकी आवश्यकता नहीं है। कल तुमने जितने भी कार्य किये हैं, सब स्मरण हैं?

स्वप्नकी कितनी बातें याद रहती हैं?

तो क्या तुमने स्वप्न नहीं देखा, ऐसा कहोगे!

जब तक यह शरीर तुम्हारे साथ है, पूर्वजीवनोंकी बातें नहीं याद आ सकतीं!

लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि पूर्वजीवनोंकी स्मृतियाँ तुम्हारे साथ नहीं हैं!

वे हैं—सारगर्भित रूपमें!

प्रतिभा उसीका परिणाम है !

अप्रज्ञात चेतनतामें केवल इसी जीवनकी अनुभूतियाँ नहीं, विगत जीवनोंकी अनुभूतियाँ भी सुरक्षित हैं !

वे तुम्हारी गतिविधियोंको सञ्चालित भी करती हैं !

लेकिन उनका स्पष्ट ज्ञान इस शरीरसे अलग होनेपर ही तुम्हें हो सकेगा !

शरीर तुम्हारा रथ है ; इसकी रक्षा करो !

इसकी अवहेलना करके तुम अपने यात्रा-पथमें दो कदम भी आगे न बढ़ सकोगे !

किन्तु यह न भूल जाओ कि यह रथमात्र है अन्यथा मंजिलसे दूर जा पड़ोगे !

---

[५]

क्या कहते हो, ऐसा सोचा नहीं जाता।

सोचनेकी चेष्टा करो !

भ्रान्त चिन्तन-पद्धतिकी आवृत्तिके कारण ऐसा हो रहा है !

वार-वार अपने वास्तविक स्वरूपका ध्यान करो !

आँखें वंद कर लो और सोचो कि तुम अशरीरी हो और व्योम-प्रथमें स्वच्छन्द विचरण कर रहे हो !

कभी इस सौरमंडलकी यात्रा करते हो, कभी उस सौरमंडलकी !

तुम उल्लासमय हो—आनंदमय हो—प्रेममय हो !

सौंदर्य और शक्ति और ज्ञान आजकी अपेक्षा तुममें सहस्र-गुणित मात्रामें है !

कल्पना करो कि तुम्हारे शरीरसे ज्योतिकी स्वर्णाभ किरणें झर रही हैं !

एकाएक तुम इस मायामय सौरमंडलमें प्रवेश करते हो और तुममें नशा-सा छा जाता है !

आत्म-स्वरूपकी विस्मृति हो जाती है !

सब कुछ भूल जाते हो तुम !

इस तरहकी कल्पनाएँ करो - अधिकाधिक स्पष्ट रूपमें !

यह कल्पना कोरी कल्पना नहीं है !

इसके पीछे तुम्हारे अस्तित्वका एक सुमहान् सत्य छिपा है !

अमरत्वके पुत्र ! अपना ध्यान करो !

अपने तेजकी याद करो !

आँखें उठाकर एक बार सुनील अन्तरिक्षकी ओर देखो !

कौन हैं वे, जो युग-युगान्तसे झिलमिल-झिलमिल कर रहे हैं !

क्या उनका वह प्रकम्पन अपनी नीरव भाषामें तुम्हें कोई भूली हुई कहानी नहीं सुना पा रहा ?

वे दूरवर्त्ती ग्रह-उपग्रह !

कितनी दूर हो आज उनसे तुम !

दुःख नहीं होता तुम्हें !

निर्वासित-ग्रहके बन्दी ! देशकी याद करके हृदय नहीं भर आता तुम्हारा ?

कहाँ आ पहुंचे हो तुम ?

कैसा जादू-सा यहाँ छाया हुआ है ?

कब उद्धार होगा तुम्हारा यहाँसे ?

कैसी जीवन-चर्या है यहाँकी !—कैसा क्रंदनरव यहाँ निशि-वासर श्रुतिगोचर होता रहता है !

और, फिर भी तुम्हें मंजिलकी याद नहीं सताती !

आश्चर्य है !

* * *

आत्म-स्वरूपका पूर्ण परिज्ञान तुम्हें इस यात्रा-पथमें नहीं हो सकता !

बड़े-बड़े ऋषियोंने वर्षों एकांतनिवास करनेके उपरान्त आत्म-स्वरूपका ज्ञान उपलब्ध किया था!

इसके लिये बड़ी कठोर साधनाकी आवश्यकता है!

आत्म-तत्त्वको समझकर वे सुमहान् साधक आनन्दमय हो गये थे!

विषादकी लघुतम छाया भी फिर उन्हें संस्पृष्ट न कर सकी।

अज्ञानकी मेघमालाओंका आवरण स्वतः विदीर्ण हो गया!

उनकी वाणीको ध्यानपूर्वक सुनो!

सहस्राब्दियोंके मार्गको पार करती हुई उनकी वाणी तुम तक आ रही है!

उसकी अवहेलना मत करो! तुम्हारा अहित होगा!

दृढ़ विश्वास करो, तुम शरीरसे अलग हो!

दृढ़ विश्वास करो, शरीरका उद्भव तुम्हारा उद्भव नहीं!

दृढ़ विश्वास करो, शरीरकी मृत्यु तुम्हारी मृत्यु नहीं।

विश्वासकी शक्ति असाधारण है!

और फिर तुम तो एक ऐसी बातपर विश्वास कर रहे हो जो सर्वथा सत्य है।

इसमें संशय न-करो!

संशयात्मा विनश्यति।

[६]

लेकिन शरीरकी अवहेलना करनेसे भी काम नहीं चलनेका।

इसे स्वस्थ एवं सशक्त रखो!

यात्रा-पथमें यह अत्यावश्यक है!

इसका अस्वास्थ्य तुम्हे एक कदम आगे न बढ़ने देगा!

इसकी आवश्यकताएँ अधिक नहीं हैं!

जीवन-यात्रियोंने व्यर्थ ही इसकी आवश्यकताएँ बढ़ाकर अपने यात्रा-पथको संकट-संकुल कर रखा है।

इसकी आवश्यकताएँ जितनी बढ़ाओगे, उतनी ही बढ़ेंगी!

द्रौपदीका चीर हो जायँगी वे।

कहीं छोर न मिलेगा उनका!

इसलिये ऐसी गलती न करो!... अन्यथा सारा जीवन इसीकी व्यर्थकी आवश्यकता-पूर्तिमें यापित हो जायगा और मंजिल अपने एकाकीपन पर आहें भरती रह जायगी!

इसकी सर्वप्रथम आवश्यता है शुद्ध वायुकी और यहि तुम्हें प्रचुर मात्रमें उपलब्ध होगी!

पूँजीवाद पर आधारित वर्तमान समाजिक व्यवस्थामें शुद्ध वायुके लिये भी पैसोंकी आवश्यकता होती है!

गंदे, घृणित और नारकीय नगरोंकी रूप-रेखा ही कुछ ऐसी है!

पैसोंके लिये श्रमजीवी ही नहीं, धनजीवी भी शुद्ध वायुसे दूर रहते हैं।

जो हो, तुम्हें शुद्ध वायुकी कमी न होगी।

स्वच्छन्द विचरण करो उसमें।

ब्राह्म मुहूर्त्तकी वायुमें अमृत मिश्रित होता है।

दीर्घ श्वासके द्वारा फेफड़ोंमें उसे ले जाओ और कल्पना करो कि शक्तियाँ तुम्हारे भीतर प्रवेश कर रही हैं।

तुम्हारे शरीरमें दूषित रक्त नाम मात्रको न रहेगा।

प्रति दिन यदि ब्राह्ममुहूर्त्तकी इस अमृतमयी वायुका सेवन करते रहे तो कभी दूपित होगा भी नहीं।

ऑक्सिजनकी तुम्हारे शरीरको काफी आवश्यकता है और उस प्रभातकालीन वायुमें ऑक्सिजन प्रचुर मात्रमें रहता है।

सूर्यका प्रकाश भी तुम्हारे शरीरके लिये कम आवश्यक नहीं।

उसकी किरणें रोगके कीटाणुओंको मारनेकी आश्चर्यजनक क्षमता रखती हैं।

प्रभातकालीन सूर्य-किरणोंके आलोकमें प्रतिदिन अपने शरीरको वस्त्र-मुक्त रखा करो।

शुद्ध जल जितना पी सको, पियो। शुद्ध जल, दुग्ध और उससे निर्मित अन्य पदार्थ एवं फलोंके रसके अतिरिक्त अन्य समस्त पेय-पदार्थोंका बहिष्कार करो।

चाय, काफी, मदिरा प्रभृति वे मित्र हैं, जिन्हें संस्कृतमें 'विषकुंभं पयोमुखम्' कहा गया है।

भोजनकी शुद्धता पर भी पर्याप्त ध्यान दो !

जैसा भोजन होता है वैसा ही मनुष्यका शरीर भी होता है ।

भीष्म पितामहसे वाणोंकी शय्यापर पूछा गया था—'आपके समान सदाचारी व्यक्तिने अन्यायसम्मत कार्य क्यों किये ?'

उत्तर मिला—'दुराचारीके भोजनने मेरी बुद्धि भ्रष्ट कर दी !'

इतना आगे बढ़कर सोचनेकी तुम्हें आवश्यकता नहीं है !

अन्न किसीका नहीं है । न वह सदाचारीका है, न दुराचारीका !

वह पृथ्वीका है !

शुद्ध मनसे शुद्ध अन्नका भक्षण करो ।

शरीरकी क्षीण शक्तिकी पूर्त्ति भोजनसे ही होती है ।

कतिपय प्रयोग सुनो ।

सर रॉबर्ट मक्कारिसनने चूहोंपर एक बार भोजनकी विविधता का प्रयोग किया । एक ही वंशके चूहोंको उन्होंने अलग-अलग बारह पिंजड़ोंमें रखा ।

जिस पिंजड़ेके चूहोंको अंग्रेजी ढंगका खाना दिया जाता था, वे रूखे बालोंवाले और लड़ाका प्रकृतिके हो गये ।

सिखों और पठानोंके ढंगका खाना जिस पिंजड़ेके चूहोंको खिलाया गया, वे अंग्रेजी ढंगका खाना खानेवाले चूहोंके समान ही आकारके थे किन्तु उतने लड़ाका नहीं । उनके बाल भी चिकने थे ।

मद्रासी ढंगका खाना जिन्हें खिलाया गया था, वे छोटे-छोटे थे, जैसे चुहियाँ हो !

फ्रांसका जायकेदार भोजन पानेवाले चूहोंके बाल तैलीय थे, बीचमें वे कुछ चौड़े भी थे।

मछली, चावल प्रभृतिका जापानी भोजन खानेवाले चूहे छोटे थे, किन्तु चञ्चल।

सचमुच यह बात उन्हें अविश्वनीय-सी मालूम होगी कि वे समस्त चूहे एक ही वंशके थे, जो भोजनके प्रभावसे अभिज्ञ नहीं।

जापानके शरीर-शास्त्रियोंने मानवी शरीरके निर्माण कार्यमें भोजनकी प्रधानताके रहस्यको समझा। जापानियोंके भोजनमें विटामिन क और वका एवं inorganic लवण का वड़ा अभाव है। शरीर-शास्त्रियोंके अनुसंधानसे पता चला कि इसी कारण जापानियोंका आकार छोटा होता है।

जापानी राजकीय खाद्य-संस्थाके अध्यक्षने कतिपय ऐसी मछलियोंको जिनमें विटामिन और नमक प्रचुर मात्रामें होते हैं, सुखाया और फिर उनका चूर्ण वनवाया। जापानके एक विद्यालयके कुछ बच्चोंके मध्याह्नकालीन भोजनके साथ इसे प्रतिदिन मिश्रित किया जाने लगा।

चार वर्षोंके उपरान्त वे वच्चे अन्य वच्चोंकी अपेक्षा अधिक स्वस्थ तो पाये ही गये, साथ ही उनकी लम्बाई और वजन भी ज्यादा था!

अधिकांश रोगोंकी उत्पत्ति भोजनमें मिलेगी!

सिंधकी आधी जनता पथरीके रोगसे आक्रान्त है। डा० मक्कारीसनने सिंधी भोजन स्वस्थ चूहोंको कुछ समय तक कराया।

पचास प्रतिशत चूहोंको पथरीकी बीमारी हो गयी।

किन्तु उन चूहोंको कोई रोग नहीं हुआ, जिन्हें उसी प्रकारके भोजनके साथ ही साथ एक-एक चम्मच दूध भी दिया गया।

विगत महायुद्धमें जर्मनी और आस्ट्रियामें राजयक्ष्माका रोग आश्चर्यजनक गतिसे बढ़ा, क्योंकि दूधका अभाव हो गया था। युद्धके उपरान्त दुग्ध एवं खाद्य-सामग्रियोंका प्राचुर्य हो जानेके कारण इसका प्रसार स्वतः कम हो गया।

युद्धकालमें अनेकानेक रूसी सैनिक रातको आँखोंसे काम लेनेमें असमर्थ हो जाते थे। कितनोंकी तो इसी कारण मृत्यु भी हो जाती थी। इसका कारण उनके खाद्य-पदार्थोंमें विटामिन कका अभाव था जो कि आँखोंके लिये बहुत आवश्यक है।

भारतमें ही देखो।

भात और मछली खानेवाले बंगालियोंका शरीर देखो, फिर बाजरेकी रोटी खानेवाले राजस्थानी जाटोंको देखो!

वायु, जल और भोजन। ये तीनों शुद्ध मिलें, फिर तुम्हारा शरीर अस्वस्थ नहीं होगा!

निरन्तर तुम्हारे शरीरको इनसे नूतन शक्ति प्राप्त होती रहेगी।

किन्तु... .....!

[७]

किन्तु इनके द्वारा प्राप्त शक्तिका अपचय नहीं करना होगा।

अन्यथा शरीर तुम्हारी आज्ञाके अनुसार शायद ही काम कर सके!

और तुम जानते ही हो तुम्हें कितना संघर्ष करना है,—कितनी दूरी तै करनी है,—कितनी-कितनी पर्वत-मालाएँ लाँघनी है!

अतः शक्तिका संचय तुम्हारे लिये अत्यावश्यक है!

शक्तिका अपव्यय तुम्हारे पतनका पथ प्रशस्त करनेवाला होगा।

शक्तिके इस संचयका ही दूसरा नाम है ब्रह्मचर्य।

शक्तिके इस निरर्थक अपचयका ही दूसरा नाम है व्यभिचार!

व्यभिचारसे बचो!

वह तुम्हारा असाधारण शत्रु है!

काम-वासना तुम्हारा सत्यानाश कर देगी।

उसका एक भी स्फुलिङ्ग यदि तुम्हारे जीवन-विटपीपर आ गिरा तो बरबाद हो जाओगे!

चढ़ना कठिन है!

गिरना सरल है!

Errare humanum est!

ऊपर उठो—प्राणपणसे ऊपर उठो!

ये संस्पर्शज भोग दुःखयोनि हैं। इनसे अपनेको मुक्त करो!

तुम्हारा जीवन भोगके लिए नहीं है!

तुम यात्री हो!

तुम योद्धा हो!

तुम योगी हो!

तुम्हें भोगका अधिकार नहीं है!

तुम्हारी भाग्य-लिपिमें संस्पर्शज भोगोंको कहीं स्थान नहीं मिला।

मन्मथके केशर-शर तुमपर छूटेंगे!

और तुम बेचैन हो जाओगे!

किन्तु युवक! अपनी वीरताका परिचय सदैव देते चलो!

रणस्थलीमें लाखोंकी हत्या करनेमें ही वीरता नहीं छिपी है!

सच्ची वीरता मन्मथको पराजित करनेमें है!

जहि शत्रुं महाबाहो, कामरूपं दुरासदम्!...

यह साधारण शत्रु नहीं; इसे पराजित करनेमें बड़े-बड़ोंको छक्के छूट गये;

कितने तो ऐसे गिरे कि पता ही नहीं लगा!

कितनोंकी पराजय-गाथा अभीतक इतिहास रो-रोकर सुनाता है!

विश्वामित्रका तपस्या-भंग याद ही होगा।

कितना बड़ा ऋषि था वह !

डेविड क्या साधारण सन्त था ? लेकिन मन्मथके केशर-शरसे उसे भी पराभूत होना ही पड़ा।

सुलेमान क्या कम विद्वान् था ? लेकिन काम-वासना उसे भी ले ही डूबी।

एक नहीं, सहस्रों उदाहरण मानवी इतिहासमें ऐसे मिलेंगे जहां बड़े-बड़े जीवन-यात्री मन्मथके केशर-शरसे आहत होकर पराजय स्वीकार कर बैठे हैं।

लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं कि तुम विजयी नहीं हो सकते।

तुम भी साधारण जीवन-यात्री नहीं हो।

मन्मथपर विजय प्राप्त करनेवालोंकी संख्या भी कम नहीं है। पराजितोंकी याद मैंने इसलिये दिलायी है कि कहीं तुम इस शत्रुको साधारण समझकर इसकी अवहेलना न कर बैठो।

तुम्हें एक चतुर और प्रवीण योद्धाकी तरह इससे युद्ध करना पड़ेगा।

इसकी युद्ध-प्रणाली बड़ी विचित्र है।

इसके वाण कुसुमके हैं।

और उनका आघात ? कुछ न पूछो! बड़ी मीठी वेदना होती है।

कहीं उस मीठी वेदनापर रीझ न जाओ।

कहीं शस्त्र चलानेके उसके अन्दाजपर मुग्ध होकर हथियार न डाल दो।

युवक। यह बड़ी विचित्र राह है।

सम्हल सम्हल कर चलना पड़ेगा।

---

[८]

मन्मथके शरोंका प्रहार तुमपर होगा, लेकिन इस प्रहारको ही कहीं भूलसे अपनी पराजय न समझ बैठना।

जब तक मन्मथ तुम्हारी शक्तियोंसे पूर्णतया परिचित नहीं जायगा,—जब तक उसे यह नहीं मालूम हो जायगा कि इस बार किससे पाला पड़ा है, तबतक उसके कुसुम-शर तुम्हारे हृदयपर बरसते ही रहेंगे।

तुम उन कुसुम-शरोंको घृणाभरी दृष्टिसे देखोगे।

उनके प्रति कोई आसक्ति, कोई व्यामोह प्रदर्शित न करोगे।

बस, यही तुम्हारी विजय है।

मूर्खतापूर्ण विचार विवेकियोंके मस्तिष्कमें न जागृत होते हों, ऐसी बात नहीं है। उनकी विवेकिता इसीमें है कि वे उसे स्वीकार नहीं करते!

बल्कि सच तो यह है कि सशक्त मस्तिष्कवाला व्यक्ति जब यात्रा आरम्भ करता है तो नानाविध विचार तुमुल वेगसे उसके मस्तिष्कमें आते हैं।

उनमें हितकर भी होते हैं, अहितकर भी।

विवेकिता इसीमें है कि अहितकरको घृणाकी दृष्टिसे देखा जाय।

उनके प्रति तनिक-सी भी आसक्ति शत-शत संकटोंको आमंत्रित कर सकती है।

अपने चारों ओर विवेकका अनल-कुण्ड प्रज्वलित करो!

काम-वासना उससे बहुत डरती है।

अविवेकी उसे बहुत प्रिय हैं।

लेकिन विवेकियोंको भी अविवेकी बनानेकी वह कुछ कम चेष्टा नहीं करती।

तुमने पहाड़ोंपर वे स्थान देखे होंगे, जहाँसे लड़के फिसल-फिसलकर अपना मनोविनोद किया करते हैं।

एक बार फिसलना आरम्भ करनेपर बीचमें क्या रुका जा सकता है?

काम-वासनाका भी यही हाल है।

इससे दूर ही रहो!

बीचमें नहीं रुक सकोगे—नहीं रुक सकोगे!

मन्मथ—पराजित मन तुम्हें बहकायगा, बीचमें रुक जायँगे! थोड़े-से सुखसे क्यों वञ्चित होते हो!

लेकिन उसके बहकानेमें न आना!

वह थोड़ा सा सुख तुम्हें अतल गर्तमें पटक देगा!

'और जीवन-यात्री भी तो मन्मथकी आज्ञाका अनुवर्तन कर रहे हैं! फिर मैं ही क्यों उसके मधु-पात्रको होठोंसे न लगाऊँ!' ऐसा तुम कहना चाहोगे, मैं जानता हूँ।

और शायद वासनाकी आँधी तुमसे ऐसा कहलवा भी दे!

लेकिन युवक! अन्य यात्रियोंमें और तुममें महान् प्रभेद है।

जरा अपने कर्त्तव्योंके गुरुत्वकी ओर तो ध्यान दो!

जरा यह तो सोचो कि तुम्हारी मंजिल कितनी दूर है!

शायद उन पथभ्रष्ट युवकोंकी आवाज तुम्हारे कानोंमें पहुंचे—'ब्रह्मचर्य अशक्तिका चिह्न है। नारी-रमण शक्तिकी परीक्षा है।'

कहीं तुम उनकी इस मूर्खतापूर्ण वाणीको सुनकर पथ-भ्रमित न हो जाओ!

तुम युवक हो ना! और युवक, खासकर तुम-से युवक अपनी शक्तिकी अवमानना नहीं सहन कर सकते।

किन्तु बावले! सच्ची शक्तिकी परीक्षा ब्रह्मचर्य में है; नारी-रमणमें नहीं।

ब्रह्मचर्यका पालन महत्तम शक्तिका परिचायक है।

वासनाका तूफान जिसे पराजित न कर सके, वह क्या कम शक्तिशाली है!

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत।

यह है ब्रह्मचर्यका प्रताप!

ब्रह्मचारी हनुमान और ब्रह्मचारी भीष्मकी याद करो।

ब्रह्मचारी हनुमानके अतिरिक्त और कोई था जो संजीविनी-बूटी लाकर मूर्च्छित लक्ष्मणको पुनर्जीवन प्रदान करता!

ब्रह्मचारी भीष्मके बाणोंकी याद करके महारथी थर्राते थे।

यह ब्रह्मचारी शंकरकी ही शक्ति थी जो उसने भारतसे बौद्ध-

धर्मको उस समय निकाल बाहर किया, जब वह यहाँ अपने यौवनपर था !

हिटलर सारीकी सारी मानव-जातिके प्राणोंमें हड़कम्प मचा सका, इसलिये कि वह वीर्य-रक्षाका महत्व जानता था !

मरणं बिन्दुपातेन, जीवनं बिन्दुधारणात् !

'केवल दुर्बल प्राणी ही ब्रह्मचर्यकी आड़में अपनी दुर्बलता छिपाते हैं !'—कितनी अविवेकितापूर्ण उक्ति है यह !

दुर्वल वह, जो निम्न किन्तु शक्तिशालिनी वासनाओंसे जूझता है और उन्हें पराजित करके जीवन-पथपर तेजस्वितापूर्ण यात्रा करता है और सबल वह, जो क्षणभर भी उनके सामने नहीं टिक सकता !

दुर्बल वह, जो क्षुद्र वासनाओंका अपने अन्तर्देशसे निष्कासन करके सच्चे यौधेयकी तरह जीवन-संग्राममें अस्त्र-परिचालन करता है और सबल वह जो प्रजनन-इन्द्रियका दास है !

दुर्वल वह, जो विजयी हो चुका है और सबल वह जो मामूली-से आघातसे ही सिर झुका देता है !

कैसी मूर्खतापूर्ण धारणा है !

---

[९]

फूलोंकी कोई भी राह तुम्हें मंजिलतक नहीं ले जा सकती !

तुम्हारी मंजिलतक जानेवाली जितनी भी राहें है, सब कण्टकाकीर्ण हैं !

लेकिन यह तुम्हारा दुर्भाग्य नहीं, सौभाग्य है !

सारेके सारे विश्वको अपनी शक्तियोंके प्रदर्शनका तुम्हें यह अवसर मिला है !

दिखला दो दुनियाँको कि औरोंके लिये जो भयोत्पादक काँटे हैं, वे तुम्हारे लिये कोमल कुसुम !

मुसकराते हुए चलो !

वक्षको गर्वसे स्फीत किये हुए चलो !

पुष्पोंकी याद बीच-बीचमें आयेगी लेकिन यादका आना पाप नहीं है !

चेष्टा तो इसी बातकी करो कि उनकी याद ही न आये।

तुम्हारा फूलोंसे रिश्ता ही क्या।

कुछ दूर इस राहपर चलनेके उपरान्त फिर क्रमशः उनकी स्मृति धूमिल होती जायगी।

तुम्हारा मनोबल भी उसी अनुपातसे बढ़ता चलेगा।

लेकिन आरंभमें यदि तुम्हारी कल्पनाके रेशमी और रंगीन

अंचलमें कभी-कभी पुष्पोंका दल अनाहूत ही बिखरने लगे तो घबड़ाना मत !

किसी चीजको जानना उसको करना नहीं है।

हाँ, उस ओर झुकना पाप है !

वासनाके विचार तुमतक आयें तो यह आसन्न संकटकी सूचना अवश्य है क्योंकि सभी विचार किसी न किसी रूपमें कार्यकी ओर उन्मुख होते हैं किन्तु विचार मात्र आनेसे तुम्हारा पतन हुआ, ऐसी बात नहीं है !

विचार आया, इसका तात्पर्य यह है कि तुम पर मन्मथके कुसुम-शरका प्रहार हुआ !

लेकिन प्रहार होनेसे ही यौधेय पराजित हो गया, ऐसी बात नहीं है !

प्रहारके सामने सिर न झुकाओ !

बार-बार प्रहार होगा !

मन्मथके कुसुम-शर असंख्य हैं ! जीवन-यात्रियों पर युगयुगान्तसे वह उन्हें छोड़ता आ रहा है, फिर भी वे समाप्त नहीं होते !

लेकिन तुम हमेशा मुसकराते हुए आगे बढ़ते रहो !... जैसे कुछ हुआ ही नहीं !

हो सकता है, इससे शत्रु थककर बाण-परिचालन-क्रिया स्थगित कर दे !

और यह भी हो सकता है कि वह द्विगुणित वेगसे चलाना आरम्भ कर दे—विक्षुब्ध हो कर !

तुम काम-वासनाके घृणित परिणामकी कल्पना उस समय आरंभ कर देना !

क्षणभरके उस नारकीय सुखके बाद जो ग्लानि होती है उसकी कल्पना करना !

चिताकी लपटोंकी याद करना !

अस्थि-मांस-रक्त-मज्जाको अलग-अलग करके देखना !

उन ब्रह्मचारियोंकी याद करना, जिन्होंने मन्मथके शरोंको निरर्थक कर दिया था !

अपनी मंजिलकी दूरीकी याद करना !

मार्गकी कठिनाइयोंकी याद करना !

और, साथ ही यह भी कल्पना करना कि सहस्रों आँखें उत्सुकतापूर्वक तुम्हारी ओर व्योम-पथसे देख रही हैं !

तुम्हारी पराजय उन्हें अश्रु-आविल कर देगी !

तुम्हारी विजयसे वे चमक उठेंगी !

ये ही तुम्हारे अस्त्र हैं !—वे अस्त्र, जिन्हें यदि ठीकसे तुमने फेंका तो मन्मथकी पराजयमें अणुमात्र भी सन्देह नहीं !

युद्धके समय अपने मनको मत भूल जाना ! यदि उसने शत्रुका साथ कुछ अंशोंमें भी दे दिया तो जीत न सकोगे !

वह अभागा आनंदका भूखा है !

इसमें उसका दोष भी क्या ?... अभागा नंदन-काननक अधिवासी इस दुःखालय मायालोकमें आ फँसा !

उससे लड़ो मत !

उससे लड़ना अपने आपसे लड़ना होगा !

अपने आदमियोंसे जो लड़ाई होती है, उसमें विजय पराजय दोनों ही हानिकारक होती हैं !

मन्मथके साथ लड़ते समय मनको सदैव अन्य आनन्दक प्रलोभन दो !

मंजिलतक पहुँचने पर जो असीम उल्लास प्राप्त होगा, उसकी याद दिलाओ !

आश्रितोंकी जय-ध्वनिकी याद दिलाकर उसका ध्यान दूसरी ओर मोड़ो !

यदि इतनेपर भी वह सुखकी चन्द्र-किरणोंके लिये तरसता हुआ दिखलायी दे तो उसे दूसरे प्रकारके सुखोंकी काल्पनिक दृश्यावलीके द्वारा सन्तुष्ट करो !

वह सुखका भूखा है—सिर्फ सुखका।

निर्भीकतापूर्वक मन्मथका सामना करो !

मुसकराते हुए अपना ध्यान परिवर्तित करो !

कल्पना-शक्तिका अस्त्र अमोघ है !

अपनी इच्छा-शक्तिके साथ ही साथ कल्पना शक्तिका भी प्रयोग करो !

कल्पना—शक्तिके अभावमें इच्छा-शक्तिके पराजयकी पूरी सम्भावना रहती है!

अधिकांश व्यक्तियोंकी इच्छा-शक्तिके पराजयका कारण उसकी दुर्बलता नहीं होती! वे कल्पनाके साथ उसका संयोग नहीं कर पाते!

संशय-भय इच्छा-शक्तिका सबसे बड़ा शत्रु है!

काम-वासनाके साथ जूझते समय यदि इस शत्रुका आगमन हुआ तो बड़ा अनिष्ट होगा! आत्म-शक्तिकी कल्पनाके द्वारा शीघ्रातिशीघ्र उसको पराजित करो!

जानते हो, विषकी औषधि विष है!

मन्मथ कल्पनाका ही अस्त्र छोड़ता है!

तुम प्रतिकूल कल्पनाका अस्त्र छोड़ो!

वह काम-वासना-जनित सुखोंकी कल्पनाका अस्त्र फेंकता है! तुम काम-वासना-जनित दुःखोंकी कल्पनाका अस्त्र फेंको!

---

[१०]

अरे, यह क्या ?

तुम्हारा उत्साह विशिथिल क्यों हो रहा है ?

तुम्हारे चक्षुओंमें ये अश्रु-बिन्दु कैसे ?

क्या कहा ? 'वासनाके विचार मुझे कभी-कभी बहुत बेचैन कर डालते हैं ! मेरी सारी शक्तियाँ न जाने कहाँ लुप्त हो जाती हैं ! और उन विचारोंको मैं जितना ही दूर करना चाहता हूँ उतनी ही शक्तिके साथ उनकी लौह शृङ्खलाओंमें मैं बँधता चला जाता हूँ !'

बावले ! इतना उद्विग्न होनेकी कौन-सी बात है ! मैं तुम्हें शीघ्र ही कुछ ऐसे उपाय बतलाऊँगा कि तुम उन शृङ्खलाओंको एक ही झटकेमें तोड़ डालोगे !

किन्तु जरा ठहरो !

सर्वप्रथम तुम अपने अन्दर एक ज्योति जगाओ !

उस ज्योतिके जग जानेसे तुम्हारी शक्तियाँ अत्यधिक प्रबल हो जायँगी !

तुम्हारे मार्गके अनेकानेक कण्टक स्वतः तुम्हारे चरणोंके लिये जगह बना देंगे !

उस ज्योतिके जग जानेसे तुम्हारी गति बहुत तीव्र हो जायगी !

पथावरोधक तूफानोंको भी तुम्हारी प्रगति देखकर विस्मय होगा !

जानते हो, वह कौन-सी ज्योति है ?

वह ज्योति है दृढ़ निश्चय की !—उस निश्चयकी जो हिमाद्रिकी तरह अटल है, अडिग है !

अधिकांश व्यक्ति पहले तो कोई निश्चय ही नहीं कर पाते !

और, यदि वे निश्चय करते भी हैं तो वायुका एक लघुतम आघात उसे प्रकम्पित करनेके लिये पर्याप्त सिद्ध होता है !

निरन्तर उनके निश्चय परिवर्त्तित होते रहते हैं !

आज उनकी मंजिल इधर होती है, कल उधर ! आज वे इस राहको पकड़ते हैं, कल उस राहको !

और, उनका आत्म-विश्वास इस गति-पतिवर्त्तनके कारण सदैव स्खलित होता रहता है !

तुम अपने निश्चयको हिमाद्रिकी तरह बनाओ, ताकि वायुके झोंकोंकी तो बिसात ही क्या है, इस ग्रहमें कोई भी उसे प्रकम्पित न कर सके !

दृढ़ निश्चयकी उस पावनी ज्योतिमें तुम्हारी शक्तियां चमक उठेंगी !

इस दृढ़ निश्चयकी ज्योतिने ही हिटलरको कहासे कहां पहुंचा दिया !

भले ही उसका लक्ष्य ठीक न रहा हो, लेकिन उसके दृढ़ निश्चय की ओर देखो ! इतिहास उसे कभी नही भूल सकता !

मुसोलिनीको देखो, स्टालिनको देखो, लेनिनको देखो !

सर्वत्र तुम्हें निश्चयकी दृढ़ता मिलेगी !

मैं यह नहीं कहता कि ये तुम्हारे आदर्श हैं !

मैं यह नहीं कहता कि तुम इनका अनुसरण करो !

तुम्हारी मंजिल इनसे बिल्कुल अलग है !

इनकी मजिल तुम्हारी मंजिलके सामने सर्वथा नगण्य और तुच्छ थी !

लेकिन इनके निश्चयकी दृढ़ता तो देखो !

निश्चयकी दृढ़ता तुम्हारे चरित्रकी दृढ़ता है !

दृढ़निश्चयी व्यक्तिको कोई प्रलोभन पदच्युत नहीं कर सकता !

दृढ़ निश्चय कर लो, तुम्हें मंजिल तक हर हालतमें पहुँचना है !

चाहे मार्गमें आँधी चले, चाहे तूफान !

समस्त मित्र शत्रुओंके रूपमें क्यों न परिणत हो जायँ !

सुखकी समस्त चन्द्र-किरणें बादलोंके अवगुण्ठनमें क्यों न छिप जायँ !

साराका सारा संसार तुम्हारा विरोधी क्यों न बन जाय !

लेकिन तुम्हारा निश्चय अकम्पित रहे !

तुम्हारा रोम-रोम मंजिलकी प्राप्तिका स्वप्न देखे !

मंजिल तक पहुँच कर ही तुम्हें साँस लेनी है !

या विजय या मृत्यु !

पराजय शब्दको अपने कोषमें न रहने दो !

बहुत पहलेकी बात है। एक सेनानीको अपने उस शत्रुसे

माना, आज तुम्हारा अन्तर्प्रदेश तूफानोंका क्रीड़ा-स्थल बना हुआ है !

माना, तुम्हारे व्योममें आज ज्योतिकी एक नन्हीं-सी भी किरण नहीं अवशिष्ट रह पायी है !

माना, तुम्हारा जीवन-शतदल एक सुदीर्घ अवधिसे अंशुमाली की रश्मियोंके स्पर्शाभावमें परिम्लान-सा हो रहा है ।

किन्तु युवक ! आशा रखो, तुम्हारा भविष्य गौरवोज्वल है !

वह समय दूर नहीं जब तुम नूतन शक्तिके प्रतीक समझे जाओगे !

आज तुम पथभ्रान्त से प्रतीत हो रहे हो ! वह समय दूर नहीं, जब तुम्हें अपना पथभ्रष्टा बना कर अन्य यात्री अपनेको धन्य मानेंगे ।

क्या कहा, किसीकी विरह-वेदना कुछ करने ही नहीं देती ! ·· किसी खोये अन्तर्देवताकी याद प्राणोंको सदैव धूमिल करती रहती है !

बावले ! तो क्या हुआ !

क्या तुम्हीं कोई नये विरही हो ।

विरह केवल आंसुओंको ही जन्म नहीं देता, व्यक्तिको न जाने क्या-क्या बना डालता है ।

चार्ल्स डिकेंस यदि विरहकी वेदनासे आक्रान्त न होता तो उसके उपन्यासोंसे अंगरेजी साहित्य वञ्चित रह गया होता !

कितनोंकी याद दिलाऊँ तुम्हें !

खोये हुए साथीकी स्मृतिका चिराग जलाये हुए क्या जाने कितनोंने अपने कदम आगे बढ़ाये हैं !

फिर तुम क्यों केवल अश्रुपातमें ही लीन हो !

शक्तिके निकेतन हो तुम !

केवल उनसे काम लेनेकी कला तुम नहीं जानते !

समय बीतता चला जा रहा है !

प्रत्येक बीता हुआ क्षण मुड़कर यह देखता है कि तुमने उसका कितना उपयोग किया है,—कितने कदम तुमने मंजिलकी ओर बढ़ाये हैं ।

तुम्हें रह-रहकर यह सन्देह क्यों होने लगता है कि तुम अपने स्वभावको परिवर्तित करके अपने व्यक्तित्वको ज्योतित नहीं कर सकोगे !

शायद तुम्हें पथच्युत दार्शनिकोंने बहका दिया है !

शायद कांट, शोपेनहावर और हर्बर्ट स्पेंसरके फेरमें पड़ गये हो !

मैं यह नहीं कहता, इन्होंने जो कुछ कहा, गलत ही कहा !

और ऐसा मैं कह भी कैसे सकता हूँ !

किन्तु मानवी व्यक्तित्वके निर्माणके सम्बन्धमें इन्होंने जो कुछ कहा है, गलत है !

चरित्रपर इच्छा-शक्तिका वश नही, यह सिद्धान्त गलत है !

लेकिन इच्छा-शक्तिके प्रयोगका तरीका गलत नहीं होना चाहिये !

कौंटके अध्ययनसे शायद तुम्हारा विश्वास हो गया होगा कि मानवी चरित्रका निर्माण पहले ही हो गया है और वह अपरिवर्तनीय है ! इस स्थान और कालके जगतमें एक बार अवतरित होने के बाद तुम्हारा चरित्र तुम्हारी इच्छा-शक्तिके अनुसार परिवर्तित नहीं हो सकता !

शोपेनहावरने भी ऐसा ही कहा है कि मानवी चरित्रमें सुधारकी कोई सम्भावना नहीं है। एक स्वार्थी व्यक्तिको शिक्षाके द्वारा परोपकारकी महत्तासे अभिज्ञ कराया जा सकता है और एक हिंसकको उसकी हिंसा-वृत्तिकी नीचतासे भी परिचित कराया जा सकता है किन्तु स्वार्थीको परोपकारी अन्दरसे नहीं बनाया जा सकता और न हिंसकके अन्तर्तमको हिंसा वृत्तिसे मुक्त करके कारुणिक ही बनाया जा सकता है !

इन दोनों जर्मनोंके अतिक्ति अंग्रेज विचारक हर्बट स्पेंसरने भी इस सम्बन्धमें उत्साही जीवन-यात्रियोंको निराशा ही प्रदानकी है ! उसके मतानुसार चरित्रमें सुधार हो तो सकता है, किन्तु वह समयसाध्य है ! शताब्दियों तक जीवनकी वाह्य परिस्थितियोंको परिवर्तित रखनेके उपरान्त ही इच्छानुकूल चरित्रका परिवर्तन संभव हो सकता है।

शताब्दियों तक ! . .

और, एक जीवन-यात्रीके पास समय कितना है ?... मुश्किलसे चालीस-पचास वर्ष !

और, इन चालीस-पचास वर्षोंमें और भी तो बहुत-से कार्य करने हैं ! केवल एक यही काम तो नहीं है !

'पूर्वजोंकी बुराइयाँ वंशानुसंक्रान्त होकर हममें विद्यमान हैं ! अतः उन्हें इतनी अल्प अवधिमें दूर नहीं किया जा सकता !'

किन्तु पूर्वजोंकी अच्छाइयाँ भी तो वंशानुसंक्रान्त होकर तुममें विद्यमान हैं। उन्हें जागृत करके तुम बुराइयोंको हतवीर्य कर सकते हो !

'स्वार्थीको परार्थी नहीं बनाया जा सकता ! हिंसकको रक्षक नहीं बनाया जा सकता !"

कौन ऐसा व्यक्ति है जो जीवनके समस्त क्षणोंमें स्वार्थी रहा हो !—जिसने जीवनके उषाकालसे लेकर सायंकालतक केवल स्वार्थपरतासे युक्त कार्य ही किये हों ?

कौन ऐसा व्यक्ति है, जिसने सारे जीवनमें केवल हिंसा ही हिंसा की हो, दयाकी या ममताकी एक नहीं-सी रश्मि-रेखासे भी जिसका जीवन-जलद चुम्बित न हुआ हो !

ऐसा उदाहरण नहीं मिल सकता !

चरित्र कोई इकाई नहीं ; वह सहस्रों प्रवृत्तियोंका समूह है !

ये प्रवृत्तियाँ अमुह्यमान नहीं, इसके सहस्रों उदाहरण प्रतिदिन देखनेमें आते हैं !

फिर क्यों नहीं इन मुह्यमान प्रवृत्तियोंमें मनोविज्ञानसम्मत

प्रणालियोंके द्वारा उन्हें अधिक सबल किया जा सकता है, जो जीवन-पथमें हितकर हैं।

मनुष्य स्वतंत्र है, लेकिन वैसा नहीं, जैसा कि अनेकानेक दार्शनिकोंने, खासकर क्रिश्चियन दार्शनिकोंने सोचा है !

मनुष्य परतंत्र है, लेकिन वैसा नहीं, जैसा कि कांट और शोपेनहावरने बतलाया है।

पूर्ण स्वतंत्र ब्रह्मके अतिरिक्त और कोई नहीं !

और कोई हो भी नहीं सकता !

पूर्ण स्वतन्त्रताके लिये जिस पूर्णताकी आवश्यकता है, वह आत्माओंमें नहीं।

अन्य वस्तुओंसे जीवन-यात्रीका सम्बन्ध रहेगा ही !

इस सम्बन्धको पराधीनता कहो तो कह सकते हो !

पूर्व संस्कारोंके कारण जीवन-यात्रीका सम्बन्ध उन बुराइयोंसे भी हो जाता है जो पथ-प्रगतिमें बाधक होती हैं !

जीवन-यात्री चेष्टा करे तो उन बुराइयोंसे सम्बन्ध विच्छिन्न कर सकता है !

अनेकानेक जीवन-यात्रियोंने ऐसा किया है !

यह कोई असम्भव बात नहीं !

अनेकानेक डाकू सन्त बन गये हैं !

साराका सारा जीवन पापाचरणमें यापित करनेवाले सच्चे भक्त बन गये हैं।

उष्ट्र तक का उच्चारण न कर सकने वाला व्यक्ति अभिज्ञान-

शाकुन्तलम्, मेघदूतम्, कुमारसम्भव जैसे ग्रन्थोंका रचयिता बन गया है।

रूपाजीवाके गोरे और नवनीत-मसृण चर्मपर सर्वस्व निवेदित करनेवाले व्यक्तिने वैराग्यके कारण आँखें फोड़ डाली हैं।

शृङ्गार-शतक जैसी पुस्तकको लिखनेवाला, लोक-दुर्लभ अमरफलको भी अपनी रूप-श्री-सम्पन्ना पत्नीको ही प्रदान करने वाला महान् आसक्त वैराग्य-शतकका रचयिता बन गया है।

अफ्रीकाका लुटेरा सेंट ऑगस्टिन बन गया, जिसकी लिखी पुस्तकें क्या जाने कितनोंको आलोक प्रदान कर रही हैं।

लेकिन यह परिवर्तन दो ही तरह संभव है। या तो ईश्वरकी कृपासे आत्माके ऊपर छाया हुआ मैल स्वतः धुल जाय या मनोविज्ञानसम्मत प्रणालियोंसे उसे धोया जाय!

यह मैल एक दिनमें साफ नहीं हो सकता!

एक दिनमें यह जमा भी तो नहीं हुआ था!

वर्षोंसे जीवन-यात्री इसे एकत्रित करता आ रहा है, फिर वह कैसे आशा करता है कि क्षणभरमें वह कुन्दन-सा दमक उठेगा!

इसके लिये परिश्रम करना पड़ेगा—कुर्बानियाँ करनी होंगी—कष्ट सहने होंगे!

और कौन कहता है कि तुम परिश्रम नहीं कर सकते!

कौन कहता है कि तुम कुर्बानियाँ नहीं कर सकते—कष्ट नहीं सह सकते!

तुम आदर्शके लिये भीषण तपस्या कर सकते हो !

तुम समुद्रकी उत्ताल तरंगमालाओंके साथ संग्राम कर सकते हो !

तुम मरुस्थलीके उत्तप्त मध्याह्नकी जलती हुई सिकता-राशिमें नंगे पांवों चल सकते हो !



यदि सावधानीसे काम लिया जाय और मनोविज्ञानसम्मत प्रणालियोंसे निम्न प्रवृत्तियोंका दमन किया जाय तो कोई कारण नहीं कि जीवन-यात्री उनका स्वामी न बन जाय !

लेकिन विजयी होनेके लिये थोड़े धैर्यकी भी आवश्यकता है !

बहुत-से व्यक्ति अपने चरित्रका सुधार आरम्भ तो करते हैं और जिस समय प्रारम्भ करते हैं, उन्हें चरित्रकी परिवर्तनशीलता पर पूर्ण विश्वास भी रहता है किन्तु कुछ बार असफल हो जाने पर उन्हें निराशा हो जाती है और वे सब प्रकारके प्रयासोंसे विरत हो जाते हैं।

धैर्य-राहित्य उनके विनाशका कारण होता है !

आत्म-नियन्त्रणके वे प्रयासी यह भूल जाते हैं कि गलती उनके अस्त्र-प्रयोगमें है !

गलतियोंसे भविष्यमें लाभ न उठाना और निराशाको चिर-कालके लिए प्रश्रय देना अविवेकिताका परिचायक है !

गलतियोंसे जो चोट लगती है, उसे पराजय नहीं कहते !

पराजय तब होती है जब यौधेय रणस्थली छोड़कर या तो भाग जाता है या शत्रुके सामने सिर अवनत कर देता है !

वह पराजित नहीं, जिसका सारा शरीर लड़ते-लड़ते रक्ताक्त या स्वेद-सिक्त हो रहा है !

पराजित वह है, जिसने पीठ दिखा दी है !

अस्त्र-प्रयोग सावधानीसे करो !

कोई भी वार खाली न जाने पाये !

प्रत्येक निशाना ठीक बैठे !

पहलेकी गलतियों से शिक्षा ग्रहण करो और सदैव इस बातकी चेष्टा करो कि उनकी पुनरावृत्ति न हो !

एक पुनरावृत्ति सहस्र पुनरावृत्तियोंकी जननी होती है !

और, फिर वह तुम्हारे व्यक्तित्वका एक ऐसा अंग बन जायगी, जिसे दूर करनेके लिये तुम्हें एड़ी-चोटीका पसीना एक कर देना होगा !

गलतियोंसे आगेके संग्रामके लिये नूतन शक्ति प्राप्त करो !

तुमने गलती की, यह कोई लज्जाकी बात नहीं है। गलतियाँ सबसे होती हैं !

किन्तु गलतियोंकी पुनरावृत्ति यदि करते हो तो यह घोर लज्जाकी बात है !

वह देवता है, जिसे ठोकर नहीं लगती।

वह मनुष्य है, जो ठोकर खाकर सम्हल जाता है !

किन्तु उसे क्या कहा जाय जो बार-बार ठोकरें खाकर भी नहीं सम्हलता।

पशु भी बार-बार ठोकर नहीं खाते।

सफलतासे उत्साह बढ़ता है, इसमें सन्देह नहीं।

लेकिन विफलता तुम्हें निरुत्साहित कर दे इसका भी तो कोई कारण नहीं दीखता!

बल्कि विफल होने पर तो तुम्हारी अन्तर्ज्वाला और भी प्रदीप्त हो जानी चाहिये! और भी अधिक वेगके साथ तुम्हें शत्रुपर प्रहार करना चाहिये!

भला, तुम्हें कोई विफल कर दे!!

जान पोल जोन्स अपने सहायकोंसे वञ्चित हो गया था। अंग्रेजोंने उसकी समस्त शक्तियाँ छिन्न-भिन्न कर डाली थीं। उसके जलयानमें भी आग लगा दी गयी। डूबते हुए जलयानपर उस निस्सहाय अमेरिकनसे अंग्रेजी सेनाके अधिपतिने आत्मसमर्पणके लिये कहा!

लेकिन जॉनपोल जोंस और आत्मसमर्पण!.. असम्भव!— सर्वथा असम्भव!

ब्रिटिश सेनापतिके वे वाक्य उसके हृदयमें चिनगारियाँ वरसाने लगे!

'मैंने तो अभी लड़ना शुरु तक नहीं किया है!' उच्च स्वरमें बोलता हुआ वह अपने भग्न जलयानको किसी तरह अंग्रेजोंके जलयानकी ओर बढ़ाकर ले गया और फिर अपने सैनिकोंके साथ उनपर टूट पड़ा!

और विपक्षियोंको पराजित करके छोड़ा!

इसीलिये कहता हूँ, असफलताओंसे डरो मत!

इसीलिये कहता हूँ, कठिनाइयोंसे घवड़ाओ मत!

क्षणिक असफलताओंका निरीक्षण करते हुए प्रहार करते चलो - अप्रतिहत गतिसे !

याद रखो, विश्व-विजयीकी अपेक्षा आत्मजयी कहीं महान है ।

रणस्थलीके मानव-विपक्षियोंको पराभूत करनेसे कहीं अधिक गौरवका कार्य मनकी दुर्बलताओंको जीतनेमें है ।

मानवी इतिहास पुकार-पुकार कर यह कह रहा है ।



इस युद्धमें बड़ी कुशलताकी आवश्यकता है।

सतर्क रहे बिना कदम-कदम पर पराजयका भय है।

केवल लड़नेके तरीके जान लेनेसे ही कोई विजय प्राप्त कर लेता।

उसके लिये पसीना बहाना पड़ता है।

केवल ज्ञान विजयके लिये अपर्याप्त है।

ज्ञानकी ज्वालामें बुरे संस्कारोंको तुम्हें बलपूर्वक भ करना पड़ेगा।

ममता रोयेगी!

अज्ञान क्रन्दन करेगा।

माया चीत्कार करेगी!

मृगतृष्णाका मारा तुम्हारा मन तुम्हारे प्रति विद्रोहकी घोष करेगा।

किन्तु तुम्हें निष्ठुरतापूर्वक ज्ञानके अग्नि-कुण्डमें इनकी आहु देनी पड़ेगी!

यह समय-साध्य भी है, कष्ट-साध्य भी!

पौरुषकी परीक्षा यहीं होती है।

जगत्को दिखला दो कि तुम इस परीक्षामें कभी अनुत्ती नहीं हो सकते!

तुम आत्मा हो--चेतन और ज्योतिर्मय।

किन्तु परिस्थितियोंके फेरमें पड़कर आज शरीरके साथ हो।

शरीरकी भी अपनी एक चेतना है!

वह चेतना तुम्हारी अपनी चेतनाके सदृश नहीं! उससे सर्वथा निम्न स्तरकी है!

किन्तु चेतना वह भी है!

युगोंके संस्कार उसके साथ हैं।

एक बारका कार्य पुनरावृत्तिसे आदत बन जाता है।

वह आदत शारीरिक चेतनाको प्रभावित करती है!

शरीर संस्कारानुरूपी है विकासवाद इसे सिद्ध कर चुका है!

सहस्राब्दियोंके भले-बुरे संस्कार तुम्हारे शरीरमें प्रच्छन्न या प्रकट रूपमें हैं।

इन्हें तुम्हें अपने अनुकूल बनाना है।

तभी तुम्हारी प्रगति तीव्र हो सकेगी।

'ऐसा असंभव है' कतिपय दार्शनिकोंने कहा है!

तर्क उनका है—'यदि ऐसा संभव होता तो युवकोंकी अपेक्षा वयस्क अधिक संयत और दृढ़ चरित्रके मिलते! किन्तु ऐसा कहाँ है!'

धन्य है यह तर्क-पद्धति!

इससे तो यह निष्कर्ष निकलता है कि लोग आत्म-सुधार की चेष्टा नहीं करते। और यदि करते भी हैं तो गलत रीतिसे!

साधारणतया एक व्यक्ति को किसी विशिष्ट बुरे कार्यमें निरत देखकर लोग उसके सम्बन्धमें सदाके लिये बुरी धारणा बना लेते हैं, इससे सिद्ध होता है कि चरित्रमें सुधार असंभव है !

इस प्रकार की शंका सर्वथा निराधार है !

आत्म-सुधारके कार्यको दृढ़तापूर्वक सम्पन्न करने की ओर लोगोंका ध्यान नहीं जाता, इसलिये वे सदैव उन दुर्बलताओंसे आक्रांत रहते हैं, जिनसे उनके जीवन का उषः काल आक्रान्त था !

अधिकांश जीवन-यात्री सच्चे अर्थोंमें जीवन-यात्री नहीं होते ! वे परिस्थितियोंके दासानुदास मात्र होते हैं !

निम्न पाशविक वृत्तियोंके संतुष्टीकरणके अतिरिक्त वे और कुछ नहीं करते !

करना चाहते भी नहीं !

इसीलिये करने की शक्तियों का भी ऐकान्तिक अभाव उनमें हो जाता है !

वाह्य प्रेरणाएँ उन्हें नाच नचाती है !

उनकी वासनाएँ उन्हें नाच नचाती हैं !

परम्परागत कुसंस्कार उन्हें नाच नचाते हैं !

और, वे नाचते हैं ; विरोधकी शक्ति उनमें नहीं रह पाती !

कितने तो विरोध का स्वप्न भी नहीं देखते !

पतनकी ओर अधिकांश जीवनयात्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है !

और, वे उस प्रवृत्ति का दमन करना जानते भी नहीं! इसीलिये जीवनके उषः कालकी अपेक्षा जीवन की गोधूलिमें अधिक विपन्न रहते हैं!—अधिक अशरण!

उनका कोई आदर्श नहीं होता!

उनकी कोई मंजिल नहीं होती!

रोटी, वस्त्र, गृह और नारी। ..... इनकी प्राप्तिके कार्यमें वे सदैव संलग्न रहते हैं!

आत्मोन्नतिके कठिन मार्ग पर चलना तो दूर रहा, उससे वे अभिज्ञ भी नहीं होते।

फिर यदि एक व्यक्ति किशोरावस्थामें जिस दुर्गुणसे संमन्वित रहता है, वह वृद्धावस्थामें भी उसमें विद्यमान मिलता है तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

तुम अपनी गणना इनसें न कराओ!

तुम करा भी नहीं सकते।

तुम अपने कर्तव्यों की गुरुता पहचान गये हो!

तुम्हें यह विदित हो गया है कि तुम्हारा गन्तव्य स्थान यहांसे कितनी दूर है और वहां तक पहुँचाने वाला मार्ग किस प्रकार कण्टकास्तीर्ण है!

और उसपर चलनेके लिये जिन चारित्रिक विशेषताओंकी आवश्यकता है, वे आत्म-नियंत्रण से ही समुपलब्ध हो सकती हैं।

---

[१४]

युद्धके बाद जब विजयी सैनिक अपने गृहकी ओर लौटता है, उस समयका दृश्य कितना मनोहारी होता है !

उसका सारा शरीर शोणित-बिन्दुओंसे शृंगारित रहता है !

थकावटसे नसें टूटती रहती हैं !

लेकिन विजयका वह उल्लास !—कर्त्तव्य-पालनमें सफलता प्राप्त करने का वह स्वर्गीय आनन्द ।

गर्वसे उसका वक्षस्थल उफनाता रहता है !

प्रियजनों की स्मृति उसके परिश्रान्त चरणोंको अभिनव बल प्रदान करती रहती है !

वह चरणोंके शोणित-बिन्दुओंसे पथके रज-कणों को पावन बनाता हुआ उस ओर अविश्रान्त गतिसे कदम बढ़ाता रहता है, जिधर उसके प्रियजन उसकी प्रतीक्षामें खड़े रहते हैं !

और जब वह वहाँ पहुँचता है तो चतुर्दिक स्वर्गिक सुषमा-सी छा जाती है !

उसकी प्रेयसी उसके गलेमें जयमाला डालती है ।

उसका बन्धु उसे कलेजेसे लगा लेता है !

उसके सखागण उसे आलिङ्गन-पाशसे मुक्त नहीं करना चाहते !

उसकी माता उसके माथेपर रोलीका टीका लगाकर फूली नहीं समाती !

उसके प्रतिवेशी उसे देख-देख कर अपना भाग्य सराहते हैं !

वह अपने स्थानका गौरव समझा जाता है !

उसके विजयकी गाथा घर-घर गायी जाती है !

और वह, जो युद्धस्थलीमें कुर्बान हो गया ?

उसको भी कुछ कम गौरव नहीं प्राप्त होता !

उसकी समाधिके फूलोंको लोग माथेसे लगा कर अपनेको पवित्र करते हैं !

उसके वलिदानके गीत युवकोंके हृदयान्तरालमें सदैव एक नूतन उन्माद जगाते रहते हैं !

उस स्थानका प्रत्येक रजकण पवित्र हो जाता है, जहाँ उसके शोणित-विन्दु गिरे थे !

उसकी माता देवी समझी जाती है !

लेकिन वह, जो रणस्थलीमें भयाक्रान्त हो कर पीठ दिखा आता है !......

छिः !

समीरणका प्रत्येक हृत्कम्पन उसे धिक्कारता है !

जिस मार्गसे वह लौटता रहता है, उसके पार्श्ववर्त्ती द्रुमोंके विहग उसे घृणा भरी दृष्टिसे देखने लगते हैं !

उसके चरणोंमें वल नहीं होता।

उसका अन्तस्तल स्वयं किसीकी भर्त्सनासे सिहरता रहता है !

और, जब वह अपने वेश्म पर पहुँचता है, तब ? ..

तब उसे देख कर किसीका हृदय प्रफुल्लित नहीं होता !

किसी सखाके हाथ उसे आलिङ्गित करनेको आगे नहीं बढ़ते।

उसके मस्तकमें टीका लगानेके लिये कोई अभिमानिनी आगे नहीं आती।

चारों ओर स्मशानके निशीथ-सी भयङ्कर नीरवता छा जाती है!

लोग उसका दर्शन अशुभ समझने लगते हैं।

कोई उसकी चर्चा तक करना पाप समझता है।

वह जीवित तो रहता है, लेकिन निष्प्राण हो कर!

अर्जुन भयभीत हो कर युद्धसे नहीं उपरत हो रहा था।

लेकिन फिर भी उसके प्राणसखा योगीश्वर श्रीकृष्णने कहा—

भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथा।
येषां च त्वं बहुमतो भूत्वा यास्यसि लाघवम्।
अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्त्तिर्मरणादतिरिच्यते।
अवाच्यवादांश्च बहून् वदिष्यन्ति तवाहिताः।
निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम्।

युवक! आगे बढ़ो, युद्ध करो, कृतनिश्चय हो।

अर्जुनको तो केवल कौरवोंको परास्त करना था! तुम्हें न जाने कितनी-कितनी लड़ाइयाँ जीतनी हैं—कितने-कितने शत्रुओं को परास्त करना है!

मोह नष्ट करो।

स्थितप्रज्ञ हो कर एक बार चारों ओर दृष्टिपात करो।

सन्देह की पिशाचिनोंको अपने अन्तर्प्रान्तमें प्रवेश तक न करने दो!

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप !

जो संग्राममें विजयी होते हैं, इतिहास उनकी याद करके मुसकराता है।

जो संग्राममें कर्त्तव्यकी बलिवेदी पर चढ़ कर प्राणोंका विसर्जन कर देते हैं, इतिहास उनकी यादमें आंसू बहाता है!

किन्तु जो कायर भयातुर हो कर रणस्थलीसे भाग निकलते हैं, इतिहास उनकी याद करके घृणासे सिहर उठता है।

---

[१५]

दिखला दो दुनियाँको कि तुम केवल देखनेमें ही कोमल-कान्त हो !

तुम्हारी हुंकारोंसे अरि दलका वज्रोपम हृदय भी थर्रा जाता है।

दिखला दो उन्हें, जो तुम्हें सर्वथा सुकुमार समझते हैं, कि तुम किस प्रकार तूफानोंके साथ क्रीड़ा कर सकते हो।—किस प्रकार मार्गके भीषण अंधकारमें अविचलित्त गतिसे आगे बढ़ सकते हो।

अन्तरिक्षमें गर्जना करनेवाली इन सघन श्याम वारिद-मालाओंका अन्तस्तल विदीर्ण करके अपने मार्ग पर आलोककी किरण-वर्षा करके अन्य यात्रियोंको विदित करा दो कि तुम कौन हो ! – शक्तिका कौन-सा अपार्थिव भण्डार तुम्हारे पास है !

युवक ! मेरे प्यारे युवक !

अपने साहस और उत्साहका ज्वलन्त परिचय दो सारी-की-सारी मानव-जातिको !

व्याघ्रकी कन्दरामें प्रवेश करके अपना ईप्सित पदार्थ बाहर निकाल लाओ और अपने विपक्षियोंको दिखला दो कि तुमसे होड़ लेना मृत्युसे होड़ लेना है !

उन्हें अच्छी तरह ज्ञात हो जाय कि तुम स्नेहियोंके लिये जीवन हो, किन्तु पथावरोधकोंके लिये कराल काल !

ठहरो, मैं तुम्हारे सिर पर कांटोंका ताज रखता हूँ !

देखना, इसका अपमान न हो !

यह मत समझना कि कुछ दूर तुम्हें पहुँचानेके बाद जब मैं लौट जाऊँगा, तब तुम अकेले रह जाओगे।

और फिर तुम्हें इसके मानापमानकी कोई चिन्ता न रहेगी !

भोले मुसाफिर ! ऐसा समझ भी न बैठना !

मेरी अनुपस्थितिमें एक नहीं, लाख-लाख आँखें इस मुकुटकी ओर देखेंगी।

और वे यह भी देखेंगी कि जिसके सिर पर यह रखा गया है वह अपना उत्तरदायित्व निभा रहा है या नहीं।

तुम उन्हें नहीं देख सकोगे, लेकिन वे तुम्हारी प्रत्येक गति-विधिसे परिचित होती रहेंगी !

यह कांटोंका ताज सदैव कांटोंका नहीं रहेगा।

जब तक इस दुर्गम यात्रा-पथमें तुम्हें चलना है, तभी तक यह कांटोंका है !

मंजिल पर पहुँचनेके बाद यह एक ज्योतिर्मय और अनवद्य सुषमामय रूप ग्रहण कर लेगा !

आज जितने अधिक स्वेद-कण तुम्हारे शरीरसे निपतित होंगे, उतना ही अधिक उल्लास तब तुम्हारे प्राणोंमे छायेगा !

आजके आँसू उस समयकी मुसकराहटको अभिनव सौंदर्य प्रदान करेंगे।

आजकी पीड़ा उस समय एक स्वर्गिक सुखके रूपमें परिणत हो जायगी।

अपनी शारीरिक और मानसिक पवित्रताको अक्षुण्ण रखते हुए उसके श्री-चरणों तक पहुँचो, जिसकी ज्योतिके एक लघुतम भागसे संसारका सारा सौंदर्य विनिर्मित हुआ है।

सचमुच वह क्षण विश्वके इतिहासमें बहुत ही महत्त्वपूर्ण समझा जायगा जब तुम संघर्षोंसे चूर, विरहकी वेदनासे विकल, स्वेद और शोणितसे सिक्त उसके श्री-चरणों पर जा कर गिर पड़ोगे और यह कह कर बेहोश हो जाओगे—'मैंने तुम्हारी स्मृतिके आलोकमें सारा मार्ग वीरतापूर्वक पार किया है।'

---

[१६]

यह याद रखना, एक म्यानमें दो तलवारें नहीं रह सकती हैं !

जहाँ आलोक होगा, वहां अन्धकार नहीं हो सकता !

जहाँ अन्धकार होगा, वहाँ आलोक नहीं हो सकता।

या तो आलोकका आह्वान करो या अन्धकारका !

या तो क्षुद्र शारीरिक वासनाओंकी पुकारपर ध्यान दो या अपने मानव-कर्त्तव्योंकी पुकारपर।

एक साथ दोनोंपर ध्यान नहीं दे सकते।

कर्त्तव्य-पालन !—इस शब्दमें तुम्हारे लिये महान् आकर्षण होना चाहिये !

कर्त्तव्य-पालन !—इस शब्दमे उन समस्त व्यक्तियोंके लिये महान् आकर्पण रहा है, जिन्होंने संसारमें कुछ कर दिखाया है।

पुत्तलिकाओंके लिये इस शब्दका कोई अर्थ नहीं !

कर्त्तव्य-पालन उनके लिये एक महत्वहीन उन्माद है !

परिस्थितियाँ उन्हें जैसा नाच नचाती हैं, वे नाचती हैं !

कभी रोकर नाचती हैं, कभी हँसकर।

अधिकतर रोना ही पड़ता है !

हवाका एक नन्हा-सा झोंका उनकी दिशा परिवर्तित कर डालता है !

क्या तुम भी पुत्तलिका बनोगे ?

कदापि नहीं ! यह तुम्हारे लिये कलंककी बात होगी !

शरीरकी पुकारोंकी अवहेलना मत करो !

किन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि तुम उसके दास बन जाओ और वह ऐसी चीजोंकी पुकार लगाने लगे जो तुम्हें विनाश के अन्धकारित गर्तमें फेंकनेवाली हैं।

शरीरको वायु, जल, प्रकाश, भोजन प्रभृतिसे सदैव अभिनव शक्ति प्रदान करते रहो !

किन्तु जब वह घृणित वस्तुओंकी ओर उन्मुख हो, उसे दण्ड दो।

अश्व जब अच्छी तरह आगे नहीं बढ़ते और बार-बार आलस्यका परिचय देते हैं तो सारथी उन्हें दण्ड देता ही है !

विद्रोह करनेवाले अश्वको जो दण्ड नहीं देता, वह सारथी अपने गंतव्य स्थान तक शायद ही पहुंच सके !

मार्गका कोई गर्त ही उसका गन्तव्य स्थान प्रमाणित होता है !

हाँ, निपुण सारथीको अश्वोंपर कशा प्रहार करनेकी आवश्यकता ही नहीं होती ! क्योंकि अश्व उसके वशमें होते हैं !

शरीरको प्यार करो, लेकिन उसके दास न बनो !

जिस दिन मन्मथके सौरभित पाशकी ओर यह अत्यधिक बलपूर्वक प्रधावित हो और पूरा विद्रोह ठान ले किसी न किसी प्रकारका शारीरिक कष्ट उस दिन स्वीकार करो !

या तो उस दिन तीन घण्टे कोई ऐसा कार्य करो, जो तुम्हारे शरीरको तनिक भी प्रिय न हो !

या एक शाम भोजन न करो !

या उस दिन किसी ऐसे प्रिय कार्यसे वञ्चित रहो, जिससे मधुरसका स्रोत तुम्हारे अन्तर्देशमें प्रवाहित हुआ करता है।

यह दण्ड तुम्हारे लिये होगा, क्योंकि अश्वोंकी विद्रोहात्मकता सारथीकी दुर्बलतापर भी प्रकाश डालती है।

इस प्रकारके कष्ट-सहनका असाधारण परिणाम होगा ! तुम्हारी शक्ति बढ़ेगी और क्षुद्र वासनाओंकी ओर तुम्हारी प्रवृत्ति कमसे कम होगी !

अपने प्रति कठोर बनो !

अपनी प्रत्येक दुर्बलतापर वज्र-प्रहार करो !

शारीरिक सुखोंके पीछे प्रधावित होनेवाले अज्ञानियोंमें अपनी गणना न कराओ !

शारीरिक सुख मृग-मरीचिकाके अतिरिक्त और कुछ नहीं हैं !

जितना आगे बढ़ोगे, उतना ही आगे वे भी बढ़ेंगे !

नई-नई वस्तुओंमें क्षणिक जलाभास होगा, उसके उपरान्त फिर वह कहीं दूर दिखाई देने लगेगा !

गृहहीन भिक्षुक सोचता है, कुटीर निवासीके शरीरको सुख है !

कुटीर-निवासी सोचता है, नगरके वेश्मोंमें निवास करनेवाला सुखी है !

नागरिक सोचता है, अट्टालिका-निवासी लक्षाधीशके शारीरिक सुखकी समता नहीं की जा सकती।

अट्टालिकानिवासी धनपति राजमहलके अधिवासकी कल्पना करता रहता है।

और सुखका जलाभास संसार-मरुस्थलमें अपनी दूरी ज्योंकी त्यों रखता है!

संस्पर्शज भोग पतनकी ओर ले जानेवाले हैं।

ये हि संस्पर्शजाः भोगाः दुःखयोनय एव ते।
आद्यन्तवन्त कौन्तेय न तेषु रमते बुधः॥

योगीश्वर कृष्णके इस वाक्यको न भूलो!

शारीरिक सुखोंकी क्षुद्र लालसाओंकी बलि देकर ही तुम प्रभंजन-वेगसे आगे बढ़ सकते हो!

श्वानोंकी तरह कामोपभोगके लिये इधर-उधर प्रधावित होनेवाले व्यक्तियोंका स्पर्श ज्ञानके आलोकदानी देवताको अपावन प्रतीत होता है।

मानव-जातिका इतिहास उलटकर देखो, ज्ञानकी किरणोंने जिनके ललाटका शृङ्गार किया है, वे कामासक्त प्राणी नहीं थे।

भोगियोंने किसी भी क्षेत्रमें आज तक नेतृत्व नहीं किया है।

मानव-समाज जिन महानुभावोंके पीछे अन्धा होकर दौड़ा है,—जिनके एक नन्हें-से इशारे पर लोगोंने अपनी लाशें बिछा दी हैं, वे भोगी नहीं हुए हैं।

आलोकके समस्त उपासकोंने कामोपभोगका विरोध करते हुए ब्रह्मचर्यकी महिमाका कीर्त्तन किया है।

महान गणितज्ञ कोशीने अपने शिष्योंको उपदेश देते हुए कहा था—'क्या तुम प्रकाण्ड विद्वान् होना चाहते हो ? यदि हाँ, तो ब्रह्मचर्यकी रक्षा करो।'

कलाकारोंके लिये भी ब्रह्मचर्य परमावश्यक है। मिकेल् आँजने समस्त कलाकारोंको पवित्र जीवन यापित करनेकी सलाह देते हुए कहा है—'कला इतनी ईर्ष्यान्वित है कि वह कोई दूसरी प्रतिद्वन्दिनी नहीं देख सकती।'

वालजक तकने लेखकोंके द्वारा उच्चकोटिके साहित्यकी सर्जनाके लिये ब्रह्मचर्यकी रक्षाको आवश्यक बतलाया है।

शरीरकी शक्तिका एक ही उपयोग हो सकता है। या तो उसे क्षणभरके घृणित सुखकी वलिवेदीपर चढ़ाकर अपने पतनका पथ प्रशस्त करो या उच्च कोटिके कार्योंके लिये उसकी रक्षा करो।

तुम कहोगे—'अधिकाश महापुरुषोंकी महत्ताओंके पीछे किसी नारीका प्रेम विद्यमान रहा है।

ठीक है, किन्तु वह अधिकतर असफल प्रेम रहा।

नारीका सफल प्रेम अधिकतर काम-वासनाकी अन्ध परितृप्तिमें ही पर्यवसित होता रहा है। इसीलिये वह व्यक्तिको कोई ज्वलन्त शक्ति नहीं प्रदान कर पाता।

सफल प्रेम जब काम-वासनाकी परितृप्तिमें पर्यवसित नहीं होता तब वह अवश्य शक्तिप्रदाता बन जाता है।

इतिहासमें इसके उदाहरण नहीं मिलते हों, ऐसी बात नहीं है।

तुम भी तो किसीके प्रेमकी दीप-शिखाको सदैव संसारके झंझानिलसे बचानेका प्रयास करते रहते हो।

प्रेम पाप नहीं है! प्रेम पुण्यकी ज्योति है।

प्रेम दुर्बलता नहीं, प्रेम शक्ति है।

महान कार्य प्रेमके द्वारा सम्पन्न होते हैं।

प्रेम और ब्रह्मचर्य दोनों यदि साथ-साथ चलें तो मार्गके पर्वत भी पथ छोड़ सकते हैं।

प्रेमके जितने स्वरूप दिखलायी देते हैं, उतने शायद ही किसी अन्य मानसिक संवेदनके होंगे। घृणा, क्रोध, भय प्रभृति अन्य सवेदन अपनेको उतने विविध और विचित्र रूपोंमें अभिव्यक्त नहीं कर पाते, जितने विविध और विचित्र रूपोंमें प्रेम अपनी स्वरूपाभिव्यक्ति करता है।

शायद इसीलिए प्रेमके विभिन्न स्वरूपोंसे घबड़ाकर बहुत-से विचारकोंने उस प्रेमकी स्थितिसे ही इन्कार कर दिया, जो कवियों की कृतियोंमें अभिव्यक्त होता है!

प्रेम इस ग्रहमें नहीं है, ऐसी बात नहीं है।

वह है और क्या जाने कितने व्यक्तियोंके अस्तित्वको उसने अप्रत्याशित आलोक प्रदान किया है, किन्तु उसकी अल्पस्थायिता अवश्य विचारणीय है।

जो हो, प्रेमके कोमल कलित करोंके द्वारा जिस रूपमें मस्तिष्क की वह शक्ति सजग होती है, जिससे जीवन-यात्री अन्य दूरवर्त्ती

ग्रहोंसे सम्बन्ध-स्थापना कर पाते हैं, उस रूपमें अन्य संवेदनोंके द्वारा नहीं।

प्रेम सुदूरागत विचार-कम्पनोंको ग्रहण करनेकी क्षमता तो प्रदान करता ही है, साथ ही इस मर्त्यावासको एक स्वर्गिक सुषमा भी प्रदान करता है!

तुम्हारा प्रेम अमर हो!—शाश्वत हो!

किन्तु वासनाकी विष-वल्लरीसे उसे स्पर्शित न होने देना!

उन जादूगरनियोंसे बचो, जो तुम्हारे मार्गमें यत्र-तत्र तुम्हें मिलेंगी !

उनके अधरोंकी मदिरा विषसे मिश्रित है !

उनके आकर्षणको प्रेमकी संज्ञा देकर प्रेमके आलोकमय देवता का अपमान न करो !

वह आकर्षण शीघ्र ही घृणामें पर्यवसित हो जायगा !

पास्कलने इस सत्यको पहचानते हुए कहा था—La concupiscence est, au fond, une haine 'कामुकता, वास्तवमें, घृणा ही है !'

प्रेमकी ज्वाला केवल शारीरिक नहीं !—आत्मिक भी है !

वासनाके दास प्रेमकी दीप्ति नहीं जान सकते !

प्रेमियोंके लिये ब्रह्मचर्य आवश्यक है !

प्रेम किया था जीसस क्राइस्टने !

अपने प्रेमके लिये वह क्रासपर झूल गया, लेकिन उफ न की !

दुनियावालोंने उसे कितना नहीं सताया '—कितनी यातनाएँ नहीं दीं उसे !

कहा था उसने—'अवमानित, संतापित एवं संत्रस्त होकर मैं क्रॉसपर चढ़ूंगा और इस प्रकार औरोंको बतला जाऊंगा कि प्रेम किसे कहते हैं ।

तुम भी वैसे ही प्रेमी बनो !

लेकिन वैसे प्रेमी तुम तभी बन सकते हो, जब काम-वासनाके आघातोंका तुमपर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ेगा !

तुम्हारी बुद्धि सदैव स्वच्छ और ज्योतित रहेगी।

तुम्हारी स्मृति सदैव तुम्हारा साथ देगी ! 'Une memoire heureuse est un indice de la purete.' तीव्र स्मरण-शक्ति पवित्राचरिताकी सूचिका है !'

तुम्हारी इच्छा-शक्ति इस संग्रामसे फौलाद-सी परिपुष्ट हो जायगी ! कोई भी पार्थिवशक्ति उसे भग्न करनेमें शायद ही समर्थ हो सके !

तुम्हारे हृदय-शतदलका सौरभ सदैव तुम्हारे यात्रा-पथमें विकीरित होता रहेगा, क्योंकि ब्रह्मचर्यकी किरणोंका स्पर्श उसका जीवन-दाता है।

व्यभिचारियोंकी बुद्धि कभी स्वच्छ नहीं रह सकती !

काम-वासनाकी परितृप्तिसे बौद्धिक विकासकी शत्रुता है।

दार्शनिक जुबेरने ठीक लिखा है कि ज्योंही युवक वासनाकी ओर उन्मुख होने लगता है, उसकी बौद्धिक दीपशिखा डगमगाने लगती है।

यही अवस्था इच्छा-शक्ति, स्मृति प्रभृतिकी भी होती है !

तुम्हें तुम्हारे यात्रा-पथमें इनकी महती आवश्यकता है।

तुम्हें तुम्हारी रणस्थलीमें ये बहुत काम आयेंगी !

वासनाकी ओर उन्मुख होना यह सिद्ध करता है कि यौधेय रणस्थलीसे भागने ही वाला है !

'फिर ये मदभरे दिन कब मिलेंगे ! यौवन बीत जायगा ?'

बावले ! यौवन तो बीत जायगा, लेकिन यदि तुमने वासना-उन्मद होकर अपने कर्त्तव्यका पालन नहीं किया तो तुम्हारे जीवन-देवताके सिरपर जो कलङ्कका टीका लगेगा, वह अमिट हो जायगा।

ये मदभरे, मधुभरे दिन तो बीत जायंगे, किन्तु यदि तुमने मंजिलकी ओर द्रुतगतिसे चरण न बढ़ाये और रसकी इन पुत्तलिकाओंकी बलिवेदी पर अपनी शक्तियोंको निवेदित करना आरंभ कर दिया तो किसी न किसी समय तुम्हारी आंखोंके आंसू अमर हो जायँगे !

वासनालोलुप प्राणी कुछ ही वर्षोंके उपरान्त वृद्ध-सा हो जाता है !

कर्त्तव्यके पीछे क्षुद्र वासनाओंको विस्मृत करनेवाले जीवन-यात्रीका हृदय यात्राके अवसान-कालतक यौवनकी दीप्तिसे प्रोद्भासित रहता है।

क्या कहा, जीवनमे थोड़ा-सा अनुभव इसका भी रहे !

पागल कहींके ! . . फिर थोड़ा-सा अनुभव नागके फन-स्पर्शका भी रहे !——थोड़ा सा अनुभव पावक—आलिङ्गनका भी रहे !

क्या कहा, तुम किसी प्रकारका बन्धन नहीं चाहते !

अविवेकी युवक! लेकिन तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम्हारे घृणित बंधन खोलनेके ही उपाय तो मैं तुम्हें बतला रहा हूँ!

बंधनोंसे पूर्ण मुक्ति इस यात्रा-पथमें सम्भव नहीं!

शायद इस विराट विश्वमें कहीं भी नहीं!

किन्तु घृणित बन्धनोंसे मुक्त हो सकते हो।

जिन बंधनोंमें तुम्हें मधुता दिखलायी दे रही है, वे बड़े घृणित, बड़े हानिकारक हैं भोले यात्री।

कर्त्तव्यके बन्धनको प्यार करो।

कर्त्तव्यका बन्धन तुम्हें वहाँ पहुँचा देगा, जहाँ चारों ओर आलोक ही आलोक है,—जहाँके वातावरणमें देवताओंका श्वास-सौरभ व्याप्त है।

वासनाके बन्धनको जितनी जल्दी छिन्न-भिन्न कर सको, कर डालो, क्योंकि आरम्भमें कुसुम-सी कोमल दृष्टिगत होने वाली इसकी शृङ्खला पीछे वज्र-कठोर हो जाती है!

इस बन्धनको तोड़ना असंभव नहीं, कठिन अवश्य है!

लेकिन उस व्यक्तिके लिये उतना कठिन नहीं जो प्रत्येक परिस्थितिमें अपने कर्त्तव्यकी याद रखता है!—जो उसके लिये सब प्रकारके कष्टोंको सहनेके लिये बद्धपरिकर रहता है—भारीसे-भारी विपत्तिका स्वागत कर सकता है!

बावले, ये तुम्हारी परीक्षाके दिन हैं!

व्यर्थ ही इन्हें बरबाद न कर देना!

सारेके सारे विश्वको दिखला दो कि कोई भी शक्ति,—संसारका कोई भी प्रलोभन तुम्हें तुम्हारे कर्त्तव्य-पथसे डिगा नहीं सकता !

कर्त्तव्य-पालनके कण्टकित क्षेत्रमें आने वाले तुम्ही एक नहीं हो !

क्या जाने कितनोंने इस परीक्षामें उत्तीर्ण होकर अपनी शक्तियोंका और अपने प्रेमका परिचय दिया है।

उनकी याद करो और उनकी कुर्बानियोंसे शिक्षा ग्रहण करो !

जहाँ-जहाँ उनके स्वेद-कण गिरे हैं, स्थान पवित्र हो गया है !

क्या तुम अपनी अशक्ति एवं असामर्थ्यका परिचय देकर लज्जान्वित होना पसंद करोगे !



[१८]

बार-बार तुम अपने हृदयपर दोष क्यों आरोपित करते हो?

कहते हो, बुद्धि तो कर्त्तव्यकी ही ओर उत्मुख होती है,—लक्ष्य-प्राप्तिकी ओर अपनी समस्त कार्य्य-शक्तियोंको नियोजित करना चाहती है, किन्तु यह अभागा हृदय नहीं मानता! कभी किसीकी यादमें कराहने लगता है,—कभी किसीकी सौन्दर्य-सुराका आस्वादन करनेके लिये मचलने लगता है। स्वप्नों और मृगमरीचिकाओंसे मनीषाको तो विरक्ति हो गयी है किन्तु यह अज्ञानी हृदय न जाने अतीतके किस मोहको अभी तक आलिंगित किये हुए है, अमूल्य निधिकी तरह! आगेको कदम बढ़ाता तो हूं लेकिन यह पीछे छूटे हुए किसी संगीकी यादमें क्रन्दन कर उठता है।

ठीक है, तुम्हारी बात मैं मानता हूं कि तुम्हारा हृदय तुम्हारी उन्नतिका बाधक हो रहा है।

लेकिन दोष इसमें तुम्हारा है— तुम्हारे हृदयका नहीं!

वह जितना बड़ा बाधक है, उतना ही बड़ा साधक भी हो सकता है।

वह तुम्हारी शक्ति है, उसे तुम चाहे जिस ओर लगाओ!

तुमने अपनी उस शक्तिको ठीक तरहसे नियन्त्रित एवं नियो-

जित नहीं किया, इसी कारण वह आज तुम्हारे गंतव्य स्थानकी विपरीत दिशामें तुम्हारी कार्यकरी-शक्तियोंको ले जा रही है।

जिस कारमें पेट्रोल न हो, क्या वह चल सकती है ?

तुम्हारा हृदय—तुम्हारे संवेदन तुम्हारे लिए पेट्रोलके समान हैं।

यदि कार गर्त्तमें गिरनेको है तो दोष 'फ्यूहरर' का है. पेट्रोल का नहीं!

शक्तिको नियोजित करना सीखो!

उससे लाभ उठाना सीखो, अन्यथा हानि हो सकती है।

इञ्जिनके लिए जिस प्रकार वाष्प है, उसी प्रकार तुम्हारे लिए तुम्हारे संवेदन हैं!

वाष्पहीन इञ्जिनसे किसीको कोई भय नहीं होता, क्योंकि वह निश्चल होता है।

किन्तु वाष्पयुक्त इञ्जिन ड्राइवरके प्राण भी ले सकता है और उसे गंतव्य स्थान तक पहुंचा भी सकता है।

यदि ड्राइवरका शरीर आहत होता है तो दोप उसका है, वाष्पका नहीं!

जिस खड्गमें धार नहीं होती, वह निरर्थक है!

और धारवाला खड्ग रणस्थलीमें चतुर यौधेयको यदि विजयी बनाता है तो मूर्खके अंगभंगका भी कारण बनता है।

बारूदके बिना तोप क्या कर सकती है!

तुम्हारे हृदयमें जो संवेदन उत्पन्न होते हैं, उनसे घबड़ाओ मत !

उन्होंने अबतक तुम्हारा अहित किया है, क्योंकि तुम उनका उपयोग नहीं जानते थे ।

उनसे तुम अपनी गतिको सहस्रगुणित कर सकते हो !

केवल पतवारके बलपर कितनी दूर तक नौका ले जा सकते थे ! सम्वेदनोंकी यह प्रचण्ड वायु स्वतः उसे ले जायगी ! जरा पाल तो खोलो !

तुम्हारे हृदयमें यह जो कम्पन होता है – कभी-कभी यह जो हड़कम्प मचने लगता है मैं इसका प्रशंसक हूँ !

यही तो जीवन है !

यही तो यौवन है !

तुम इससे घबड़ाते क्यों हो ?

तुम पाषाण-शिला नहीं हो !

तुम निष्प्राण शव नहीं हो !

अपने सम्वेदनोंको यदि ठीक गति दी तो बहुत कुछ कर सकोगे !

अनियंत्रित विद्युत्का क्या उपयोग हो सकता है !

किन्तु नियंत्रित विद्युत्का उपयोग आज सर्वत्र दृष्टिगत होता है ।

अनियंत्रित वाष्पसे क्या हो सकता है !

किन्तु नियंत्रित वाष्पका उपयोग देखो !

ताजमहल-सी भव्य समाधिका निर्माण करके अपनेको गौरवान्वित समझने वाला शाहजहाँ यदि वाष्पके वर्तमान उपयोग को देखे तो विस्मय-विस्फारित दृगोंसे देखता ही रह जाये !

युवक ! तुम अपने हृदयकी शक्तियोंको नियंत्रित करके उनसे काम लो !

फिर देखो, किस प्रकार तुम्हारी गति आंधियोंसे होड़ लेने लगती है !

मंजिल कोई भी क्यों न हो, वहाँ तक शीघ्रातिशीघ्र पहुंचनेके लिये अन्तर्वेगकी प्रबल आवश्यकता है !

शरीर और बुद्धि दोनोंको इससे प्रचण्ड शक्ति समुपलब्ध होती है।

दुर्बल अन्तर्वेगसे आलोटित होकर सशक्त वृक्षोंको उत्पाटित कर डालता है !

मूर्ख अन्तर्वेगसे प्रणोदित होकर बड़े-बड़े विद्वानोंके छक्के छुड़ा देता है !

वक्तृत्व-कलासे निरहित व्यक्ति जब अन्तर्वेगसे आन्दोलित होकर वक्तृता आरम्भ करता है उस समय अच्छे-अच्छे वक्ता उसके सामने हतप्रभ हो जाते हैं।

अन्तर्वेगके अभावमें कोई भी व्यक्ति महान् कार्योंका सम्पादन नहीं कर सका है।

मानव-जातिके प्रतिनिधियोंका इतिवृत्त इसका साक्षी है।

अन्तर्दीपमें अन्तर्वेग स्नेहका काम करता है ! स्नेहके अभावमें दीपशिखाका निर्वापित होना अनिवार्य है।

अन्तर्वेग-विरहित प्राणीको हवाका एक नन्हा-सा झोंका भी इच्छानुकूल दिशाकी ओर ले जाता है।

उसमें प्रतिरोध करनेकी शक्तिका ऐकान्तिक अभाव हो जाता है !

वह कार्य नहीं करता, कार्य स्वतः होते जाते हैं !

वह परतन्त्रताके लौहपाशमें बन्दी बनकर घृणित जीवनका भार वहन करता रहता है !

अन्तर्वेगने ही सिकन्दरको यूनानके साधारण मनुष्योंसे ऊपर उठाया था। अन्यथा क्या वहांके व्यक्तियोंमें सिकन्दरको-सी शारीरिक और बौद्धिक-शक्ति नहीं थी ?

माना, उसकी कार्यपद्धति अविवेकितापूर्ण थी और उसका लक्ष्य भी! किन्तु उसकी अन्तर्वासना तो देखो कितनी सजग थी!

अफलातूनको इतना बड़ा दार्शनिक बनानेका श्रेय केवल उसके शक्तिशाली मस्तिष्कको ही नहीं था। सत्यान्वेषणकी दुर्दान्त-वासना उसके मस्तिष्कको सदैव नूतन शक्ति प्रदान करती रहती थी !

भारवि, भवभूति, वेदव्यास, वाल्मीकि प्रभृति अन्तर्वेगसे रिक्त नहीं थे !

मिकेल आंज और नेपोलियनको साधारण स्तरसे ऊपर उठाकर मानवी-इतिहासकी चीज बनानेवाला उनका अन्तर्वेग ही था !

अपने आदर्शको सदैव सामने रखो !

और फिर दुर्दान्त वेगसे उसकी ओर बढ़े चलो !

क्षुद्र मानवी स्तरसे ऊपर उठनेका यही मार्ग है !

तुम शक्तियोंके भण्डार हो! किन्तु अन्तर्वेगके अभावमें तुम्हारी शक्तियां सजग नहीं हो सकेंगी।

तुम विश्व-सरसीके शतदल हो और अन्तर्वेग अंशुमालीका किरण-निपात!

उसके अभावमें तुम्हारा सौरभ समीरणके द्वारा चारों ओर प्रसृत नहीं हो सकता।

जो शक्तियोंसे विरहित प्रतीत होते हैं, वे वास्तवमें शक्तियोंसे विरहित हों ऐसी बात नहीं है!

जिसका कोष अन्धकारमें रत्न-हीन प्रतीत हो, उसे निरर्थक समझकर उसकी अवहेलना करना मूर्खता है।

अन्तर्वेग उन व्यक्तियोंसे भी महान् कार्य सम्पादित करनेमें समर्थ हुआ है जो आरंभमें सर्वथा शक्ति-विरहित प्रतीत होते थे।

प्रचण्ड अन्तर्वेगने उनकी दबी हुई शक्तियोंको जागृत किया और उनमें नूतन कर्मोन्मादना सन्निविष्ट की।

और उन्हें इतिहासका मानव बनाया!

डार्विनको कौन नहीं जानता!

उसके विकासवादने मानवी विचार-धाराको अत्यधिक प्रभावित किया है!

किन्तु वह डार्विन स्मरणशक्तिके अभावसे पीड़ित रहता था! कार्यकरी-शक्ति उसमें नहीं थी। साधारण-से श्रमसे ही वह थकित और अशक्त हो जाता था। दिनमें एक घंटा भी अच्छी तरह परिश्रम करनेमें वह असमर्थ था। कल्पना-शक्तिकी जो

प्रखरता महान कार्योंके सम्पादनके लिये आवश्यक है, उसका उसमें ऐकान्तिक अभाव था !

फिर भी वह मानव-जातिके वैज्ञानिक इतिवृत्तिका ज्योतिर्मय महापुरुष बन सका !

इसी प्रचण्ड अन्तर्वेगके कारण !

कितने व्यक्तियोंका नाम लूँ मैं !

डिमोस्थनीज़को ही देखो ! आज तक उसकी वक्तृताएं आदरके साथ यूनानी साहित्यके अध्येताओंके द्वारा पढ़ी जाती हैं।

किन्तु उसका न तो स्वर आरंभमें ठीक था, न व्यक्तित्वमें ही कोई आकर्षण था !

प्रचण्ड अन्तर्वेगने उसमें लक्ष्य-प्राप्तिकी शक्तियोंको सहस्र-गुणित वेग प्रदान किया और फलस्वरूप वह अपने समयका सर्वश्रेष्ठ वक्ता हुआ।

उसकी वक्तृता सुननेके लिये यूनानके नर नारी ललचते रहते थे !

अकेला, धनहीन श्रद्धानंद !

और, उसने बीसवीं शताब्दीके कलुषित चाकचिक्यसे विमोहित भारतमें गुरुकुल कांगड़ीकी संस्थापना कर दी।

भारतकी प्राचीन शिक्षापद्धतिके प्रति उसके प्राण-प्रदेशमें जो अनुराग था—प्रचण्ड प्रणय था, उसने उस धनहीन व्यक्तिको लोगोंसे धन दिलवाया !

हिन्दू विश्वविद्यालयको ही देखो !

मालवीयजीने करोड़ोंकी सम्पत्ति एकत्र करनेमें जो सफलता प्राप्त की है, उसका श्रेय उनके उस दुर्दान्त अन्तर्वेगको ही है जो उन्हें निशि-वासर हिन्दुओंके विश्वविद्यालयकी संस्थापनाके स्वप्न दिखलाता रहता था।

विजयलक्ष्मी पण्डितको देखो। अमेरिकामें भारतके प्रश्नको लेकर उसने तहलका मचा दिया! उसके मार्गमें अवरोध कम नहीं थे, किन्तु फिर भी भारतके हित-समर्थनके लिये उसने वहां जो किया, वह भारतीय इतिहासमें अमर रहेगा!

भारतको पराधीनताके पाशसे मुक्त करके स्वतन्त्रताकी कनक किरणोंसे शृङ्गारित करनेके लिये जो दुर्दान्त अन्तर्वेग उनके प्राण-प्रदेशमें आस्फालन करता रहता है, उसीने उनमें इतनी तूफानी शक्ति सन्निविष्ट की है।

साहित्यिक क्षेत्रमें इस प्रकारके उदाहरणोंकी कमी नहीं!

एमिलजोला, बालजाक प्रभृतिके जीवन वृत्त पढ़ो।

अन्तर्वेग आखिर है क्या?

इच्छा जब अत्यधिक उग्र और चिरस्थायिनी हो जाती है तब वह अन्तर्वेगके रूपमें परिणत हो जाती है!

निरन्तर तब मानस-प्रदेशमें एक ज्वाला-सी जलती रहती है!

वह ज्वाला कष्टकर नहीं होती!—प्राणप्रद होती है!

बौद्धिक क्षेत्रमें सदैव विद्यमान रहनेवाले विचारका जो स्थान है वही स्थान संवेदनात्मक क्षेत्रमें इसका है!

अन्तर्वेगको सदैव विचारकी घृताहुति प्राप्त होती रहती है, फलतः उसकी ज्वाला विवर्धित होती रहती है !

प्रत्येक विचार कार्यरूपमें किसी न किसी अंशमें परिणत होता है !

और प्रत्येक कार्य किसी न किसी अंशमें संवेदन जागृत करता है ।

फलतः अन्तर्वेगके साथ ही साथ उससे सन्बन्धित विचार भी परिपुष्ट होते जाते हैं ।

लेकिन जिस प्रकार अन्तर्वेग मंजिलकी ओर चलनेकी दुर्दमनीय शक्ति प्रदान करते हैं, उसी प्रकार मंजिलसे दूर जानेकी शक्ति भी ।

समस्त अन्तर्वेग हितकर नहीं ।

अन्तर्वेग-विरहित व्यक्ति पर्वत-शिखर तक नहीं पहुँच सकता है तो शान्तिपूर्वक तलहटीपर तो बैठा-बैठा औरोंकी प्रगति तो देख सकता है किन्तु उग्र अन्तर्वेगसे प्रेरित व्यक्तिके गर्त-पतन की प्रबल सम्भावना रहती है ।

बुरे अन्तर्वेगने यदि तुम्हारे हृदयमें जड़ पकड़ ली हो तो उसे शीघ्रातिशीघ्र नष्ट करनेका प्रयास करो ।

यह उतना कठिन नहीं, जितना तुम समझ रहे हो !

इसमें कोई संदेह नहीं कि इसके पहले भी इसके लिये प्रयास किया है और तुम असफल हुए हो !

किन्तु तुम्हारी पद्धति गलत थी !

अनल-प्रशमनका क्या तरीका है ?

यही न कि उसमें नई लकड़ियां न डालो।

वह स्वतः निर्वापित हो जायगी !

तुम्हारे अन्तर्वेगरूपी अनलमें लकड़ियोंका काम करने वाले तुम्हारे विचार और कार्य हैं !

बुरे अन्तर्वेगसे सम्बन्धित कोई भी विचार अपने मस्तिष्कमें पोषित न करो !

कोई भी ऐसा कार्य न करो जिसका किसी अंशमें भी तुम्हारे हानिकर अन्तर्वेगसे सम्बन्ध हो !

विचारों और कार्योंसे ही अन्तर्वेगको शक्ति प्राप्त होती रहती है !

उसके सशक्त होनेसे उससे सम्बद्ध विचार और कार्य सशक्त होते हैं और फिर इस प्रकार अन्तर्वेगकी शक्ति विवर्धित होती है !

ज्योंही तुम्हारे मस्तिष्कमें बुरे अन्तर्वेगसे सम्बन्धित विचार आयें, तुम अन्य विचारोंका आह्वान करो ! कोई ओजस्विनी कविता गुनगुनाओ ! जेबमें गीता रखा करो ! निकालकर कोई श्लोक पढ़ना शुरू कर दो !

सीधा आक्रमण करोगे तो विजय नहीं प्राप्त कर सकोगे।

सबसे बड़ी बात है, कभी हिम्मत न हारना !

दृढ़ निश्चय कर लो कि अपनी इच्छासे कभी उस विचारको प्रश्रय न दोगे जो तुम्हारे अहितकर अन्तर्वेगका सहायक है !

जब कोई अहितकर अन्तर्वेग तुम्हें आक्रान्त करे तो इस प्रकारके कार्य आरम्भ कर दो, जो उस अन्तर्वेगसे आक्रान्त होनेकी अवस्थामें नहीं किये जा सकते !

विचारों पर तुम्हारा अधिकार नहीं है, किन्तु कार्यों पर तो है !

युवक ! घवड़ाओ नहीं !

कहीं यह न समझ लेना कि तुम्हारा सारा यात्रा-पथ अन्त-संघर्षसे पूर्ण कर डालूंगा !

मैं तुम्हारी शक्तियोंके विकासका पथ उन्मुक्त कर रहा हूँ !

आलोककी वह निर्झरिणी जो कई कारणोंसे अब तक अवरुद्ध थी, अवरोधहीन होकर उद्दाम-गतिसे आगेको बढ़े, मैं इसीका प्रयास कर रहा हूं !

इसीलिये मैं तुम्हें इतनी-इतनी बातें बतला रहा हूं !

युवक ! —तूफान और अंधड़ोंसे जूझनेवाले युवक !!



[२०]

तुम्हारे अन्दर जो बुराइयाँ आ गयी हैं, उन्हें अच्छी तरह पहचान लो !

उस पात्रमें जल भरनेसे कोई लाभ नहीं, जिसमें छिद्र हो चुके हैं !

उन छिद्रोंको बन्द करनेका उपाय करनेके पहले यह जान लेना परमावश्यक है कि आखिर वे छिद्र कहा-कहां हैं।

जो उनका स्थान नहीं जानता, वह उन्हें बन्द क्या कर सकेगा !

शक्तिकी धारा तुम्हारी बुराइयोंके छिद्रसे निकलती चली आ रही है !

सावधान !

तुम्हारे उद्यानमें सर्वत्र विषाक्त पौधोंकी वृद्धि हो रही है !

पाटल एवं चम्पक-कुसुमोंके पौधे रोपनेसे क्या होगा !

वे पनप नहीं सकेंगे !

तुम्हारे प्रयास विपुल व्यर्थतामें पर्यवसित होंगे !

विषाक्त पौधोंको उखाड़ कर उद्यानसे दूर फेंको !

सुरभित कुसुमों एवं मृदुल-मधुर फलोंके उत्पादनकी शक्ति प्रचुर मात्रामें तुम्हारे उद्यानमें विद्यमान है ! लेकिन ये विषाक्त पौधे उन्हें विकसित भी तो होने दें !

दोष न उद्यानका है, न विषाक्त पौधों का !

दोष तुम्हारा है।

विषाक्त पौधे अपना हानिकारक काम करेंगे ही !

तुम्हारी असावधानीसे उनकी वृद्धि हुई है !

आरम्भमें ही यदि तुम उनकी ओरसे सावधान रहते तो आज तुम्हारा उद्यान राशि-राशि सौरभित पुष्पोंसे शृंगारित रहता।

आरम्भमें उन्हें नष्ट करनेमें तुम्हें अधिक कष्ट भी नहीं करना पड़ता !

लेकिन अब भी कुछ बिगड़ा नहीं है !

उनकी जड़ोंको पहचानो !

ऊपर-ऊपरसे पहचाननेसे कुछ न होगा !

उनकी शाखाओं और पत्रोंको तोड़कर फेकनेसे कोई लाभ न होगा, तुम्हें उन्हें आमूल उत्पाटित करना पड़ेगा !

अन्यथा एक दिन वे तुम्हारी शक्तियोंसे बाहर हो जायेंगे !

अभी तुम्हारी यात्राका आरम्भ है ! उनकी शक्ति इतनी नहीं हो पायी है कि वे तुम्हारे प्रयासोंको व्यर्थ कर दें !

मेरा इशारा किस तरफ है, तुम समझ रहे होगे !

इसीलिये कहता हूं, आत्म-निरीक्षणकी जब-तब महती आवश्यकता है !—सूक्ष्म आत्म-निरीक्षण की !

एक भी विषाक्त पौधा अपने आत्मोद्यानमें न उत्पन्न होने दो।

आत्म-निरीक्षण एवं आत्म-परीक्षणसे ही तुम अपनी स्थिति समझ सकोगे।

भला वह अपने वेश्मका क्या खाक शृङ्गार कर सकेगा जो वहाँकी असुन्दरतासे परिचित नहीं।

एक वारके आत्म-निरीक्षणसे काम नहीं चलने का!

जब-जब जीवन-यात्रा-पथमें चलते-चलते तुम परिश्रांत हो जाओ और साराका सारा शरीर स्वेद-सिक्त हो जाये, किसी विटपीकी शीतल छायामें बैठकर आत्म-निरीक्षण करो और अच्छी तरहसे देखो कि कहीं कोई ऐसी आदत तो नहीं पड़ती जा रही है जो अहितकर है!

कृषक अपने खेतमें बीज डालकर सदाके लिये निश्चिंत नहीं हो जाता!

वह जब-तब उसका निरीक्षण करता रहता है, ताकि हानिकारक पौधे यहाँ उत्पन्न होकर उसकी खेती बरबाद न कर डालें!

यदि वह एक बार बीज डालकर निश्चिंत हो जाय और अपने खेतमें जाकर हानिकारक पौधोंको उत्पाटित न करे तो क्या परिणाम होगा?

उसकी खेती कदापि अच्छी नहीं हो सकती!

क्या तुम अपनी शक्तियोंके क्षेत्रको एक कृषकके क्षेत्र जितना भी महत्व नहीं देते।

आत्मानं विद्धि।... ...

एक सारथी अपने रथकी किसी भी त्रुटिके प्रति असावधान नहीं रहता!

चतुर सारथी अपने रथको अच्छी तरह समझता है!

एक वादक अपनी वीणामें किसी प्रकारकी त्रुटि देखकर भी क्या निश्चित रह सकता है!

विश्वकी इस विराट महफिलमें युवक! तुम्हें भी जीवनकी यह वीणा बजानी है।

ऐसी वीणा बजाओ कि नंदन-वनका समीरण मार्ग भूलकर मर्त्यलोकको ही अपना आवास बना ले!

ऐसी वीणा बजाओ कि संसारका सभी अन्याय, सारा अत्याचार उसकी ध्वनिके स्पर्शसे नष्ट हो जाय।

अपनी वीणासे ऐसी झंकार निकालो कि विप्लवका ज्वालामुखी पूँजीवाद और साम्राज्यवाद पर फूट पड़े!

तुम्हारा वीणा-वादन सुननेके लिये कोटि-कोटि श्रवण ललच रहे हैं!

और तुम बावले युवक! अपनी वीणामें असावधानीके कारण आयी हुई त्रुटियोंकी ओर ध्यान ही नहीं दे रहे!



[२१]

अपनी त्रुटियोंसे अभिज्ञ होकर उसके मूलोत्पाटनका पूर्ण प्रयास करो !

अन्यथा जो जंजीरें अभी फूलोंसे निर्मित दीख रही हैं वे कुलिश कठोर हो जायेंगी !

अपना आदर्श कभी न विस्मृत करो !

जब-जब प्रलोभनोंका तुमपर आक्रमण होगा, तब-तब उसके द्वारा तुम्हें शक्ति प्राप्त होगी !

जब-जब तुम्हारे हृदय-प्रान्तमें कुहूनिशाका अन्धकार परिव्याप्त होकर तुम्हें दिशिहारा करनेका पूर्ण प्रयास करे तब-तब उसकी ज्योति तुम्हें मार्ग दिखलायेगी !

आदर्शकी ज्योतिने क्या जाने कितने जीवन-यात्रियोंको गर्तमें गिरकर सदाके लिये खो जानेसे बचाया है !

आदर्श शक्तिका सुमहान् उत्स है !

डगमगाते चरणोंको उससे अभिनवबल प्राप्त होता है !

तुम जानते ही हो, तुम्हारा आदर्श कितना महान् है !

तुम्हारे समस्त क्रिया-कलापका वह केन्द्र हो !

तुम्हारा प्रत्येक हृत्कम्पन उसकी ज्योतिसे प्रोद्भासित होता रहे !

अपना दृष्टि-कोण सदैव साधारण स्तरसे काफी ऊंचा रखो !

दुनियाँका स्वरूप तुम्हारे दृष्टिकोणपर ही आधारित है !

Du ist was du fuhlst !......

मनुष्यकी महत्ताका एक प्रधान कारण उसके दृष्टिकोणकी महत्ता है !

अधिकांश व्यक्तियोंका दृष्टिकोण सर्वथा संकुचित होता है—हास्यास्पद !

नगर, जाति या वर्णकी परिधिसे बाहर उनका दृष्टिकोण जा ही नहीं पाता !

अधिक हुआ तो देश तक उनका क्षितिज विस्तृत हो गया !

लेकिन, युवक ! तुम गिरिके सर्वोच्च शिखरसे दुनियाँको देखनेका अभ्यास करो ।

चरण तुम्हारे कर्दममयी भूपर हैं तो क्या हुआ, दृगोंको सदैव तारकित व्योमकी ओर रखो ।

कभी-कभी कल्पना करो कि तुम किसी दूसरे ग्रहपर बैठे हुए हो और अपने साथियोंके साथ हास्यालाप करते हुए किसी सुन्दर सरिताके रम्यपुलिनपर आ पहुँचे हो ! वहाँसे इस पृथ्वीको, जो आज तुम्हारा परीक्षास्थल बना हुआ है, देखो !

उड़कर लोक-लोकांतरका भ्रमण करो ।

कल्पना-विहगके पंखोंको आलस्यके द्वारा शिथिल एवं अशक्त न बनाओ !

अनंत आकाशमें स्वच्छंद इसके पंखोपर बैठकर विचरण करते हुए अपने वर्त्तमान सौरमण्डलको देखो ! देखो कि किस प्रकार

एक सूर्यके चारों ओर अपनी-अपनी कक्षामें बुध, शुक्र, मंगल, शनि, बृहस्पति प्रभृति ग्रह चक्कर लगा रहे हैं !

मुसकुराते हुए इस सौरमण्डलमें अवतरित होओ !

कल्पना करो, तुम्हारे अन्य ग्रहके साथी तुमसे बिछुड़ते हुए व्यथित होकर अश्रु-आविल चक्षुओंसे तुम्हारी ओर देख रहे हैं !

तुम धीरे-धीरे इस मर्त्यलोकके वातावरणमें प्रवेश करो !

फिर देखो यहां किस प्रकार लोग व्यापार राजनीति प्रभृति कार्योंमे विचित्र रूपसे व्यस्त हैं ! किस प्रकार मरणधर्मा पार्थिव जीवनको ही समस्त चिन्ताओंका केन्द्र बनाया जा रहा है ! मूर्खतापूर्ण स्वार्थोंकी रक्षाके लिये किस प्रकार नित्य नूतन घृणामय संघर्षोंका बीजवपन हो रहा है !

देखो और फिर सोचो, तुम्हारा कर्त्तव्य क्या है !

ऊँचा उठकर चारों तरफ देखना पाप नहीं है !

जिनमें ऊँचा उड़नेकी शक्तिका अभाव होता है, वे ही इसे गुनाह बतलाते हैं !

बुद्धि-नियंत्रित अपनी कल्पनाके विहगको इस विश्वके दूरतम लोकोंतक जाने दो !

राष्ट्रों और जातियोंको वहासे देखो !

मानव-जातिके बदलते हुए इतिहासको वहासे देखो !

मानवी शताब्दियोंको वहासे देखो !

---

[२२]

विचारोंकी शक्ति साधारण नहीं होती !

विचारोंकी रहस्यात्मक शक्तियोंसे मानव-जातिका अभी परिचित होना आरम्भ ही हो रहा है !

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः !

विचारोंका प्रभाव विचारकसे सहस्रों योजनकी दूरीपर अवस्थित व्यक्तिपर पड़ता है !

बिना किसी दृश्य माध्यमके विचारोंका दूरप्रेषण-कार्य होता है !

टेलीपेथीके अनुसन्धान विचारोंकी गुप्त शक्तियोंपर आलोक निक्षिप्त करते हैं !

विचारकके मस्तिष्कतक ही विचार सीमित नहीं रहते !

ईथरमें विचारोंके उत्पन्न होनेसे जो प्रकम्पन उत्पन्न होता है, वह इस ग्रहके अन्तिम छोरको तो छू ही लेता है ; शायद इस द्वीप-विश्वके भी अन्तिम छोरको छूता हो !

कोई भी विचार नष्ट नहीं होता !

विश्वके इस विराट रेकर्डपर समस्त विचार अङ्कित हो रहे हैं !

निकटवर्त्ती वातावरण विचारोंसे अधिक प्रभावित रहता है !

एक दार्शनिकके वातावरणमें और एक धनगृध्र व्यापारीके वातावरणमें जो महान् अन्तर रहता है, उसका कारण उनकी विचार-तरंगोंका वैभिन्न्य ही है।

ऋषिके सरितातटवर्ती उटजमें जाओ; तुम्हारे मन-प्राण शान्त और पवित्र प्रतीत होने लगेंगे!

सदैव अधिकाधिक मुद्राओंके सञ्चयनकी चिन्तामें व्यतिव्यस्त रहनेवाले धनपतिके प्रासादमें जाओ, तुम्हारे मन-प्राण भी अशान्तिकी अनुभूति करने लगेंगे।

व्यक्तिके विचारोंसे उसका पारिपार्श्विक वातावरण निर्मित होता रहता है!

सुना जाता है, पहले ऐसे ऋषि महर्षि होते थे, जिनके आश्रमोंमें सिंह, व्याघ्र प्रभृति हिंसक पशु अपना हिंसा-भाव भूलकर मृगादिक जन्तुओंके साथ विचरण किया करते थे!

ऐसा होना सर्वथा संभव है!

वहाँका वातावरण ऋषियोंकी पवित्र अहिंसात्मक सर्वभूत-हितरत विचारधारासे इस प्रकारका हो जाता था कि हिंसकोंकी हिंसा-वृत्ति स्वतः नष्ट हो जाती थी!

तुम्हारे जैसे विचार होंगे, वैसा ही तुम्हारा पारिपार्श्विक वातावरण होगा!

मुँहसे जो बोलते हो, वह जिस प्रकार चारों ओरके वातावरणमें एक अदृश्य प्रकम्पन उत्पन्न करता है, उसी प्रकार तुम्हारे विचार भी!

सावधान, तुम्हारे विचार केवल तुम तक ही सीमित नहीं !

यदि तुम यह सोचकर कि तुम्हारे विचारोंको कौन देखता है, दूषित विचारोंको प्रश्रय देते हो, तो यह तुम्हारी मूर्खता है।

विचारोंके ही कारण व्यक्ति महान् होता है और विचारोंके ही कारण क्षुद्र।

जिस व्यक्तिके मस्तिष्कमें जितने ही उच्च कोटिके विचारोंका संकलन है, वह उतना ही उच्च कोटिका व्यक्ति है !

एक व्यापारी अपनी तिजोरीमें क्या गन्दी और निकम्मी चीजें रखना पसन्द करेगा ?

किन्तु अपने मस्तिष्ककी तिजोरीमें वह कितनी गन्दी चीजें एकत्रित करता जाता है, इसपर तुमने कभी ध्यान दिया है !

तिजोरीमें वह केवल स्वर्ण, रत्न प्रभृतिका ही संकलन करनेकी आप्राण चेष्टाएं करता है।

किन्तु मस्तिष्कमें उच्चकोटिके विचारोंको एकत्र करनेके लिये वह कुछ भी श्रम नहीं करता।

अविवेकिता, नारकीय चिन्ता, ईर्ष्या, मत्सर, हिंसा प्रभृति से वह उसे समाकीर्ण करके भी सोचता है कि मैं धनी हूं।

वह धनी नहीं, पागल है—मूर्ख है।

लोहेकी तिजोरीसे अधिक महत्वपूर्ण तिजोरी मस्तिष्ककी है, कौन अविवेकी इन्कार करेगा इससे !

उस मस्तिष्ककी तिजोरीमें उसने जो-जो चीजें एकत्रित कर रखी हैं, उनकी उपमा महादरिद्रकी कौड़ियोंसे ही दी जा सकती है !

धनी वह है, जिसके मस्तिष्कमें उच्च कोटिके विचारोंके रत्न माणिक्य, हीरक एकत्रित हैं।

तुम्हारा साराका सारा जीवन इन्हींसे सञ्चालित, निर्मित होता रहता है।

तुम्हारे जीवन-विटपीका आलवाल तुम्हारे विचारोंमें है!

---

(२३)

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारी क्रिया सुधरे तो अपने विचारोंको सुधारो !

विचारोंसे ही कर्मकी उत्पत्ति होती है।

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि तुम्हारे मस्तिष्कमें उत्पन्न होनेवाला प्रत्येक विचार कार्यरूपमें परिणत होनेकी ओर उन्मुख होता है !

प्रत्येक विचार उस कार्यकी ओर उन्मुख होता है, जिसका वह प्रतिरूपक होता है !

अतः जिस प्रकारके कार्य तुम्हारे अभीष्ट हों, उनके अनुरूप विचारोंका पोषण करो और जिस प्रकारके कार्य तुम्हें अभीष्ट न हों, उनके अनुरूप विचारोंका प्रत्यावर्त्तन करो।

विचार कार्यरूपमें स्वतः परिणत होते हैं, इस सम्बन्धमें मैं तुम्हें पर्याप्त प्रमाण दे सकता हूं।

मनोविज्ञानवेत्ताओंने इस सम्बन्धमें काफी गवेषणाएँ की हैं और वे इसी निष्कर्षपर पहुँचे हैं।

प्रतिभाशाली व्यक्तियोंको अभी छोड़ दो !

चिन्तनशील दार्शनिकोंको अभी रहने दो !

उनकी क्रियाओंका अध्ययन करके मनोविज्ञानके अविजानित निगूढ़ नियमोंका परिज्ञान बहुत कठिन होगा, क्योंकि वे सर्वथा संकुलीकृत होती हैं !

सरलातिसरल बौद्धिक क्रियाओंका अध्ययन करनेसे जो मनोवैज्ञानिक निष्कर्ष निकलें, उनके द्वारा तुम कठिनातिकठिन बौद्धिक क्रियाओंके रहस्यसे परिचित हो सकते हो।

अपस्मारमें चेतना निम्नतम स्तरमें पहुँच जाती है ! अतः अपस्मारके रोगियोंके विचारोंके परिणामका अध्ययन करनेसे सत्यके समीप जल्दी पहुँचा जा सकता है।

इस रोगमें इच्छा-शक्ति, स्मृति, इन्द्रियानुभूति प्रभृतिका दयनीय ह्रास हो जाता है। अतः रोगीके मस्तिष्क तक कोई विचार पहुंचाया जाय तो उसे कार्यरूपमें परिणत होनेमें कोई प्रतिरोध नहीं प्राप्त होगा।

उसके सामने यदि कोई वाक्य कहा जाय तो वह स्मृति-विरहित होनेके कारण उसका अर्थ नहीं समझ सकेगा, किन्तु श्रवणेन्द्रियकी अवस्थितिके कारण उसमें इन्द्रियानुभूति होती है और वह तुरंत उसके होठोंमें प्रकम्प उत्पन्न करती है तथा कहे गये वाक्यकी या पूछे गये प्रश्नकी वह पुनरावृत्ति कर देता है।

श्रवणेन्द्रियकी तरह ही नेत्रेन्द्रियके अनुभव भी कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं। रोगीके सामने यदि कोई किसी हाथको हिलाता है तो रोगी भी अपने हाथको हिलाने लगता है।

इसका कारण यह है कि उसके इन्द्रियवेदनोंको पूर्व स्मृति या इच्छाशक्ति प्रभृतिका अवरोध नहीं प्राप्त होता है, फलतः सर्वथा अशक्त होते हुए भी वह कार्यरूपमें परिणत हो जाता है।

हिस्टीरियाके रोगीकी चेतना अपस्मारके रोगीसे कुछ ही अधिक सशक्त होती है। अपस्मारके रोगीकी तरह वह केवल सुनता, देखता और स्पर्श मात्र ही नहीं करता, अपितु समझता भी है!

वाणी या इशारेके द्वारा उसकी चेतनामें विचार तक उत्पन्न किया जाता है। और क्योंकि मानसिक संश्लेषणकी शक्ति उसमें नितान्त दुर्बल होती है, उसके समस्त विचार कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं।

'वह देखो, तुम्हारी प्रेयसी वहाँ खड़ी है।' उससे कहा जाता है।

उसके मस्तिष्कमें प्रेयसीकी स्मृति सजग हो उठती है। जिस स्थानकी ओर इंगित किया जाता है, वहाँ उसे प्रेयसी दिखलायी देने लगती है। वह उठ खड़ा होता है और उसके आलिङ्गनको भुजाएँ पसार देता है।

'वह चली गयी!' उससे फिर कहा जाता है!

वह निराश होकर गिर गड़ता है।

कहनेका तात्पर्य, कैसा भी विचार क्यों न हो, उसकी चेतनामें जागृत किये जानेसे शीघ्र ही कार्यरूपमें परिणत हो जाता है।

'तुम नृपति हो इस देशके!' इस प्रकारके रोगीसे कहा जाता है!

और, यह विचार उससे नृपतिके-से आचरण कराने लगता है।

'तुम्हारी अवस्था दस वर्षकी है!' युवतीसे कहा जाता है।

और वह दस वर्षकी लड़की-से आचरण करने लगती है!

इच्छाशक्ति एवं अन्य प्रतिरोधात्मक विचारोंके अभावके ही कारण ऐसा होता है!

इस प्रकारके रोगियोंकी चेतनामें जो भी विचार प्रविष्ट होता है, उसकी उत्पत्ति कहीं भी क्यों न हो, अपनी शक्तिके अनुसार कार्यरूपमें परिणत होनेको वाध्य है।

वहुत-से रोगियोंके मस्तिष्कमें जो विचार भी उत्पन्न होता है, उसे वे कह देते हैं, भले ही उसमें सत्यके लघुतम अंशका भी अभाव क्यों न हो।

उसके मनमें आया कि वह मकानसे वाहर चला जाय! वस, कपड़े वदले विना ही और यह देखे विना ही कि मकानके वाहर जाना अभी ठीक होगा या नहीं, वह चला जाता है!

Degeneres et desequilibres, Automation, Le sommeil et les Reves, Le gouvernment de soi-meme प्रभृति पुस्तकोंमें इस प्रकारके काफी उदाहरण मिलेंगे।

एक फ्रेंच रमणीको यह रोग हो गया था। इसका आक्रमण जब जोरोंसे होता था, तव वह वे ही वाक्य वोलती थी, जिन्हें वह विल्कुल वोलना नहीं चाहती थी और वे ही कृत्य उसके द्वारा होते थे, जिन्हें वह विल्कुल नहीं करना चाहती थी। अश्लील

और अभद्र शब्द उसके मुखसे वहिर्गत न हों, यह भीति जब होती थी तब बलपूर्वक उसके मुखसे अश्लील शब्द उसकी इच्छाके विरुद्ध निकलने लगते थे। तिमिराकीर्ण यामिनीमें दीपक लिये हुए वह अपने हर्म्य एक कक्षमें खड़ी थी, अचानक उसे यह भय होने लगा कि वहीं दीपक निर्वापित न हो जाय !

दीपकके निर्वापित होनेका विचार उसके मस्तिष्कमें उत्पन्न हुआ ही था कि उसके मुँहसे जोरोंकी फूँक निकली और दीप निर्वापित हो गया !

जबतक दूसरे विचार उस विचार को नष्ट नहीं कर डालते हैं या उसका स्थान नहीं ग्रहण कर लेते हैं तब तक उस विचार की कार्य रूपमें परिणत होनेकी शक्ति क्रियाशील रहती है।

स्नायविक दौर्वल्यसे पीड़ित व्यक्तियोंमें भी विचार कार्य रूपमें शीघ्र परिणत हो जाते हैं क्योंकि उनकी इच्छा-शक्ति अत्यन्त दुर्बल होती है। इस प्रकार की एक रमणीने ऐसी माताकी कहानी पढ़ी, जो अपने बच्चोंकी हत्या करती थी। उसके मस्तिष्कमें भी अपने बच्चोंकी हत्याका विचार उत्पन्न हुआ, जोकि सर्वथा स्वाभाविक था ! इस विचारके उत्पन्न होते ही वह सिहर उठी ! किन्तु इस विचारकी शक्ति इच्छा-शक्तिकी अपेक्षा अधिक सशक्त होनेके कारण शीघ्र ही उसके हाथोंमें चाकू आ गया। इच्छा-शक्ति का प्रभाव जब कुछ प्रबल हुआ तो चाकू हाथोंसे गिर पड़ा, किन्तु विचार-शक्तिका विवर्धित प्रभाव फिर उसे चाकू उठानेको

विवश करने लगा और उन दोनों विरोधी विचारोंका संघर्ष-स्थल-सी बन गयी वह।

'Les obsessions et la Psychasthenie' में इस प्रकार के पर्याप्त उदाहरण हैं।

एमियने अपनी पुस्तकमें एक आदमीका उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसने साइकिल चलाना इसीलिये छोड़ दिया कि जब-जब मार्गमें कोई घोड़ागाड़ी दिखलायी देती थी, तो उसके मनमें घोड़ेके सामने आ जानेका विचार उत्पन्न होने लगता था! और जब-जब ऐसा विचार उत्पन्न हुआ, तब-तब वह घोड़ेके सामने आ भी गया।

बहुत-से इस प्रकारके व्यक्ति रोगोंके सम्बन्धमें सोचते-सोचते वास्तवमें उन रोगोंसे आक्रान्त हो जाते हैं।

एक विद्यार्थीने चिकित्सा-शास्त्रका अध्ययन इसी कारण छोड़ दिया! अध्यापक जिन-जिन रोगोंके सम्बन्धमें पढ़ाया करते थे, वे उसे हो जाते थे!—उसके स्नायविक दौर्बल्यके कारण।

एक व्यक्तिको हैजाका भय हो गया। निरन्तर यही विचार उसके मस्तिष्कमें उत्पन्न होने लगा कि उसे हैजा हो रहा है! परिणामस्वरूप उसे हो भी गया।

राजयक्ष्माका रोग अनेकानेक रोगियोंको इस प्रकार हुआ है।

जुकामका विचार जब भयके द्वारा सशक्त हो जाता है तो वाह्य कारणोंके अभावमें भी अक्सर यह रोग हो जाया करता है।

एक व्यक्तिको यह विश्वास दिला दिया गया कि उसकी भुजा में हिलनेकी शक्तिका ऐकान्तिक अभाव हो जायगा! इस विचार ने उसकी भुजाका स्पंदन वास्तवमें बंद कर दिया। उसके उपरान्त प्रयोगकर्त्ताओंने उसे यह बतलाया कि विद्युतके द्वारा वह स्वस्थ की जा सकती है। उसे विश्वास दिलाया गया कि विद्युत्तरंगका प्रवेश उसकी भुजामें किया जा रहा है यद्यपि ऐसा किया नहीं जा रहा था! लेकिन वह अपनी भुजा हिलाने लगा और चीखने भी लगा, जैसे वास्तवमें विद्युत्तरंगका प्रवेश किया गया हो।

इस विषयके सुयोग्य विद्वान प्रोफेसर दूयुसवाने अपने ग्रन्थोंमें इस प्रकारके व्यक्तियों एवं उनके रोगों पर पर्याप्त प्रकाश डालते हुए यह बतलाया है कि विचारोंके कारण अनेकानेक रोगोंकी समुत्पत्ति होती है! वे लिखते हैं Aussitot que l' homme se croit malade, il l'est ; il ne l'est pas seulement, en idee mais physiquement Le neviose est sur la voie de la guerison, aussitot qu'il a la conviction qu'il va guerir ; il est gueri, le jour ou il se croit gueri.

अर्थात् ज्योंही व्यक्तिको यह विश्वास हो जाता है कि वह रोगी है, वह रोगी हो जाता है। केवल विचार मात्रमें नहीं बल्कि वास्तवमें उसे वह रोग हो जाता है। और ज्योंही उसे उस रोग से परित्राण पानेका विश्वास हो जाता है, वह उससे परित्राण पाने लगता है! जिस दिन उसे विश्वास हो जाता है कि वह स्वस्थ हो गया उसी दिन वह स्वस्थ हो जाता है!'

अब आओ, स्वस्थ मनुष्यों पर विचारोंका जो प्रभाव पड़ता है, उसपर विचार करें।

सभाओंमें तुमने देखा होगा कि यदि किसी ओर कोई हँस पड़ता है तो चारों ओर हास्यकी ध्वनि गुंजित हो उठती है।

'मैं कहीं लज्जित न हो जाऊँ!' यह विचार उत्पन्न होते ही कपोल अरुणाभ हो जाते हैं और लज्जाके समस्त बाह्य लक्षण उत्पन्न होने लगते हैं।

'मैं ठीक तरहसे वक्तृता न दे सकूँगा।' यह विचार तब तक कार्यरूपमें परिणत होता रहता है जब तक कि वक्ता इससे मुक्त नहीं हो जाता है!

'मेरे मुँहसे शुद्ध वाक्य शायद हो निकलें!' यह विचार सदैव कार्यरूपमें परिणत होता रहता है और भाषाके समस्त व्याकरण सम्मत नियमोंका पूर्व परिज्ञान होते हुए भी अशुद्ध वाक्य बहिर्गत होते रहते हैं।

साइकिलपर बैठा हुआ व्यक्ति जिस पत्थरसे टकरानेका विचार करता है, इच्छा न रहते हुए भी उससे टकरा जाता है!

किसी कार्यको वर्षोंसे करते चले आनेवाले व्यक्तिका अनुभव ही केवल उसके द्वारा उस कार्यको सुगमतापूर्वक सम्पन्न नहीं करता है, बल्कि उसका यह विचार भी कि वह कार्य उसके लिये सर्वथा सुगम है।

एक बित्ता चौड़े स्थानपर तुम काफी दूरी तक सहर्ष चल सकते हो। तुम्हारे पैर उस स्थानसे बाहर नहीं पड़ेंगे। किन्तु यदि

वह एक बित्ता चौड़ा स्थान सात-आठ गज ऊंची दीवार पर हो तो क्या तुम चलनेको तैयार होगे ?

और यदि हो गये तो अवश्य गिर पड़ोगे।

क्यों ?—इसलिये कि गिर पड़नेका विचार सदैव तुम्हारे मनमें उत्पन्न होता रहेगा और चोटका भय प्रतिरोधक विचारोंको अशक्त एवं उस गिर पड़नेके विचारको सशक्त करता रहेगा !

कितने उदाहरण दूँ तुम्हें मैं !

प्रतिदिन तो तुम्हें इस प्रकारके अनुभव होते होंगे !

तो, मैं समझता हूँ तुम्हें इस बातका दृढ़ विश्वास हो गया होगा कि प्रत्येक विचार अपनी शक्तिके अनुसार एवं अन्य विचारोंके द्वारा प्राप्त सहायता अथवा प्रतिरोधके अनुसार कार्यरूपमें परिणत होता है !

प्रत्येक विचार तुम्हारे व्यक्तित्वका अविच्छेद्य अंग बन जाता है !

असौंदर्य और अशक्तिके विचारोंसे सदैव अपने मानसिक क्षितिजको दूर रखो !

सौंदर्य और शक्तिके विचारोंसे अपने मानसिक जगत्का शृङ्गार करो।

मार्कस ऑरोलियसका यह वाक्य कभी न भूलो—Such as are thy habitual thoughts, so also will be the character of thy mind, for the soul is dyed by the thoughts.

[२४]

विचारोंकी शक्ति असाधारण है।

तुम्हारे विचार ही तुम हो!

एक महात्मा अपने विचारों की महत्ताके ही कारण महात्मा है।

जिन कार्योंको सम्पन्न करना चाहते हो, उनके विचारोंको मस्तिष्कमें अधिकाधिक सजग करो!

जिन कार्योंको सम्पन्न नहीं करना चाहते, उनके विचार कभी भी मस्तिष्कमें प्रविष्ट न होने दो!

तुम सदैव मंजिलके स्वप्न देखो!

तुम्हारे स्वप्न अवश्य सच्चे निकलेंगे।

जो अपनी विजयके सम्बन्धमें सदैव सोचता रहता है, वह शायद ही पराजित हो!

कुटीरके स्वप्न देखनेवाला महलका निर्माण नहीं कर सकता!

हरहिटलरको जर्मनीका सर्वेसर्वा उसके उन विचारोंने ही बनाया था जो जमीनकी ओर देखना ही नहीं जानते थे,—पर्वत का उच्चतम शिखर सदैव जिनका गमन-स्थल रहता था!

एक साधारण से सैनिकके विचार जब उसे जर्मनीका 'फ्यूहरर' बना सकते हैं तो युवक! क्या तुम्हें वे तुम्हारे लक्ष्य तक नहीं पहुंचा सकते?

'मारवाड़ी धनपति अति शीघ्र हो जाते हैं! दूसरे प्रान्तोंमें जाते हैं और कोठियां खड़ी कर लेते हैं! पता नहीं, इनमें कौन-सी विशेषता है, जब कि हम कठिनाईसे उदर-पूर्ति भी कर पाते हैं।' अनेक व्यक्ति ऐसा कहा करते हैं।

लेकिन मारवाड़ियों के धनपति होनेमें उनकी कोई जातिगत विशेषता नहीं है! जिस वातावरणमें वे निवास करते हैं, वहां सदैव धनार्जनके स्वप्न देखे जाते हैं, - लक्षाधीश बननेके विचार सदैव उत्पन्न होते रहते हैं।

मारवाड़ी वैश्य यही सोचता है कि आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों। वह अपना एक अच्छा-सा मकान अवश्य बनायगा!

फलतः उसके मकान बन भी जाते हैं।

वह जिस वातावरणमें रहता है, वहां सौ, डेढ़ सौ रुपयोंकी नौकरीसे संतोष करनेवाली विचार-तरंग नहीं अपितु लक्षाधीश बननेकी विचार-तरंग प्रसृत होती रहती हैं।

वे विचार-तरंगे ही उसको कोठियां खड़ी करती हैं।

पारिपार्श्विक वातावरणमें प्रसृत वीरताकी विचार-तरंगे ही किसी राष्ट्रके व्यक्तियोंको वीर बनाती हैं। वहाके स्थलकी विशेषता ही अन्तिम हो, ऐसी बात नहीं है।

मैं मारवाड़ी व्यापारियोंकीप्रशंसा नहीं कर रहा। उनके मरण-मुखी उन्मादको प्रशंसा कर भी नहीं सकता! मैं तो एक ऐसे सत्य पर प्रकाश डाल रहा हूँ जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती!

जिन लड़कोंको बाल्यावस्थासे ही यह सुननेको मिलता है कि तुम्हारी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण है, वे वास्तवमें कुशाग्रबुद्धि हो जाते हैं।

इसके विपरीत जिन्हें सदैव भर्त्सनाओंका पात्र बनना पड़ता है,—जिन्हें सदैव यह कहा जाता है कि यह वज्रमूर्ख है, जीवन में कोई महत्कार्य नहीं कर सकता, वे वास्तवमें वज्रमूर्ख निकलते हैं!

विचारोंकी शक्तिको पहचान कर फ्रांसमें एमिल कुएने कमाल कर दिखलाया था!

अनेकानेक रोगी उसके पास आते थे और घंटोंमें स्वस्थ होकर चले जाते थे!

असाध्य समझे जाने वाले रोगियोंको उसने अच्छा किया है।

एक रोगीके पेटमें सदैव पीड़ा होती रहती थी। यूरोपके अनेक ख्यातनामा चिकित्सकोंका इलाज कराया। कोई लाभ न हुआ।

वल्कि, उनका परिणाम उल्टा ही हुआ। 'मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा की।' निरन्तर मस्तिष्कमें उत्पन्न होने वाले पीड़ा के विचारोंने उसकी पाचन-शक्तिको बरबाद करके रख दिया! शरीर सर्वथा अशक्त हो गया। बौद्धिक शक्तियोंका भी ह्रास होने लगा।

अन्यत्र निराश होकर वह विचार-शक्तिके विज्ञानी कुएके पास आया।

कुएने उसके मस्तिष्कमें रोगके पुंजीभूत विचारोंको अपने वाक्योंके द्वारा दूरीकृत करके स्वास्थ्यके वाक्योके द्वारा स्वस्थ विचारोंका सन्निवेश आरंभ किया।

'तुम स्वस्थ हो रहे हो, तुम्हारा रोग दूर हो रहा है! तुम्हारी पाचन-शक्ति बढ़ रही है।' इस प्रकारके सशक्त वाक्योंने जो चमत्कार दिखाया, वह सुविख्यात चिकित्सकोंकी औषधियाँ नहीं!

एमिल कुएने इस सत्यको अच्छी तरह पहचान लिया था कि शरीर पर विचारोंका असामान्य प्रभाव पड़ता है।

'मन एव मनुष्याणां कारणं बंधमोक्षयो' का अर्थ जैसा उसने समझा था, वैसा बहुत कम कृष्णोपासक समझ सके हैं!

विचार मस्तिष्कको प्रभावित करता है'; मस्तिष्कसे स्नायु-मण्डल और रक्तकी शिराएँ प्रभावित होती हैं और फिर उनसे साराका सारा शरीर!

यदि चाहते हो कि तुम्हारी शारीरिक शक्ति विवर्धित हो तो शक्तिवर्धक विचारोंको ही मस्तिष्कमें प्रश्रय दो, आशक्तिके विचारोंको नहीं!

'मैं पूर्ण स्वस्थ हूं। मेरी शक्तियां असीम है! मैं एक हुंकारमे आकाशकी भीमकाय वारिदमालाके सहस्रों खंड कर सकता हूं! मेरा एक स्पर्श पाषाण-शिलाको चूर्णित कर सकता है!' इस प्रकारके विचारों की पुनरावृत्ति करो।

अपने शारीरिक या मानसिक जीवनमें जिस बातकी वृद्धि देखनेकी इच्छा हो, उससे सम्बन्धित विचारोंका पोषण मानस-प्रदेशमें आरम्भ करो और फिर देखो कि किस प्रकार तुम्हारी इच्छाओंकी अभिपूर्त्ति होती है !

चमत्कृत हो उठोगे तुम इस सनातन प्राकृतिक नियमकी सत्यता देखकर।

प्राचीन ऋषियोंने इस सत्यको पहचाना था और पहचान कर उन शक्तियोंका विकास किया था जो आंधियों और तूफानों पर नियन्त्रण रखती हैं।

चित्तकी वृत्तियां जिस प्रकार तुम्हें आलोकस्नात प्रदेशकी ओर ले जा सकती है, उसी प्रकार अन्धकारित रौरवकी ओर भी !

इसीलिये भारतके ऋषियोंने उनके नियंत्रणको इतना अधिक महत्व दिया था।

योग चित्तकी वृत्तियोंके निरोधके अतिरिक्त और है क्या !

विचारोंका प्रभाव उस समय तुम पर अधिक अच्छी तरहसे पड़ता है जब अर्धनिद्रित रहते हो। अशान्ति और विक्षोभकी अवस्थामें उन प्राणप्रद वाक्योंकी आवृत्ति तुम्हें उतना लाभ नहीं प्रदान कर सकती।

सर्वाधिक उपयुक्त समय वह है जब तुम दिवस भरके यात्रा श्रमसे श्रान्त होकर निद्राके कोड़में आत्मविस्मृत होनेके लिये उत्सुक होने लगते हो !

सीधे लेट जाओ। अंग प्रत्यंग विशिथिल कर दो! अंग संचालन बिलकुल न करो। कल्पना करो कि चारों ओर शून्य ही शून्य है! यदि यह कल्पना कर सको कि तुम शून्य व्योम-पथमें खड़े हो तो और भी अच्छा! धरित्रीको आंखोंसे बिल्कुल ओझल कर दो!

प्राणप्रद वाक्योंकी आवृत्तिके पहले मस्तिष्कको अन्य विचारों से सर्वथा रिक्त कर लो! लेकिन यह कार्य उतना सरल नहीं, जितना प्रतीत होता है! मस्तिष्कको रिक्त करनेका प्रयास करते ही अभिनव और अयाचित विचार आक्रमण करने लगेंगे!

इच्छाशक्तिका—उस इच्छाशक्तिका जो काफी सशक्त नहीं हो सकी है, विचारोंपर कोई अधिकार नहीं!

जिस विचारको दूर करना चाहोगे, वही अधिक प्रचण्ड वेगसे तुम्हारी चेतनाके क्षेत्रपर आक्रमण करेगा!

तुम्हारे समस्त आयास विपुल व्यर्थतामें ही पर्यवसित होंगे!

अनेक व्यक्तियोंको मैंने देखा है, कि वे प्रयास करते हैं कि उनके अधरोंपर हंसीकी रेखा न अंकित हो, किन्तु वे जोरोंसे हँस पड़ते हैं।

हँसीको रोकनेकी चेष्टा वे न करते तो शायद हँसी न आती!

इच्छाशक्ति और विचार-शक्तिमें जब विरोध होता है तो सदैव विचार-शक्तिकी ही विजय होती है!

तुम्हें सहस्राधिक बार इसका अनुभव हुआ होगा। प्रत्येक जीवन-यात्रीको इसका अनुभव होता है किन्तु इस अनुभवसे लाभ कितने व्यक्ति उठा पाते हैं!

तुम उस समय अपने विचारोंको दूर करनेका तनिक भी प्रयास न करो। विचारोंको स्वतंत्र आने जाने दो! मस्तिष्क पर कुछ भी जोर न दो। थोड़ी देरमें तुम्हारा मस्तिष्क उस स्थितिमें स्वयं आ जायगा, जिसमें तुम उसे ले जाना चाहते हो!

उस अवस्थामें तुम जो सन्देश अपनी अप्रज्ञात चेतना तक पहुंचाना चाहोगे, वे सुगमतापूर्वक पहुंच जायेंगे।

यह तो तुम जानते और मानते ही हो कि अप्रज्ञात चेतनाका महत्त्व ज्ञात चेतनासे कहीं अधिक है। तुम्हारे कार्योंके सञ्चालन का मूल सूत्र तुम्हारी इसी अप्रज्ञात चेतनाके हाथों है!

अनेकानेक मानसिक विकारोंका कारण अप्रज्ञात चेतनामें होता है! ज्ञात चेतनाको प्रभावित करनेसे उन विकारोंको दूर करना अशक्य है।

तुम्हारी ज्ञात चेतना तुम्हारी चेतनाका एक लघुतम भाग है!

अप्रज्ञात चेतनाका भाण्डार बहुत ही महान् है!

जितने प्रकारके भी अनुभव तुम्हें होते हैं, सब तुम्हारी अज्ञात चेतनामें रहते हैं।

तुम किसी चीजको याद नहीं कर पाते, इससे यह निष्कर्ष निकालना अज्ञातका परिचायक है कि उसकी पूर्ण विस्मृति हो गयी! पूर्ण विस्मृति असंभव है!

प्रत्येक प्रकारकी स्मृति तुम्हारी अप्रज्ञात चेतनामें सुरक्षित है!

मानसिक विज्ञानका यह एक अकाट्य नियम है कि जितने प्रकारके भी ज्ञान बहिर्जगत्से अन्तर्जगत्में जाते हैं, वे वहां जाकर अमर हो जाते हैं !

तुमने जो कुछ आज तक पढ़ा है,—तुमने जो कुछ सुना है,—जो कुछ देखा है, सब तुम्हारे मस्तिष्कमें है ! सिर्फ उसे सजग करनेकी आवश्यकता है !

मुझे एक लड़कीकी याद आ रही है। नाम उसका मुझे याद नहीं। एक जर्मन मनोविज्ञानवेत्ताने अपनी पुस्तकमें इस सिद्धान्त की सत्यताका उल्लेख करते हुए लिखा था कि रोगाक्रान्त स्थिति में वह अचानक ही एक ऐसी भाषा बोलने लगी, जिसे कोई भी नहीं समझ पाया !

अन्तमें पता चला कि वह हिब्रू भाषामें बाइबलके वाक्य बोल रही थी !

आश्चर्यके मारे श्रोता पागल थे ! समझमें नहीं आता था कि आखिर वह कौन-सा दैवी चमत्कार है जो एक अशिक्षिता लड़की हिब्रू जैसी भाषा बोल रही है, जिसे इने-गिने विद्वानोंको छोड़कर और कोई भी नहीं जानता !

मनोविज्ञानवेत्ताओंने पता लगाना शुरू किया। पता चला कि वह कुछ समय पहले एक पादरीके यहां काम करती थी और नित्य हिब्रू बाइबलका पाठ वह पादरी किया करता था ! वे वाक्य वह नित्य सुना करती थी !

साधारण व्यक्तियोंके लिये यह अविश्वसनीय-सी घटना है कि एक अविज्ञानित भाषाके सहस्राधिक वाक्योंकी पुनरावृत्ति एक अशिक्षिता लड़की कर दे ! किन्तु जो लोग मानवी मस्तिष्क के रहस्योंसे परिचित हैं, उनके लिये इसमें कोई आश्चर्यजनक बात नहीं।

तुम्हारी अप्रज्ञात चेतनामें सिर्फ इसी जीवनके नहीं, जन्म-जन्मान्तर की स्मृतियाँ सुरक्षित हैं !

वे स्मृतियाँ निष्क्रिय नहीं, सक्रिय हैं ! तुम्हारे अनेकानेक कार्योंका सञ्चालन उनके द्वारा होता रहता है !

उस अप्रज्ञात चेतनाको प्रभावित करनेसे तुम अनेकानेक प्रकारकी शक्तियोंका विकास अपने व्यक्तित्वमें कर सकते हो और इस प्रकार अपनी प्रगतिको नूतन बल प्रदान कर सकते हो !

तो, मस्तिष्कको एवं सारे शरीरको विशिथिल करनेके उपरान्त मन ही मन इन वाक्योंकी आवृत्ति करो 'मैं तेजस्वी हूँ । मैं शरीर नहीं हूँ, आत्मा हूँ । मैं अविनश्वर हूँ ! मैं शक्तियोंका अभिपुञ्ज हूँ। मुझे कोई भी पराजित नहीं कर सकता। मैं विजयका अभि-दूत हूँ ! सफलता मेरी चिरन्तन सहचरी है।'

इच्छा-शक्तिको इस प्रकारके वाक्योंका प्रयोग करते समय काममे न लाओ। वह बाधक सिद्ध होगी !

किसी रोगसे आक्रान्त होने पर इस प्रकारके वाक्योंकी आवृत्ति करो—'मैं रोगमुक्त शीघ्रातिशीघ्र हो जाऊँगा ! मैं स्वास्थ्य और बलका स्रोत हूं। मुझे यह रोग कदापि नहीं होता ! किन्तु

मैंने प्रकृतिके नियमोंका जो उल्लंघन अज्ञानवश किया है, उसका यह दण्ड मुझे मिला है! और यह दण्ड मिलना भी चाहिये था! सृष्टिका यही नियम भी है! किन्तु यह रोग मेरे शरीरमें है, मुझ में नहीं! मैं तो तेजस्वितासे और स्वास्थ्यसे पूर्ण हूँ! दुनियाकी कोई भी शक्ति मुझे रोगी नहीं बना सकती! शरीरका यह रोग भी अब धीरे-धीरे दूर हो रहा है! शीघ्र ही यह सर्वथा दूर हो जायगा और पहलेकी अपेक्षा अधिक शक्तिका उन्मेष मुझमें होगा। प्रकृति मुझे मेरी गलती बतलाना चाहती है! मैं अपनी गलती पहचान गया! अब मेरा स्वास्थ्य पुनः ठीक होना शुरू हो जायगा!'

पहले दिन इस प्रकार भविष्यत्कालका प्रयोग करो। दूसरे दिन वर्त्तमान कालका प्रयोग करते हुए मन ही मन बोलो—मैं स्वस्थ हो रहा हूँ! मेरी शक्तियाँ बढ़ रही हैं। मुझमें नूतन स्फूर्त्ति का सञ्चार हो रहा है।'

स्मरण-शक्तिको यदि बढ़ाना चाहते हो तो इस प्रकारके वाक्योंकी आवृत्ति करो—'मेरी स्मरण-शक्ति इसी क्षणसे तीव्र हो रही है और प्रतिक्षण तीव्र होती ही जायगी। . . अरे, यह क्या हुआ! कैसा चमत्कार हो रहा है यह। मेरी स्मरण-शक्तिमें अकस्मात् ही यह कैसी पावस-प्रसारकी-सी वृद्धि हो चली!'

इसी प्रकार अन्य शक्तियोंका विकास कर सकते हो।

इन वाक्योंको सिर्फ शब्द-समूह न समझो! ये शक्तिके स्रोत सिद्ध होंगे!

लेकिन इन वाक्योंकी शक्ति तभी अपने पूर्ण प्रवेगके साथ काम कर सकेगी, जबकि उनके साथ किसी न किसी प्रकारका अन्तर्वेग तुम मिश्रित कर दोगे !

विचारोंकी शक्ति उस समय अपरिमेय हो जाती है जब वे अन्तर्वेगोंसे मिश्रित हो जाते हैं।

अन्तर्वेगोंके कई विभाग किये जा सकते हैं, लेकिन मैं तुम्हें मनोविज्ञान समझाने नहीं आया हूं ! तुम्हारे लाभके लिये मैं अभी उन्हें सिर्फ दो भागोंमें विभक्त करता हूं। एक हितकर, दूसरा अहितकर !

हितकर अन्तर्वेगोंमें प्रेम और विश्वासकी शक्ति सबसे अधिक है ! इन दोनों अन्तर्वेगोंसे संयुक्त विचारोंमें पाषाणी शिलाओंको भी चकनाचूर करके आगे बढ़ते हुए ईप्सित पदार्थको तुम तक ले आनेकी शक्ति सन्निहित है !

संसारका इतिहास पढ़ो। इन दोनों अन्तर्वेगोंने कमाल कर दिखलाया है !

गांधीको तर्कना-शक्ति कोई उतनी महान् नहीं। उनकी वक्तृत्व-शक्तिकी भी अधिक प्रशंसा नहीं की जा सकती ! किन्तु उन्हें भारतका सर्वाधिक लोकप्रिय नेता बनाया है उनके विश्वासने।

सर्वाधिक लोकप्रिय भारतीय नेता ही नहीं अपितु आईस्टाइन जैसे सुमहान् वैज्ञानिकके मुँहसे उन्हें वर्त्तमान युगका सर्वश्रेष्ठ मानव कहलाया है उनके विश्वासने ही।

विश्वासकी शक्ति असाधारण है। विचारोंको वह जीवन प्रदान करता है।

विश्वास विचार-खगका पाथेय है।

विश्वास विचार-खगके पंखोंकी शक्ति है।

तुम्हारे विचारोंमें प्रवेग विश्वासके अभावमें शायद ही आ सके।

विश्वास जिस प्रकार हितकर अन्तर्वेग है, उसी प्रकार संशय और भय अहितकर।

विश्वाससे संयुक्त विचार यदि तुम्हें एक दिन गिरिके सर्वोच्च शिखर पर पहुँचानेकी क्षमता रखता है तो संशय और भयसे संयुक्त विचार तुम्हें पतनके अंधकारित गर्तमें।

विश्वास पहाड़ोंको पथच्युत करनेकी क्षमता रखता है। सिर्फ उसका दुष्प्रयोग नहीं होना चाहिये।

अप्रज्ञातचेतनातक विश्वास-संयुक्त विचार जब पहुँचता है, तब उसके मूर्तरूप ग्रहण करनेमें अधिक विलम्ब नहीं होता।

---

[२५]

विचारोंके महत्वपर कितना प्रकाश डालूं मैं !

मनुष्यकी महत्ता या क्षुद्रता विचारोंके ही कारण होती है !

वाह्य परिस्थितियाँ विचारोंके द्वारा ही विशष्ट रूप ग्रहण करती हैं !

एक-सी ही परिस्थितियोंमें विभिन्न श्रेणीके व्यक्तियोंमें विभिन्न प्रकारकी अनुभूतियां उत्पन्न होती हैं !

सम्पत्तिका प्रणाश किसीको पागल बना डालता है तो किसीके हृदयमें वैराग्य उत्पन्न करके उसके मानव-जीवनको सच्चे प्रेमकी ज्योतिसे जगमगा देता है।

ऋणका आधिक्य यदि किसीको भयातुर और पीड़ातुर करता रहता है तो किसीको सर वाल्टर स्कॉट भी बना देता है।

दारिद्र्य किसीके हृदयमें नैराश्यकी उत्पत्ति करके उसे निष्क्रिय बनाता है तो किसोको प्रचण्ड कर्मोन्मादना प्रदान करता है।

वाह्य परिस्थितियाँ विचारोंके रङ्गमें रँगी जाती हैं !

सुन्दर नारीका साहचर्य किसीकी शारीरिक शक्तिका ह्रास करता है तो किसीको कवि बना देता है।

निराश प्रणय किसीको आत्मघातके लिये विवश करता है तो किसीको महान् कलाकार बननेकी शक्ति प्रदान करता है !

मनुष्योंकी भीड़में भी कोई एकान्त-निवास करता है और जनहीन स्थानमें भी कोई एकाकी नहीं रह पाता !

ज्ञानेन्द्रियोंके द्वारा जो अनुभव मस्तिष्क तक पहुँचता है, उसकी क्रिया तभी पूर्ण होती है जब वह वहांके सञ्चित विचारोंसे मिल जाता है !

नवीन ज्ञान पूर्ववर्त्ती ज्ञानोंसे बहुत बड़े अंशमें प्रभावित होता है।

सुधांशुको श्वेत बादलोंसे चुम्बित होता देखकर जो भावना कविके मस्तिष्कमें उत्पन्न होगी, वह व्यापारीके मस्तिष्कमें कदापि नहीं हो सकती !

मनके कारण ही एक भिक्षुक राजा हो सकता है और राजा भिक्षुक !

कोट्याधीश होकर भी विचारोंकी हीनताके कारण अधिकसंख्यक व्यापारी दरिद्र हैं और कुटीरनिवासी होकर भी विचारोंकी उच्चताके कारण अधिकसंख्यक दार्शनिक श्री-सम्पन्न हैं !

समस्त पार्थिव सुख-साधनोंका होना न होना समान है, यदि सबसे बड़े सुख-साधन मानस-प्रदेशमें अभावोंका भूकम्पन हो रहा हो !

गैरिक वसन पहनकर मनकी मस्तीमें अलख जगानेवाला संन्यासी यदि सचमुच संन्यासी है तो वह उस बादशाहसे बढ़कर सम्पन्न है जिसे साम्राज्य-वृद्धिसे कभी भी सन्तोष नहीं होता !

सब कुछ दृष्टिकोणपर आधारित है।

बाहरी साथियोंसे मनके ये अदृश्य साथी संख्यामें ही अधिक नहीं, शक्तियोंमे भी अधिक हैं !

तुम्हारे ऊपर जितना सशक्त प्रभाव इनका पड़ता है उतना उन बाहरी साथियोंका नहीं !

तुम्हारे समस्त क्रिया-कलाप इन्हींके परिणाम हैं।

तुम्हारा व्यक्तित्व तुम्हारे विचारोंसे बनता है, बाह्य परिस्थियोंसे नहीं !

तुम्हारे भाग्यके निर्णायक भी वे ही हैं।

किसीके वस्त्र, गृह, रजत या स्वर्णकी मुद्राओंका संकलन देखकर तुम उसके सम्बन्धमें जो धारणा बनाते हो, वह उसके सम्बन्धकी धारणा नहीं, उसके द्वारा अधिकृत बाह्य वस्तुओंकी धारणा है !

यदि किसी व्यक्तिको पहचानना चाहते हो तो उसके विचारों से परिचित होनेकी चेष्टा करो !

मनुष्य विचारोंका समूह है।

बाह्य परिस्थितियां व्यक्तिके मनमें जिन विचारोंको जागृत करती हैं वे उसके चरित्रका निर्माण करती हैं, केवल वे बाह्य वस्तुएँ नहीं !

सुन्दर स्त्रियोंकी मुख-श्रीको ध्यानपूर्वक देखनेवाले कवि या दार्शनिकको तुम कामुकोंकी श्रेणीमें न रखो।

एक पुष्पको घंटों निरखनेवाला वैज्ञानिक एक व्यापारीके लिये पागल है और वह व्यापारी उस वैज्ञानिकके लिये वज्रमूर्ख !

वह पुष्प व्यापारीके लिये सूंघकर रख देनेकी चीज है। उसके मानस-प्रदेशमें इसके अतिरिक्त और कोई भावना आ ही नहीं सकती !

वैज्ञानिक उसमें सृष्टिके अविदित रहस्योंकी तालिका देखता है!

अन्तर्पीड़ा किसीके लिये इसी कारण शाप सिद्ध होती है, किसीके लिये वरदान!

प्रिय-विरहने आत्म-हत्याएँ करायी है,—जीवन-प्रदीपको निर्वापित करके चतुर्दिक हाहाकारमय अन्धकारको आमंत्रित कराया है तो इस ग्रहकी साहित्य-श्रीको विवर्धित भी किया है!

वियोगकी व्यथाने जितने कोमल गीतोंकी सृष्टि की है, उतने मिलनके सुखने नहीं।

अपना समझे जाने वाले आदमियोंका दुर्व्यवहार एकके हृदयमें विक्षोभ और क्रोध उत्पन्न करता है, दूसरेके हृदयमें सांसारिक वितृष्णा।

पात्रमें भरा हुआ पेय पदार्थ अमृत सिद्ध होगा या विष, यह पीनेवालेके विचारोंपर निर्भर करता है!

एक ही प्रकारकी परिस्थितिमें एक व्यक्तिके मानस-प्रदेशमें साहस और शक्ति देनेवाले विचार उत्पन्न होते हैं और दूसरेके मानस-प्रदेशमे अशक्ति और निराशासे भरे! परिणाम भी उसीके अनुकूल होता है!

पतझडकी अनन्त रसहीनतामें विचार मधुमासकी मंजुलता ले आते हैं। दिगन्तव्यापिनी उत्तप्त सिकता-राशिमें उनके द्वारा हिम-संहतिका आनयन होता है!

श्मशानके भयानक निशीथको वे क्रीड़ा विलासकी सुहासिनी पूर्णिमा बना देते हैं !

मधुमासके उल्लासको क्षणोंमें पतझड़की कुरूपतामें परिणत कर देना भी इनके लिये असम्भव नहीं ! हास्यालाप पल भरमें इनके द्वारा अश्रु-सजल हो जाता है !

शत्रु क्षणोंमें प्राणप्रिय हो जाता है और पुरातन सखाका स्नेह-बन्धन, जो अविच्छेद्य समझा जाता था, छिन्न-भिन्न हो जाता है !

जीवनकी प्राणमय दृश्यावलीमें विचार मरणका भीषण अट्टहास सुनाकर प्राणीकी सारी आशाएं क्षणोंमें नष्ट कर डालते हैं !

तुम्हारी यात्राका यह पथ तुम्हारे लिये कौन-सा रूप ग्रहण कर रहा है, यह तुम्हारे विचारोंपर अवलम्बित है !

मंजिल तक पहुंचनेमें तुम्हें देर लगेगी या शीघ्र ही पहुंच जाओगे, इसका उत्तर जानना चाहते हो तो अपने साथ सदैव रहनेवाले विचारोंकी ओर देखो ।

सही उत्तर उन्हींसे प्राप्त होगा !

विचारोंके आलोकमें ही तुम संसारको देखते और समझते हो !

जैसे तुम्हारे विचार हैं, वैसे ही तुम हो, वैसी ही तुम्हारी दुनियां ।

एक व्यापारीकी दुनियांमें और एक दार्शनिककी दुनियांमें कितना महान् अन्तर विद्यमान है !

एक ज्योतिर्विज्ञानविद्की दुनियांमे और एक धनगृध्र व्यक्तिकी दुनियांमें जो पार्थक्य है, जरा उसपर विचार तो करो !

एक सच्चे कविको फूलमें भी किसी प्राणप्रियकी रूपश्री दिखलायी देती है!

एक सच्चा व्यापारी उसे इत्रके रूपमें परिणत करके उसमें धन-प्राप्तिके स्वप्न देखता है!

एक ही व्यक्ति एकको आलोकदानी प्रतीत होता है, दूसरेको निरर्थक सत्तावाला '

जिस समय व्यक्ति क्रोधावस्थामें होता है, स्नेहके शब्द भी उसे व्यंगभरे प्रतीत होते हैं!

अनेकानेक प्रकारके प्रणय-पाशोंके छिन्न-भिन्न होनेका कारण विशिष्ट मानसिक परिस्थितिमें मिलेगा!

नैराश्यकी अवस्थामें सर्वत्र निराशा और तमिस्रा दृष्टिगत होती है!

मनुष्य कहाँ है, यह उतना महत्त्व नहीं रखता, जितना यह कि वह क्या सोच रहा है!

कारागारमें रहकर भी व्यक्ति स्वतंत्र रह सकता है और कारागारसे बाहर रहकर भी परतंत्र!

जिसके विचार सुन्दर हैं, उसके लिये नरक भी नन्दन-निकेतन बन जाता है किन्तु अधम विचारोंवाले व्यक्तिके लिये नन्दन-निकेतन भी घोर रौरव!

बाहरी शान्ति देखकर किसी व्यक्तिके सम्बन्धमें कोई भी सही धारणा नहीं बनायी जा सकती! महत्त्वपूर्ण वस्तु है उसका अन्तर्देश। अक्सर शान्तिपूर्ण सुसज्जित कक्षोंमें निवास करनेवालोंके प्राणोंमे तूफान चलते रहते हैं।

जीवनके उषाकालमें किसीके मुखसे निकले हुए प्रशंसात्मक या निन्दात्मक वाक्य कभी-कभी जीवनकी रूपरेखाका निर्धारण करनेवाले सिद्ध होते हैं !

अविवेकी व्यक्तियोंकी भर्त्सनाने क्या जाने कितने ही कुशाग्र-बुद्धि बालकोंके हृदयमें चिरकालके लिये आत्म-अनास्था उत्पन्न कर दी है !

ज्यों-ज्यों आयु बीतती जाती है, त्यों-त्यों स्वीकृत विचार अधिकाधिक सशक्त होते जाते हैं।

तुम्हारा अभी कुछ भी नहीं बिगड़ा है !

चाहो तो अपने उन विचारोंको सदाके लिये अशक्त कर सकते हो, जो तुम्हारी शक्तियोंको पनपने नहीं देते !

विचारोंको समुन्नत करके अपना उद्धार करो !

'उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्

आत्मनोह्यात्मनः बन्धुरात्मनोरिपुरात्मनः।

नया अहितकर विचार आरम्भमें जितनी जल्दी हतवीर्य किया जा सकता है, पीछे नहीं !

अहितकर विचारोंको अशक्त करके हितकर विचारोंको मस्तिष्कमें शक्ति प्रदान करनेका यह जो कार्य है, उसमें तुम्हारी शक्तिकी परीक्षा होगी।

जब तक तुम्हारे मस्तिष्कमें अहितकर विचारोंका प्रवेश होता रहता है तबतक तुम अपनेको इस यात्रा-पथमें पूर्ण सुरक्षित नहीं समझ सकते !

एक भी अहितकर विचार तुम्हें नीचे गिरा सकता है।

बड़ी कठिन डगर है यह राही!

न जाने कब कामुकताका एक नन्हा-सा विचार तुमसे क्या करवा दे!

अत सदैव सावधान रहो!

सतत जागरूक रहो!

अहितकर विचारोंको अपना साधारण शत्रु न समझ बैठना! तुम्हारे समस्त सुमधुर स्वप्नोंको वे खाकमे मिला सकते हैं।

इसमें तुम्हें पर्याप्त कठिनताका अनुभव होगा किन्तु हताश होनेकी आवश्यकता नहीं'

जिस विचारको तुम दूर करनेकी चेष्टा करोगे, वही द्विगुणित वेगसे तुम्हारे मस्तिष्कपर आक्रमण करेगा।

तुम्हें ऐसा प्रतीत होगा, जैसी तुम्हारी स्मृति और तुम्हारी कल्पना उसके बन्धनोंमें सदाके लिये जकड़ी जा चुकी है। यहाँ तक कि तुम्हारा विवेक भी उसके लौह-पाशमें जकड़ा हुआ कभी-कभी तुम्हें प्रतीत होगा।

तुम्हारी प्रत्येक आज्ञाका उल्लंघन करते हुए वे तुम्हारा उपहास करते हुए-से मालूम होंगे!

इस विचार-नियंत्रण-कार्यमें एक खतरा और है! मस्तिष्क और विशेषकर तुम्हारा मस्तिष्क अतिशय सुकुमार-यन्त्र है। अनपेक्षित जोर डालनेसे उसकी स्वाभाविक क्रियामे व्यतिक्रम आ सकता है।

यह व्यतिक्रम बुरे विचारोंसे भी अधिक अहितकर सिद्ध होगा !

अतः सावधानीके साथ और बुद्धिमत्ताके साथ विचारोंको नियंत्रित करनेका प्रयास करो ।

जो विचार तुम्हारे अन्तर्प्रदेशमें आवृत्तिके द्वारा वद्धमूल हो गये हैं, उनका बलपूर्वक मूलोत्पाटन नहीं कर सकोगे। कारण, उनकी सम्बन्ध-स्थापना मस्तिष्कके अन्य सहस्रों विचारोंसे हो चुकी है !

कोई भी नूतन विचार मस्तिष्कमें प्रवेश करते ही सम्बन्ध स्थापित कर लेता है। इस प्रकार एक विचार अपनेसे सम्बन्धित दूसरे विचारको उद्‌बुद्ध करता है।

जितने ही वलके साथ तुम इस बातका प्रयास करोगे कि अनभिलषित विचार विदूरित हों, उतने ही वलके साथ उनका तुमपर आक्रमण होगा।

कारण, तुम्हारा अवधान उन्हें दूरीकृत करनेका प्रयास करते समय उनपर केन्द्रित हो जाता है।

एक वार जो विचार तुम्हारे मस्तिष्कमें उत्पन्न हो चुका, उसे पूर्णतया नष्ट कभी भी नहीं किया जा सकता। हाँ, विरोधी स्वस्थ विचारोंके प्राचुर्यके द्वारा एवं विस्मृतिके द्वारा उसे अशक्त अवश्य किया जा सकता है।

इच्छा-शक्तिका स्मृति, कल्पना प्रभृति मानसिक व्यापारोंपर कोई अधिकार नहीं !

जिसको याद करना चाहोगे, नहीं याद आयेगा और जिसको याद नहीं करना चाहोगे, वह याद आयेगा

अनेकानेक कलाकारोंके मुंहसे तुमने सुना होगा—'जब चाहता हूं, तब लिख नहीं पाता !'

किन्तु इससे यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि मानसिक उन्नति में इच्छा-शक्तिका कोई हाथ ही नहीं !

हाथ है, किन्तु एक सीमा तक।

परिमाणसे खायी हुई औषधि रोग दूर कर डालती है किन्तु अधिक परिमाणमें खानेसे रोगकी वृद्धि !

इच्छा-शक्तिका प्रयोग भी मानसिक जगत्‌में एक परिमाण तक ही करना चाहिये।

इच्छा-शक्तिके साथ पूर्ण विश्वासका यदि संयोग हो जाय तो मानसिक शक्तियोंके नियंत्रणमें यह बहुत ही उपयोगी सिद्ध होती है !

किन्तु दुर्भाग्यवश अधिकसंख्यक जीवन-यात्रियोंकी इच्छा-शक्ति संशयसे संयुक्त हो जाती है !

जब वे किसी चीजको स्मरण करनेकी प्रबल इच्छा करते हैं, उस समय संशय अस्पष्ट रूपसे सजग हो उठता है और परिणाम यह होता है कि वे याद नहीं कर पाते। कुछ देरके उपरान्त जब उन्हें स्वत. वह याद हो आती है तो वे आश्चर्य करने लगते हैं कि जब कोशिश की तब तो वह चीज याद नहीं आयी और यों स्वतः ही याद हो आयी।

इसका कारण इच्छा-शक्तिका दुरुपयोग है !

कई प्रकारके यन्त्रोंको परिचालित करते समय विशिष्ट पुर्जों को एक खास अन्दाजसे दबाया जाता है ! जोरसे दबानेपर भी यन्त्र परिचालित नहीं होता और धीरेसे दबानेपर भी !

किसी भी मानसिक कार्यको सम्पन्न करना चाहते हो तो इच्छा-शक्तिके पुर्जेको धीरेसे दबाकर फिर निश्चिन्त हो जाओ। अधिक देर तक उसीको न दबाते रहो !

मस्तिष्क बड़ा सुकुमार यंत्र है। उसपर अधिक दबाव नहीं पड़ना चाहिये !

अधिक सुकुमार मस्तिष्क ही अधिक सक्रिय भी होता है !

अनभिलषित विचारोंको दूर करनेका सर्वोत्कृष्ट उपाय यह है कि तुम अभिलषित विचारोंके पीछे पड़ो।

'विचारोंको दूर करने से मेरा तात्पर्य यह नहीं कि तुम उन्हें मस्तिष्कसे सदाके लिये मिटा डालोगे। यह असम्भव है ! कोई भी विचार एक वार मस्तिष्कमें प्रविष्ट होनेके उपरान्त नष्ट नहीं होता ! उसकी शक्ति नष्ट कर सकते हो !

जब तुम किसी पात्रमें जल भरना चाहते हो तो पहले उससे वायुको बहिर्गत नहीं करते। जल भर देते हो, स्वयं वायु बहिर्गत हो जाती है।

जिस स्थानको आलोकित करना चाहते हो, वहांका अन्धकार पहले दूर हो जाय, तब प्रदीप लाया जाय, ऐसा नहीं सोचते। दीपक ले आते हो ; अन्धकार स्वतः विदूरित हो जाता है।

प्रकृति रिक्तता कहीं भी नहीं देखना चाहती,—मानसिक जगतमें भी नहीं !

अनभिलषित विचारोंको दूर करनेका एकमात्र उपाय यही है कि अभिलषित विचारोंसे मस्तिष्कको भरना आरम्भ कर दो। अपना ध्यान सदैव अभिलषित विचारोंपर केन्द्रित रखो !

इच्छा-शक्ति मानसिक जगत्में अकेली प्रभाव नहीं रखती, मस्तिष्कके साथ उसका संयोग कर दो ! फिर देखो तुम्हें किस आश्चर्यजनक रूपसे सफलता प्राप्त होती है।

तुम्हारी बौद्धिक चेतना सतत क्रियाशील है !

जैसा भोजन उसे मिलेगा, वैसी ही उसकी रूप-रेखा होगी और वैसे ही भोजनका उसका अभ्यास हो जायगा।

एक बार अभ्यास पड़ जानेपर फिर उसे दूर करना बड़ा दुष्कर हो जाता है !

अच्छे विचारोंका भोजन उसे दे-देकर उसकी रूप-रेखा ऐसी बना लो कि वह इस यात्रा-पथमें तुम्हारी सहायिका सिद्ध हो

अधिकांश जीवन-यात्री उसे विषाक्त भोजन देते हैं और फिर भी यह चाहते हैं कि उसकी कार्यकरी-शक्ति विवर्धित होती रहे—वह सदैव उन्हें सत्पथ प्रदर्शित करती रहे।

यदि तुम अपने मनको श्रेष्ठ और हितकर भोजन नहीं प्रदान करोगे तो तुम्हारा 'पशु' यह कार्य अपने हाथमें ले लेगा। और, फिर ?

फिर तुम्हारी सर्वोत्कृष्ट शक्ति तुम्हारे 'पशु' के हाथमें आ जायगी !

तुम अपने शत्रुके गुलाम वन जाओगे !

प्रकाश-पुत्र होकर भी तुम्हें अन्धकारित पथका पथिक वनना पड़ेगा !

सदैव अपने मनको सतेज और सुन्दर विचारोंका भोजन प्रदान करते रहो ताकि वह तुम्हारे यात्रा-पथमें तुम्हारा सहायक सिद्ध हो सके।

क्या जाने कितने ही जीवन-यात्री ऐसा न करनेके कारण सदाके लिये अन्धकारित गर्तमें पतित हो चुके हैं !

क्या तुम भी अपने भाग्य-देवताको रुलाना चाहते हो ?

क्रोधको यदि दूर करना चाहते हो तो इस वानकी जितनी भी चेष्टा करोगे कि तुम्हारा क्रोध दूर हो जाय उतना ही वह बढ़ता जायगा, क्योंकि तुम्हारा ध्यान क्रोध पर केन्द्रित हो जाता है। अतः उसे दूर करनेका सर्वोत्कृष्ट उपाय यह है कि तुम प्रेमके विचारोंको अपने मानस-प्रदेशमें सन्निविष्ट करना शुरू कर दो। क्रोधके विचार स्वतः दूर हो जायँगे।

मनोविज्ञानका यह एक अविसंवादित नियम है कि मनमें वे विचार अधिक वलपूर्वक उत्पन्न होते हैं जिनसे या तो प्रेम होता है या भय। अतः प्रज्ञाकी सहायतासे तुम समस्त अनभिलपित विचारोंके साथ घृणाके संवेदन सम्बद्ध करो। भयोत्पादक विचारोंके साथ मस्तीके !

जैसे, तुम्हारे मस्तिष्कमें वार-वार रोगी हो जानेके भयमिश्रित विचार उत्पन्न हो रहे हैं। तुम विचारोंकी शक्तिसे परिचित

होनेके कारण उन्हें दूर करनेकी चेष्टा कर रहे हो। किन्तु जबतक तुम भयभीत होते रहोगे, वे विचार कदापि दूर न होंगे, बल्कि द्विगुणित वेगके साथ उनका तुमपर आक्रमण होगा। अतः पहले मनमें यह भावना उत्पन्न करो कि वह रोग तुम्हें हो जायगा तो तुम्हारा कुछ भी बिगड़ नहीं सकता! तुम्हारे यौवनकी सर्वभक्षिणी ज्वालामें वह रोग अपने कीटाणुओंके साथ भस्मसात् हो जायगा या यह भावना उत्पन्न करो कि तुम पूर्ण स्वस्थ हो! तुम्हें रोग होना सृष्टिका एक नया आश्चर्य होगा।

इस प्रकारकी भावनाएं तुम मन ही मन वाक्योंकी आवृत्ति करते हुए उत्पन्न कर सकते हो, किन्तु वाक्योंकी आवृत्ति करते हुए तुम्हारा सारा ध्यान उनपर केन्द्रित होना चाहिए, अन्यथा अभिलषित परिणाम नहीं होगा।

वाक्योंके द्वारा यदि भावनाऐं उत्पन्न करनेमें असमर्थ रहो तो चित्रोंकी सहायता लो! कल्पना करो कि तुम्हारे चारों ओर स्वास्थ्य और शक्तिकी किरणोंका प्रसार हो रहा है!

यह कभी न भूलना कि भय और आत्म-अविश्वास तुम्हारी मानसिक शक्तियोंके दो प्रचण्ड शत्रु हैं!

अनभिलषित विचारोंके साथ प्रचण्ड घृणा उद्रिक्त करनेवाले विचारोंको सम्बन्धित करनेसे भी वे अनभिलषित विचार निष्क्रिय हो जाते हैं!

काम-वासनाके विचार इसलिये शक्तिशाली होते हैं कि उनके साथ सुखके विचार सम्बन्धित रहते हैं! कामुकताके विचारों

उन विरोधिनी शक्तियोंसे लोहा लेनेककी क्षमता तुम्हारे विचारमें तभी आ सकती है जब तुम उसे किसी दुर्दान्त अन्तर्वेगसे संयोजित कर देते हो!

अन्तर्वेग चाहे हितकर हो चाहे अहितकर, उससे संयोजित विचार अत्यधिक शक्तिशाली हो जाता है।

भय-मिश्रित विचारोंसे किस प्रकार जीवन-यात्रियोंका पतन-पथ प्रशस्त हुआ है, यह तुमसे अविदित नहीं।

प्रेम-मिश्रित विचारोंसे किस प्रकार अनेक जीवन-यात्रियोंका प्रगति-पथ प्रशस्त हुआ है, मैं समझता हूँ, यह भी तुम्हें ज्ञात ही है।

अनेकानेक व्यक्तियोंके अशक्त अंगोंसे विचारोंके द्वारा शक्तिका सन्निवेश नहीं हुआ, किन्तु विचारोंके अन्तर्वेगके साथ सयोजित होते ही वे अशक्त अंग कार्य करने योग्य हो गये!

एक व्यक्तिके पैरोंमें चलनेकी शक्तिका अभाव हो गया था! उस पैरको क्या जाने कितने प्रकारके लेपोंसे सशक्त करनेका प्रयास वह वर्षोंसे करता आ रहा था किन्तु कोई भी लाभ नहीं हो रहा था!

दस कदम चलनेके उपरान्त ही वह असह्य यंत्रणासे छटपटाने लगता था!

संयोगवश एक दिन उसे यह ज्ञात हुआ कि उसका एक परम प्रिय व्यक्ति विपक्षियोंके द्वारा उत्पीड़ित हो रहा है! यह सुनते ही वह दौड़ पड़ा और दस कदम चलने पर ही परिश्रान्त

एवं अशक्त हो जानेवाले उसके पैरमें सैकड़ों गजकी दूरी तक चलने की सामर्थ्य आ गयी !

तुमने सुना या देखा ही होगा कि शारीरिक शक्तिसे विरहित व्यक्ति भी प्रेम, भय या क्रोधसे आक्रान्त होनेपर अपूर्व शारीरिक शक्तिका परिचय देते हैं।

रणस्थलोमें संख्यामें न्यून होते हुए भी एवं शस्त्रास्त्रकी कमी होते हुए भी अनेकानेक बार केवल देशभक्तिके अन्तर्वेगके कारण ही ही पक्ष विशेषको विजय प्राप्त हुई है।

निपुण सेनापति युद्धके पहले केवल यही नहीं देखता कि उसके सैनिकोंके पास पर्याप्त शस्त्रास्त्र हैं या नहीं, अपितु वह यह भी देखता है कि उसके सैनिकोंमे कुर्बानीका कोई अन्तर्वेग जाग सका है या नहीं !

साधारण जनसमाज उनके पीछे दौड़ता है जो उसमें प्रचण्ड और अपराजेय अन्तर्वेग जगानेकी और उससे अपनी इच्छाके अनुकूल कार्य लेनेकी क्षमता रखता है !

हिटलर ऐसा ही व्यक्ति था !

उसे मनीषी किसी अवस्थामें भी नहीं कहा जा सकता। उससे कहीं बढ़चढ़कर मनीषी जर्मनीमें थे, किन्तु वहाकी जनता उसकी अन्धानुगामिनी बनी, इसका कारण यह था कि वह जनताके हृदयको देश-भक्तिके अन्तर्वेगसे आलोड़ित विलोड़ित करने की कलामें दक्ष था। उसकी वक्तृताओंसे आगकी लपटें निकलती थीं!

उसकी आरंभिक विजयका रहस्य भी उसके प्राण-प्रदेशमें निरन्तर आस्फालन करते रहनेवाले उन अन्तर्वेगोंमें था जिनसे उसके विचारोंको सदैव तूफानी शक्ति प्राप्त होती रहती थी।

अन्तर्वेगहीन व्यक्ति मृतक तुल्य है। वह जीवन-यात्रा-पथ पर चलता है किन्तु छाया-सा!

अन्तर्वेगसे तुम अपने विचारोंको संयोजित करके अपनी पथ-प्रशस्ति करो!

किन्तु अन्तर्वेगोंसे लाभ भी हो सकता है, हानि भी!

प्रेम, विश्वास प्रभृतिके अन्तर्वेग हितकर हैं; घृणा, भय प्रभृति के अहितकर!

अक्सर ऐसा होता है कि अनीप्सित अन्तर्वेग तुम्हारे ऊपर आक्रमण कर देते हैं और तुम लाख प्रयत्न करके भी ईप्सित अन्तर्वेगोंको नहीं सजग कर पाते।

भयकी भावनाके उत्पन्न होनेपर तुम उससे जितना मुक्त होने का प्रयास करते हो, उतना ही तुम्हारा भय विवर्धित होता जाता है।

इसका कारण यह है कि तुम्हारा विचार उस समय उसपर केन्द्रित रहता है!

कोई प्राणमयी कविता गुनगुनाना शुरू कर दो या कोई दूसरा ऐसा कार्य आरम्भ कर दो जिससे उस अहितकर अन्तर्वेग का कोई सम्बन्ध न हो!

जिस प्रकार विचारोंको परिवर्त्तित करके तुम कार्योंको परिवर्तित कर सकते हो, उसी प्रकार कार्योंको परिवर्त्तित करके तुम अन्तर्वेगोंको भी परिवर्त्तित कर सकते हो !

मानवी मनोविज्ञानका यह एक अकाट्य नियम है।

विशिष्ट अन्तर्वेगोंसे विशिष्ट शारीरिक क्रियाएँ सम्पन्न होती हैं। उन शारीरिक क्रियाओंकी आवृत्तिसे वे विशिष्ट अन्तर्वेग जो उन शारीरिक क्रियाओंको उत्पन्न किया करते हैं, जाग जाते हैं।

जो बनना चाहते हो,—अपने मन प्राणको जिस साँचेमें ढालना चाहते हो, उसके अनुसार आचरण करना आरंभ कर दो ' तुम्हारे हृदय पर उन आचरणोंका पर्याप्त प्रभाव पड़ेगा और तुम्हारा हृदय अपने अन्तर्वेगोंके द्वारा तुम्हारे मस्तिष्कके विचारोंको प्रभावित करेगा !

दार्शनिक होनेकी दुर्दान्त इच्छा जिस व्यक्तिकी है, वह दार्शनिक-सा आचरण आरंभ कर दे, उसमें कुछ अंशोंमें दार्शनिकता के आनेकी पूर्ण सम्भावना है।

अन्तर्वेगोंपर तुम्हारा अधिकार नहीं, किन्तु शारीरिक क्रियाओं पर तो है। कोई भी ऐसी शारीरिक क्रिया न होने दो जिससे अनिष्टकर अन्तर्वेगोंकी उत्पत्ति हो।

एक फ्रेंच रमणीने इस मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तकी सत्यताको स्वीकार करते हुए लिखा है—"मुझे अपनी मित्र मण्डलीमे अविवेकितापूर्ण बातें कहनेमे एवं उन्मादिनियोंका-सा आचरण करनेमें बड़ा सुख मिलता था। मैं सदैव नई-नई योजनाएं बनाती थी

और मित्रोंके सामने पागलोंका-सा आचरण करके उन्हें प्रसन्न करनेका प्रयास किया करती थी। किन्तु इसका परिणाम यह हुआ है कि अब मैं कभी भी वास्तवमें उन्मादसे एवं विचित्रतापूर्ण भावनाओंसे इस प्रकार आक्रान्त होती हूँ कि मैं उनका विरोध नहीं कर सकती।

बहुत-से व्यक्ति इस मनोवैज्ञानिक सत्यको न जानते हुए भी प्रकृतिके द्वारा प्रेरित होकर इस प्रकारका आचरण करते हैं जिससे इस सिद्धान्तकी परिपुष्टि होती है। अनेकानेक कायर व्यक्ति जब भयानक स्थितिमें अपनेको पाते हैं और देखते हैं कि साहसी बने बिना काम नहीं चलनेका तो शरीरको कड़ा करके, वक्षस्थलको ऊपर उठाकर कठोर स्वरमें बोलना आरम्भ कर देते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि उनमें साहस आ जाता है।

अक्सर आवारा लड़के जब निशीथके तिमिरमें किसी ऐसे स्थानसे घरकी ओर लौटते हुए गुजरते हैं जहाँ उन्हें भयोत्पादक दृश्य दिखलायी देता है या जिसके सम्बन्धमें वे भयोत्पादक बातें सुने हुए होते हैं तो वे सीटी बजाकर या गाना गाकर कुछ इस प्रकारकी क्रियाएं करना प्रारम्भ कर देते हैं जिससे यह प्रकट होता है कि भयकी भावना उसके हृदयको छू भी नहीं सकती है। और परिणाम भी यह होता है। साहसकी सूचिका शारीरिक क्रियाएं प्राणोंमें साहसका सञ्चार कर देती हैं।

अफ्रिकाके वनचरोंको जब किसी शत्रु-दलपर आक्रमण करना होता है तो पहले वे तरह-तरहसे अपने शस्त्रोंका अट्टहास करते हुए

परिचालन करते हैं,—क्रूरतापूर्ण स्वरमे गरजते हुए उछलते-कूदते हैं ताकि युद्धोपयोगी आवेश उनमें सञ्चारित हो जाए! मनोविज्ञानका यह सत्य प्रकृति उन्हें सिखला देती है।

आशा है, तुम्हें इतने उदाहरणोंके द्वारा अब इसका विश्वास हो गया होगा कि शारीरिक क्रियाएँ उन संवेदनोंको जागृत करती हैं, जिनके प्रकट होनेपर वे स्वतः सम्पन्न हुआ करती हैं!

अतएव जब कभी किसी अहितकर अन्तर्वेगसे आक्रान्त हो तो उसके विरोधी अन्तर्वेगको लाकर उसका विनाश करनेके लिये विरोधी अन्तर्वेगको प्रकट करनेवाली शारीरिक क्रियाएँ करना आरंभ कर दो।

चिन्ताका आक्रमण यदि तुम पर हो और हृदय नानाविधि प्रहारोंसे चीखने लगे तो इसका सर्वाधिक सरल उपाय यही है कि तुम मस्तीकी अवस्थामें जो कार्य करते, उन्हें आरम्भ कर दो। धीरे-धीरे स्वतः मस्ती आने लगेगी।

जिस अन्तर्वेगको लाना चाहो, कल्पना करो कि वह तुममें आ गया है और फिर उसके सूचक शारीरिक आचरणोंमे संलग्न हो जाओ।



[२७]

लेकिन केवल फूल तोड़नेसे काम नहीं चलेगा !

शाखाओंको छिन्न-भिन्न करनेसे भी कुछ नहीं होगा !

तुम्हें जड़को नष्ट करना होगा !

हानिकारक विचारोंको, संसारके प्रति जो तुम्हारा भ्रान्त दृष्टि-कोण हो गया है उसका फल समझो !

एक हानिकारक विचारको दूर कर डालोगे तो दूसरा उत्पन्न होगा !

दूसरेको दूर करोगे, तीसरा होगा !

इस प्रकार एकके बाद एक उत्पन्न होता ही रहेगा और तुम्हारा सारा यात्रा-पथ इन्हींसे संघर्ष करनेमें नष्ट हो जायगा ! तुम कुछ भी न कर सकोगे !

'विचारोंको सुधारो !' ऐसा उपदेश जीवन-यात्रियोंको बहुत दिया गया है, किन्तु क्यों सुधारो और कैसे सुधारो, इसपर उप-देष्टा मौन रहते हैं।

कैसे सुधारो, इसपर तो नहींके बराबर ही कहा गया है !

विचारोंपर नियत्रण करना उतना सरल नहीं, जितना प्रतीत होता है !

जिन लोगोंने इसका प्रयास किया है, वे जानते हैं इसकी कठिनाइयाँ !

अर्जुनने इसकी कठिनाई समझकर ही योगिराजसेकहा था— 'चंचलं हि मनः कृष्ण प्रमाथि वलवद्दृढ़म् तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्' सचमुच, विचारोंपर नियंत्रण करनेके लिये असाधारण नैपुण्यकी आवश्यकता है।

विचार अन्तर्विटपीकी शाखाके पुष्प हैं!

एक पुष्पको उखाड़कर फेक दोगे तो क्या दूसरा नहीं उत्पन्न होगा!

यदि उन पुष्पोंको सदाके लिये उपवनसे वहिर्गत करना चाहते हो तो विटपीकी जड़की ओर देखो।

शाखाओंको छिन्न-भिन्न करनेसे भी कुछ न होगा!

तुम्हारे हृदय-उपवनमें तुम्हारी असावधानीसे अनेकानेक ऐसे वृक्ष उत्पन्न हो गये हैं जो अपने विषाक्त पुष्पोंके द्वारा उपवनके वातावरणको सुरभित पुष्पोंके अस्तित्वके लिये भी अनुपयुक्त वना रहे हैं।

होश सम्हालो!

इनकी जड़की ओर ध्यान दो!

जबतक तुम्हारा वर्त्तमान दृष्टि-कोण नष्ट नहीं होता है, ये विष-विटपी भी नष्ट नहीं होंगे!

तुम्हारा वर्त्तमान दृष्टि-कोण इनकी वृद्धिके लिये वड़ा हितकर है! उसके द्वारा तुम इनकी जड़ोंमे अज्ञातरूपसे नीर-सिञ्चन कर रहे हो।

संसारको ऊपर उठकर देखो!

यह तुम्हारा यात्रा-पथ तुम्हारा चिन्तन आवास स्थल नहीं है !

तुम यहाँ परदेशी हो !—बहुत दूरसे आये हुए !

ऊँचे-ऊँचे महलोंकी मायाका तुम्हें क्या करना है !

आज यहाँ हो, कल वहाँ।

क्यों किसीको अपने आकर्षणका केन्द्र बना रहे हो! छलनाओंसे भरे हुए इस देशमें कोई इस योग्य भी तो नहीं जिसे आकर्षणका केन्द्र बनाया जा सके !

अपने स्वेद-कणोंसे पथ-पाषाणोंका उत्ताप प्रशारित करते हुए कदम आगे बढ़ाते चलो।

इसीमें तुम्हारा गौरव है।

कौन है यहाँ तुम्हारा, जिसके लिये यों रह-रहकर बेचैन हो उठते हो !

परदेशी युवक। तुम इस ग्रहपर अपनी शक्तियोंका प्रदर्शन करने आये हो !

कहीं ऐसा न हो कि भ्रान्त दृष्टिकोणके कारण तुम्हारी शक्तियाँ अपना जौहर जी खोलकर न दिखला सकें !

मायाने आज तुम्हें अपना बन्दी बना लिया है किन्तु तुम अपनी प्रचण्ड दीप्तिके द्वारा उसे यह दिखला दो कि तुम क्या हो !

वह भी एकबार तो कम-से-कम सिहर ही उठे।

शरीर तुम्हारा पार्थिव यन्त्र है ! आसक्ति न उत्पन्न करते हुए इससे अपना काम लो !

तुम अमर हो। मरणधर्मा तुम्हारा शरीर है, तुम नहीं !

इस प्रकारका दृष्टिकोण तुम्हारे आन्तरिक शत्रुओंको हतवीर्य कर डालेगा !—तुम्हारे उपवनके विष-विटपियोंको शीघ्र ही धराशायी कर देगा !

दृष्टिकोणको नानाविध विचारोंका उद्‌गमस्थल समझो।

संसारके प्रति जिस व्यक्तिका जैसा दृष्टिकोण होता है, उसके विचार भी वैसे ही होते हैं !

व्यापारियोंका-सा दृष्टिकोण रखकर दार्शनिकों के-से विचार तुम अपने मस्तिष्कमें नहीं उत्पन्न कर सकते !

उच्चकोटिके तेजोमय विचार तभी उत्पन्न हो सकते हैं जब तुम्हारा दृष्टिकोण तेजस्वितापूर्ण होगा !



[२८]

स्मरण-शक्ति और कल्पना-शक्तिका जो यह वरदान मानवों को मिला है, उससे जो पूरा लाभ नहीं उठाता, वह आत्महन्ता ही है!

स्मरण-शक्ति न रही होती तो मानव-जाति पशुओंसे भी नीचे गिर गयी होती। मानव-जातिका साराका सारा साभ्यतिक विकास इसीपर आधारित है। प्रगतिका आधार यही शक्ति है, अन्यथा प्रत्येक क्षण मानवको प्रयासी होना पड़ता।

बौद्धिक जगत्का आधार स्मरण-शक्ति ही है! शेष समस्त शक्तियाँ इसपर अवलम्बित हैं।

कोई कितने ही ग्रन्थोंका अध्ययन क्यों न कर ले, उसकी स्मृतिके जागरूक क्षेत्रमें जो अध्ययन विद्यमान है, वही जीवन-पथमें उसका सहायक सिद्ध हो सकता है!

कल्पना-शक्ति स्मरण-शक्तिके बादकी चीज है।

स्मरण-शक्तिका सम्बन्ध अतीतसे है, कल्पना-शक्तिका भविष्यसे।

प्रत्येक क्षण वर्त्तमानका रूप ग्रहण करते ही अतीतके चरणों पर निवेदित हो जाता है।

अपने जीवनकी बीती हुई घटनाओंको याद तो करो। वापस बुला सकते हो उन्हें!

इस विराट सृष्टिमें समय ही एक ऐसी वस्तु है, जिसका प्रत्यावर्त्तन असम्भव है !

कितनी त्वरित गतिसे बीतता जाता है, यह !

अभी-अभी दो जीवन-यात्री एक पर्वत-शिलापर बैठे-बैठे सांध्य गिरि-शिखरोंकी रक्तिमा देख-देखकर विमोहित हो रहे थे। एक दूसरेके प्रति अशेष प्रणयकी भावनाएँ दोनोंकी अन्तर्सरसीमें मीठी-मीठी वीचियाँ उत्पन्न कर रही थीं ! एकके क्रोड़में सिर रख कर दूसरेने जो प्रणयकी सुषमासे पूर्ण गीत गाये, वे प्राभातिक किरण-राजिके द्वारा वनान्त-पथके स्पर्शित होने तक समीरण को बेसुध करते रहे !

लेकिन न अब वे जीवन-यात्री ही यहाँ हैं, न वह रसभरी निशा ही !

वह दृश्य क्या मिथ्या था !

स्मृतिके अतिरिक्त उसका अस्तित्व अन्यत्र कहीं भी है ?

स्मृति ही जीवन है !

तुम्हारी स्मृति नष्ट कर दी जाय तो जरा सोचो तो, क्या परिणाम होगा !

अब तककी अनुभूतियाँ कहाँ तिरोहित हो जायँगी।

घरकी ओर दिनभरकी कमाईके बाद लौटते हुए राहीकी स्मृति यदि नष्ट कर दी जाय तो क्या वह घर लौट सकेगा !

मानवोंकी यह शक्ति यदि नष्ट हो जाय तो यह ग्रह विचित्र रूप ग्रहण कर ले !

अतीतके अन्धकारित प्रदेशमें स्मृति ही मशालका काम करती है!

इसे सदैव ज्योतित रखो!

स्मरण-शक्तिकी तीव्रता इस यात्रा-पथमें तुम्हारे लिये महान् उपकारिणी सिद्ध होगी।

स्मरण-शक्ति क्या है इसका निश्चयपूर्वक कोई भी उत्तर मनोवैज्ञानिक जगत् अभी तक नहीं दे सका है। दे सकेगा भी नहीं!

जब तक आत्माके अस्तित्वपर और उसकी कार्यकरी शक्तियों पर मनोवैज्ञानिक जगत् का विश्वास नहीं हो जायगा, तबतक किसी भी मानसिक व्यापारके सम्बन्धमें निश्चयपूर्वक मनोवैज्ञानिक जगत् कुछ भी नहीं कह सकेगा!

स्मरण-शक्ति आत्माकी शक्ति है!

किन्तु मस्तिष्करूपी यंत्रका इसमें बहुत बड़ा हाथ है, जबतक आत्मा इस ग्रहपर है!

यहांके पदार्थोंका अवबोध इस यन्त्रके अभावमें आत्माको इस वातावरणमें नहीं हो सकता!

इसी कारण मृत्युके समयकी मनोभावनाका इतना महत्व है। मृत्यु-कालमें संसारासक्त रहनेवाला व्यक्ति इस मोह-कारासे कभी भी मुक्त नहीं हो सकता।

इस ग्रहके मायामय वातावरणसे बाहर निकल जाने तक आत्माओंकी शक्ति कार्यकर नहीं होती!

शायद इसी कारण Pychical Reaseich Society वालोंके पास शरीर-विरहित आत्माओंके जो सन्देश आये हैं, वे इतने बाल्यसुलभ हैं।

श्री मॉरिस मेटरलिंक जैसे सांशयिकोंने उन सन्देशों की बाल्य-सुलभताके कारण उनकी वास्तविकता पर ही जो सन्देह किया है, उसका भी यही उत्तर है।

इस ग्रहमें प्रवेश करने वाली अत्माकी कुछ-कुछ वैसी ही हालत हो जाती है, जैसी इस ग्रहके निवासियों की क्लोरोफार्म सूंघनेपर।

अन्य ग्रहोंकी स्मृतियाँ तुम्हारे अन्दर नहीं है, ऐसी बात नहीं है, किन्तु उन्हें सजग इस मायामय वातावरणमें नहीं किया जा सकता!

क्लोराफार्म सूंघनेवालोंकी स्मृति कुछ समयके लिये नष्ट होती है, चिरकालके लिये नहीं!

और, स्मृति चिन्ह नष्ट नहीं होते, उनकी क्रियाशीलता नष्ट होती है।

समझे!

स्मरण शक्ति तुम्हारी बहुत तीव्र है! तुम जो कुछ देखते या सुनते हो, उसका अंकन तुहारे मस्तिष्कमें बड़ी अच्छी तरह होता है किन्तु तुम इसके नियमोंसे अभिज्ञ न होनेके कारण इससे पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकते।

मैं तुम्हें कई बार कह चुका हूँ कि संशय बौद्धिक शक्तियोंका सबसे प्रबल शत्रु है।

स्मरण-शक्तिके लिये तो वह सर्वथा मारात्मक सिद्ध होता है।

विश्वास स्मृत्तिका प्राण-सखा है!

इच्छा-शक्तिको मस्तीके साथ संयुक्त करके किसी चीजको स्मरण करनेकी चेष्टा किया करो। इस संयोजनका आधार अपनी सफलतामें पूर्ण विश्वास हो। अविश्वासका आगमन होते ही असफलताका आगमन हो जायगा।

बाह्य संसारसे तुम्हारा सम्बन्ध ज्ञानेन्द्रियोंके द्वारा होता है। जो कुछ तुम सुनते हो, जो कुछ देखते हो या जो कुछ सूघते, या स्पर्श करते हो, वह मस्तिष्कमे विशिष्ट अंकन उत्पन्न करता है।

ये अंकन जितने ही स्पष्ट होंगे, स्मृति उतनी ही अच्छी होगी।

बालकोंकी स्मृति क्यों अच्छी होती है! इसलिये कि उनके मस्तिष्कमें जो अङ्कन होते हैं, वे अत्यधिक स्पष्ट होते हैं। बाह्य संसारसे ज्ञानेन्द्रियोंके द्वारा सम्बन्ध स्थापित करनेकी उनकी क्रिया भी प्रकृतिके नियमोंके अनुकूल होती है।

सम्बन्ध स्थापित करनेकी यह क्रिया अवधानके अभावमें ठीक नहीं हो पाती।

अंकन मस्तिष्कमें स्पष्टतापूर्वक उसी चीजका होगा जिसपर तुम्हारा ध्यान केन्द्रित होगा। अधिकांश व्यक्तियोंकी अवधान केन्द्रीकरणकी शक्ति अत्यधिक दुर्बल होती है, फलतः उनकी स्मरण शक्ति भी अप्रभावित नहीं रहती!

अवधान स्मृतिका पिता है और अवधानका पिता अभिरुचि।

अभिरुचिसे जो अवधान होता है, वह अधिक शक्तिशाली होता है और अधिक स्थायी भी, फलतः उससे जो अंकन मस्तिष्क में होते हैं वे काफी स्वस्थ होते हैं!

इसी कारण एक खिलाड़ी खेलकी प्रतिद्वन्दिताओंको जितनी अच्छी तरह याद रख पाता है, उतना एक दार्शनिक नहीं। फुट-बौलका कोई खेल वे दोनों एक ही समयतक देखकर आयें, लेकिन वह खिलाड़ी जितनी अच्छी स्मृति उस खेलकी रखेगा, उतनी वह दार्शनिक नहीं रख सकता। इस विभेदका कारण अवधानका पार्थक्य है, और अवधानके पार्थक्यका कारण रुचिका पार्थक्य।

सिनेमा-प्रेमी किसी देखे हुए खेलकी घटनाओंको जितनी अच्छी तरह याद रख पाता है, उतनी अच्छी तरह उसी बौद्धिक शक्तिसे समन्वित वह व्यक्ति नहीं जिसे सिनेमासे प्रेम नहीं!

दर्शनसे प्रेम रखने वाले व्यक्ति यदि यह बतला सकते हैं कि पास्कलने अमुक परिच्छेदमें यह लिखा है और निट्शेने अमुक परिच्छेदमें यह, तो इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं!

महीने भर तक किसी कपड़ेकी दूकानमें रहकर भी वे यह न बता सकेंगे कि किस आलमारीके कपड़ेकी क्या कीमत है, जो कि कपड़ेके व्यापारीके लिये साधारण-सी बात है।

तो कहनेका तात्पर्य, जिसकी स्मृतिको सशक्त करना चाहते हो, उसके प्रति प्रेम अपने हृदयमें जगाओ—अभिरुचि उत्पन्न करो।

यदि सीधे तरीकेसे उस विषयमें अभिरुचि नहीं उत्पन्न कर सकते हो, तो घुमा फिराकर करो।

जैसे, एक व्यक्ति प्राणिविज्ञानका अध्ययन करना चाहता है किन्तु इसमें उसका मन बिल्कुल नहीं लगता। ऐसी अवस्थामें उसे चाहिये कि प्राणि-विज्ञानके प्रति अपनेमें अभिरुचि उत्पन्न करे। यदि ऐसा करनेमें वह असमर्थ हो तो उसे चाहिये कि वह प्राणि-विज्ञान सीख जानेपर उसके द्वारा जो लाभ होंगे उनपर विचार करे। अभिरुचि न उत्पन्न होनेका कारण यह है कि उसका ध्यान सदैव प्राणि-विज्ञानकी कठिनाइयोंपर ही ज्ञात या अज्ञात कारणोंसे केन्द्रित रहने लगता है। कठिनाइयोंकी कल्पना अभिरुचि और अवधानके लिये सर्वथा घातक है।

अभिरुचिके अभावमें बलपूर्वक भी किसी विषयमें अवधान केन्द्रित किया जा सकता है किन्तु वह स्थायी नहीं हो सकता, साथ ही मस्तिष्कको परिश्रान्त भी वह जल्दी कर डालता है।

अतः तुम्हें चाहिये कि तुम उन विषयोंमें जो तुम्हारी पथ-शस्तिके लिये हितकर हों, अधिकाधिक अभिरुचि उत्पन्न करो। तुम्हारे संस्कार जब-तब इस नवीन अभिरुचिके उत्पादनमें बाधक सिद्ध होंगे किन्तु हितकर वाक्योंकी मानसिक आवृत्तिकी वह

प्रणाली, जिसपर मैं अन्यत्र प्रकाश डाल चुका हूँ, तुम्हारी सहायता करेंगी।

ध्यानको एक विषयमें केन्द्रित करनेकी शक्ति अन्य असाधारण शक्तियोंको उन्मुक्त करनेकी क्षमता रखती है।

ध्यानका महत्व योग-साधनामे असामान्य है।

अधिक समय तक जिस वस्तुका ध्यान किया जाता है, मनुष्य उसके अनुरूप होने लगता है!

किन्तु अधिक देर तक किसी वस्तुका ध्यान तभी सम्भव है, जब वह चीज अन्तर्वेगोंसे सम्बधित हो जाती है। चाहे वह अन्तर्वेग हितकर हो या अहितकर।

धनको प्यार करनेवाला व्यक्ति इसीलिये जब आसनपर प्रभुका ध्यान करने वैठता है तो प्रभुके स्थानपर वहां तिजोरियाँ दिखलायी देने लगती हैं।

और प्रभुको प्यार करनेवाला व्यक्ति जब गद्दीपर व्यापार करने वैठता है तो उसे तिजोरियोके स्थानपर आराध्य दिखलायी देने लगते हैं।

जिस वस्तमें तुम्हारी अभिरुचि न हो, किन्तु उसको स्मृतिके क्षेत्रमें प्रविष्ट करानेकी आवश्यकता प्रवल हो, उसे कर्त्तव्य-पालन के अन्तर्वेगसे सम्बन्धित करो।

अन्तर्वेगोंकी शक्ति असामान्य है।

मस्तिष्कको अनवरत एवं अश्रान्त गतिवेग उन्हींसे प्राप्त होता है।

अभिरुचिके अभावमें भी यदि कोई अन्तर्वेग तुम्हारे कार्यसे सम्बन्धित हो गया तो दीर्घकाल तक तुम्हारा ध्यान स्खलित नहीं होनेका !

अन्तर्वेगोंमें कर्त्तव्य-पालनका अन्तर्वेग तुम्हारे लिये अधिक शक्तिशाली होना चाहिए।

युवक हो तुम !

कर्त्तव्यकी बलिवेदी पर मुसकराते हुए अपने समस्त सुखोल्लासको निवेदित करनेमें ही यौवनकी गौरव-गरिमा सन्निहित है !

जिस विषयमें तुम्हारी अभिरुचि न उत्पन्न हो रही हो, उसे उन विषयोंसे सम्बन्धित कर दो, जिनमें तुम्हारी अभिरुचि हो !

पुनरावृत्ति स्मरण-शक्तिका दूसरा नियम है। बार-बार आवृत्ति होनेसे अङ्कन अधिकाधिक सशक्त होते जाते हैं।

पुनरावृत्तिके द्वारा किसी वस्तुकी स्मृतिको सशक्त करनेकी पद्धति बहुत पुरानी है। प्राचीन कालमें इसी पद्धतिका अवलम्बन करके लोग वस्तुविशेषसे सम्बन्धित अपनी स्मृतिको कार्यकर बनानेका प्रयास किया करते थे।

प्राचीनकालमें शिक्षाकी प्रणाली भी इसी मनोवैज्ञानिक नियम पर अवलम्बित थी। एक ग्रन्थको स्मृति-क्षेत्रमें प्रविष्ट करनेके लिये उसकी नियमित रूपसे आवृत्तियां की जाती थीं।

सुना है, मिश्रके केयरो विश्वविद्यालयमें अभी भी यह नियम है कि कोई भी विद्यार्थी वहाँ सारीकी सारी कुरानको कण्ठाग्र किये बिना दाखिल नहीं हो सकता।

और इसको वे पुनरावृत्तिके द्वारा ही सम्पन्न करते हैं।

किन्तु पुनरावृत्तिका यह नियम समयसाध्य है। इससे अधिक अच्छा तरीका है सम्बन्ध-स्थापनाका। नूतन स्मृति-चिह्नको पुरातन स्मृति-चिह्नोंके साथ सम्बन्धित करनेकी यह क्रिया पुनरावृत्तिकी अपेक्षा अधिक उपयोगिनी है क्योंकि इसमें समयकी बहुत बचत होती है।

मस्तिष्कको सम्बन्ध स्थापनाका यंत्र कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी। कोई भी स्मृति-चिह्न एकाकी नहीं रह सकता। मस्तिष्कमें प्रवेश पाते ही वह अन्य स्मृति-चिह्नोंके साथ संश्लिष्ट हो जाता है।

सम्बन्ध-स्थापनाकी यह क्रिया अधिक समान स्मृति-चिह्नोंमें होती है! किसी पाटल पुष्पकी कोमल पंखड़ियोंको देखकर कामुकको अपनी प्रेयसीके कपोलोंकी जो याद हो आती है, उसमें यही नियम काम करता है।

सर्वथा असमान स्मृति-चिह्नोंमें भी सम्बन्धि-स्थापना होती है! प्रकाशको देखकर अन्धकारके, रूपको देखकर रूपहीनकी स्मृतिके जागरणमें यही नियम काम करता है।

सान्निध्यका भी स्मृति-चिह्नोंकी सम्बन्ध स्थापनामें बहुत महत्वपूर्ण हाथ है! चित्रको देखकर चित्रकारकी, पुत्रको देखकर

पिताकी, पुष्पको देखकर पल्लवको स्मृति इसी नियमके अनुसार सम्पन्न होती है।

जो जीवन-यात्री सम्बन्ध- स्थापनाके इन तीन नियमोंसे अभिज्ञता प्राप्त करके उनसे पूरा-पूरा लाभ उठाता है वह ज्ञानके क्षेत्रमें अप्रतिहत गतिसे आगे बढ़ता जायगा ज्ञानका आधार स्मृति है और स्मृतिके लिये ये सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं !

नूतनको प्राचीन स्मृति चिह्नसे सम्बन्धित करनेके सर्वश्रेष्ठ उपाय यह है कि नूतन विषय पर अधिकाधिक विचार करो। उसके विभिन्न रूपों पर चिन्तन करो। इसका परिणाम यह होगा कि विभिन्न प्राचीन स्मृति चिह्नोंसे वह नूतन स्मृति-चिह्न स्वतः स्तम्भित होता जायगा और जितने अधिक स्मृति चिह्नों से जितने अधिक स्पष्ट रूपमें वह नूतन स्मृति चिह्न संश्लिष्ट होगा, स्मृति उतनी ही स्पष्ट होगी।

जैसे तुम्हें कहीं वक्तृता देनी है और उसके लिये तुमने सात प्रकरण सोचकर रखेहैं उन्हें यदि लिखकर बोलते हो तो वक्तृतामें अगति आती है। और यदि ऐसे ही बोलना आरम्भ कर देते हो तो कोई आवश्यक नहीं है कि तुम सब प्रकरणोंको याद ही रखो दो-चारके छुट जानेकी सम्भावना रहती है। साथ ही उनके क्रममें विपर्यय आने की तो पूरी सम्भावना रहती है।

पुनरावृत्तिका मनोविज्ञान सम्मत नियम यहाँ तुम्हारी सहायता करेगा अवश्य लेकिन समय भी इसमें अधिक अतियापित होगा, साथ ही यह भी उतना निर्भर करने योग्य नहीं।

किन्तु सम्बन्ध-स्थापनाका जो नियम है, वह कभी भी तुम्हें धोखा नहीं दे सकता। हाँ, सम्बन्ध-स्थापना ठीक तरहसे होनी चाहिये।

अपनी दस विशिष्ट स्मृति-तालिकाएँ रखो! स्मृति-मंदिरके रुद्ध कपाटोंके खोलनेमें ये सदैव और समस्त क्षेत्रोंमे तुम्हारी प्रभूत सहायता करेंगी!

गिरि-शिखर, राकेश, यामिनी, तारक, पाटल, सरिता, पुलिन, तरणी, तूफान और हर्म्य ये दस तालिकाएँ तुम रखो! इनका प्रयोग यों करो।

पहले अपने प्रकरणोंको संज्ञा दो। ऐसी संज्ञा दो, जिसे याद करते ही तुम्हें साराका सारा प्रकरण याद हो आये। फिर उस संज्ञाको तालिकाओंसे सम्बद्ध करो। जैसे तुम्हें भाषणके आरम्भमें जनताकी थोड़ी प्रशंसा करनी है। तुम उस प्रकरणको प्रशंसाकी संज्ञा दो? इस संज्ञाके स्मरण होते ही तुम्हें साराका सारा प्रकरण स्मरण हो जायगा! अब इस संज्ञाको गिरि-शिखरसे सम्बन्धित करो। कल्पना करो कि गिरि-शिखर पर पहुंचकर एक व्यक्ति सारे पथचारियोंका प्रशंसाभाजन हो रहा है! गिरि-शिखरमें और प्रशंसामें नानाविध प्रणालियोंसे सम्बन्धकी स्थापना करो। इसी प्रकार मान लो, दूसरा प्रकरण है, कुछ महापुरुषोंकी चर्चा करना। इसको संज्ञा दो राकेशकी! अब यों सोचो कि राकेशकी ज्योत्स्ना के ही समान महापुरुषोंकी उपस्थिति चित्ताह्लादिनी होती है। कहने का तात्पर्य, राकेश और महापुरुषोंमें तरह-तरहसे सम्बन्ध-

स्थापना करो, ताकि राकेश याद आते ही तुम्हें महापुरुष याद हो जाय।

इस प्रकारकी सम्बन्ध-स्थापनासे तुम्हें केवल इसी क्षेत्रमें ही नहीं, अपितु अन्य क्षेत्रोंमें भी प्रभूत सहायता मिलेगी।

ग्रन्थोंका अध्ययन करते समय उनपर विचार करते हुए आगे बढ़ोगे तो उनमें वर्णित विषयोंको अधिक अच्छी तरह याद रख सकोगे। चिन्तन करनेसे एक तो ध्यान अच्छी तरहसे पठनीय विषयमें केन्द्रित रहता है, फलत. अंकन मस्तिष्कमें भलीभाँति हो जाता है, साथ ही नानाविध सम्बन्धोंकी स्थापना भी स्वतः होती जाती है।

स्मरण-शक्तिको अभ्यासके द्वारा ऐसा रूप दे दिया जा सकता है कि देखनेवाले आश्चर्यसे दाँतों तले उँगली दबा लें।

मेरे एक यूरोपियन मित्रने एक दिन एक व्यक्तिकी अभ्यासार्जित स्मरण-शक्तिपर प्रकाश डालते हुए जो बतलाया उसे सुन कर तुम विस्मयान्वित हो उठोगे, किन्तु बात बिल्कुल सच्ची है। बेलजियमके एक विद्वान्की आंखोंमें कुछ विकार आ गया था और चिकित्सकोंने यह कह दिया था कि अदूरभविष्यमें वे देखने की शक्तिसे सदाके लिये हाथ धो बैठेंगे। उस मेधावी विद्वानको इस भविष्यवाणीसे जो कष्ट हुआ, उसकी कल्पना वे ही कर सकते हैं जो अध्ययनकी महत्ता अच्छी तरह समझते हैं। पुस्तकोंका संसर्ग सदाके लिये छूट जायगा, यह कल्पना उन्हें अतिशय उत्पीड़ित करने लगी। आनेवाले दिवसोंकी विपुल व्यर्थता उनके रोम-रोम

को क्रंदनमय करने लगी। किन्तु उनके हृदयको उस नैराश्य तिमिरमें आशाकी दीप-माला दिखलायी दी और उन्होंने अपनी स्मरण-शक्तिको अभ्यासके द्वारा विकसित करना शुरू किया। कुछ दिवसोंके उपरान्त उनकी दृष्टि सर्वथा नष्ट हो गयी। संसारकी समस्त रंगीनियाँ एकमात्र श्याम रंगमें लुप्त हो गयीं। किन्तु उनका अध्ययन एवं भाषण-कार्य स्थगित न हुआ। उनका सहकर्मी उन्हें पुस्तकालयसे लाकर पुस्तकें पढ़-पढ़ कर सुनाता था और स्मृतिके बलपर वे वक्तृताएँ दिया करते थे। उनकी वक्तृताएँ पहलेकी अपेक्षा अधिक सुन्दर और प्रभावोत्पादक होने लगीं। वे अपने सहकर्मीको पुस्तकें लानेका आदेश देते हुए कहा करते थे—'अमुक आलमारीसे अमुक लेखककी अमुक पुस्तक लाओ और उसका अमुक परिच्छेद पढ़कर सुनाओ। उस परिच्छेदको सुननेके उपरान्त उसे पूरा-का-पूरा मुखस्थ सुना देते थे'।

स्मरण-शक्तिके ऐसे चमत्कार अन्यत्र भी देखने-सुननेमें आये हैं। अल्पातिअल्प कालमें ही विदेशीय भाषाओंको सीखकर उनमें ओजस्विताके साथ अपनी भावनाओंकी अभिव्यक्ति करनेवाले अनेक व्यक्ति हुए हैं। योरोपकी समस्त भाषाओंपर असाधारण अधिकार रखने वाले एक पाश्चात्य विद्वान्से एक बार यह पूछे जानेपर कि आपने इस छोटे-से जीवनमें यह योग्यता कैसे प्राप्त कर ली, उन्होंने जो उत्तर दिया था, वह विचारणीय है। उन्होंने कहा था कि मैं अपने मस्तिष्कको सदैव प्रफुल्लित रखता हूं। कभी भी उसपर अनुचित दबाव नहीं डालता।

अनुचित दबाव न डालनेका यह तात्पर्य नहीं है कि तुम उसे कार्यमें न लगाओ। कार्यमें न लगानेसे स्वयं तो बरबाद होगा ही तुम्हें भी ले बैठेगा। मस्तिष्कसे पूरा काम लो लेकिन तरीकेके साथ। इसीमें सफलताका रहस्य सन्निहित है।

राजा भोजकी सभामें कई ऐसे पण्डित थे, जो नये श्लोकोंको एक ही बार सुनकर पुनःसुना दिया करते थे।

ये सब बातें तनिक भी आश्चर्य जनक नहीं! तुम्हारी स्मरण-शक्ति इन लोगोंसे कहीं अधिक चमत्कार उत्पन्न कर सकती है!

स्मरण-शक्तिके विकासके साथ ही कल्पना-शक्तिका भी विकास करो!

आज तुम्हें जो कुछ नजर आ रहा है, वह किसीकी कल्पना शक्तिका ही परिणाम है।

अपनी निरीक्षणात्मक शक्तिका पूरा उपयोग करो ताकि तुम्हारी कल्पनाको यथोचित खाद्य प्राप्त हो सके। कल्पनाके खाद्यका प्रबन्ध निरीक्षणात्मक शक्तिके द्वारा ही होता है! जहाँ अन्य जीवन-यात्रियोंको शून्यके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं दिखलायी देता वहाँ मनीषीके देखनेके लिये काफी वस्तुएँ होती हैं! अपने चर्म चक्षुओंके साथ अपने प्रज्ञा-चक्षुओंको संयुक्त करके संसारकी समस्त वस्तुओंको देखोगे तभी तुम्हारा देखना सच्चे अर्थोंमें देखना हो सकेगा।

मस्तिष्कमें जो चिह्न रहते हैं, उनको स्मृति उसी रूपमें तुम्हारे सामने लाकर रखती है किन्तु कल्पना उन्हें सर्वथा नवीन रूप प्रदान कर देती है!

इसी शक्तिको विकसित करके महान् कलाकारोंने अपनी चिरनूतन कला-कृतियोंकी सृष्टि की है! इसीका समुचित उपयोग करनेसे मेघ-दूतम्, अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मैकबेथ, फाउस्ट जैसे अमर काव्योंकी रचना हुई है!

काव्य-सर्जना ही इस शक्तिके विकासके अभावमें असम्भव नहीं है अपितु वैज्ञानिक या दार्शनिक प्रगति भी नहीं हो सकती!

आज ये जो रेडियो, वायुयान, टेलीफोन प्रभृति वस्तुएँ दिखलायी दे रही है, वे वैज्ञानिकोंकी कल्पना-शक्तिके ही परिणामस्वरूप आविष्कृत हुई हैं। दूरवर्त्ती ज्योतिष्कोंके आकारके सम्बन्धमें आज जो कुछ भी ज्ञान, ज्योतिर्विज्ञान-जगत्को उपलब्ध हो सका है, इसी कल्पना-शक्तिके बलपर!

कल्पना-शक्तिका दुरुपयोग उतना ही घातक सिद्ध होता है जितना उपयोग हितकर! कल्पना-शक्तिके दुरुपयोगने अनेकानेक प्रतिभाशाली व्यक्तियोंको उन्मादियोंको श्रेणीमें रख दिया। कितनोंका जीवन-दीपक सदाके लिये निर्वापित कर दिया!

कल्पना-शक्तिकी पतंग जीवन-गगनमें जितनी ऊंची उड़ा सको, उड़ाओ, किन्तु विवेककी डोर सदैव तुम्हारे हाथमें रहे।

विवेककी डोरके अभावमें कल्पना तुम्हें पथभ्रष्ट कर सकती है!

कल्पना-शक्तिका समुचित विकास तुम्हें इस यात्रा-पथके इतिहासमें अमर कर देगा।

संसारके समस्त महान् कार्य इसीके द्वारा सम्भव हुए हैं!

कल्पना-शक्ति अनुकरण नहीं जानती साधारण मानव समुदाय अनुकरण करनेवाला होता है। फलतः महान् कार्य इस पृथ्वी पर बहुत कम सम्पन्न होते हैं।

अभी तुम अपनी इस शक्तिको ठीक तरहसे उपयोगमें नहीं ला रहे हो। जिस समय कल्पना-शक्तिका समुचित उपयोग करना आरम्भ कर दोगे, तुम्हारी प्रगति तूफानोंसे होड़ लेने लगेगी।

कल्पना-शक्ति प्रज्ञा-शक्तिसे संयुक्त होकर संसारकी रूपरेखा वदलती रहती है।

कल्पना-शक्ति सर्जना-शक्तिसे समन्वित होकर अदृश्य लोकों को वास्तविकतासे जीवन-यात्रियोंको परिचित कराती है।

स्मरण-शक्तिके समुचित विकास एवं उपयोगके द्वारा तुम मानव-जातिकी अतीतकालीन ज्ञानराशिके द्वारा अपने मस्तिष्कको शक्तिसम्पन्न कर सकते हो, कल्पना-शक्तिके द्वारा भविष्यके तिमिरावृत प्रदेशमें किरणें निक्षिप्त कर सकते हो।

स्मृतिका अञ्चल-छोर पकडकर अतीतके अनुभव तुम्हें इस यात्रा-पथमें सदैव पथच्युति एवं पतनसे वचाते रहेंगे। जिस चीजकी ठोकर एकबार तुम या अन्य कोई भी जीवन-यात्री खा चुका है, कम-से-कम उसकी ठोकर पुनर्बार तुम्हें वे नहीं खाने देंगे।

कल्पना-शक्ति तुम्हें नित्यनूतन संघर्ष-पद्धतियाँ प्रदान करती रहेगी। प्रज्ञाके समुचित उपयोगके द्वारा तुम उनसे अपने आन्तरिक एवं वाह्य शत्रुओंके छक्के छुड़ा सकोगे!

औरोंके लिये जो अदृश्य है, अगोचर है, उसे तुम्हारी प्रज्ञा इसकी सहायतासे देख सकेगी और इस प्रकार तुम्हारी शक्ति निशिवासर विवर्धित होती चलेगी।

भविष्यमें कब क्या हो सकेगा, इसे साधारण जीवन-यात्री नहीं जान सकते! किन्तु इस शक्तिका समुचित उपयोग तुम्हें भविष्यमें होनेवाली अनेकानेक प्रकारकी घटनाओंके सम्बन्धमें बतला सकेगा?

'जिनके सम्बन्धमें अभिज्ञता प्राप्त करनेमें काफी परिश्रम करना पड़ता है,—वर्षों गवेषणाएँ एवं ऊहापोह करना पड़ता है, उनका ज्ञान इसके द्वारा क्षणोंमें प्राप्त हो सकता है —जसे, घनान्धकारमें विद्युत् चमककर अदृश्य पदार्थोंको दिखला दे!

कल्पना-शक्ति उस समय अधिक विस्मयोत्पादक रूपमें काम करती है जब कोई हितकर अन्तर्वेग मस्तिष्कके ज्ञानतन्तुओंको प्रभावित करता रहता है।

उस समय कल्पना-विहगको दूरवर्त्ती ग्रहोंकी अदृश्य शक्तियाँ अपनी ओर खींचती हैं और उसके पंखोंपर वह ज्ञान लिखकर उसे वापस धरित्रीकी ओर प्रेषित करती हैं जो लाख सिर पटकनेपर भी इस ग्रहमें समुपलब्ध नहीं हो सकता'

कल्पना-विहगके पंखोंमें इतना ऊपर उड़नेकी यह शक्ति नाना-विध रूपोंसे उपलब्ध होती है, किन्तु उनमें सौन्दर्य और संगीतका स्थान सर्वोपरि है!

कल्पना-शक्तिके अभावमें जीवन-यात्री अपने पथका अन्धकार कदापि दूर नहीं कर सकता !

स्मरण-शक्तिका इतना विकास कर लो कि तुम्हारा और मानव-जातिका अतीत तुम्हारे सामने स्पष्ट हो ! तुम्हारे लिये यह कलङ्ककी बात होगी यदि एक ही प्रकारकी गलती तुमने दुबारा की !

और, कल्पना-शक्तिका प्रज्ञाकी सहायतासे इतना विकास कर लो कि भविष्यका अन्धकारित प्रदेश तुम्हारे लिये सदैव दीपमालिकाओंसे ज्योतित रहे !

फिर मस्तकको-गर्वोन्नत किये हुए, होठोंपर मुसकानकी दीप्ति लिये हुए, मार्गके कुश-कण्टकोंको रौंदते हुए, खाइयोंको लांघते हुए आगेकी ओर बढ़े चलो !

कौन रोक सकेगा तुम्हें फिर !

इन शक्तियोंका दुरुपयोग न करना !

अनेकानेक व्यक्ति स्मरण-शक्तिका ऐसा दुरुपयोग करते हैं कि उनका जीवन एक शाप बनकर रह जाता है ! अतीतकी भूलोंसे लाभ उठाते हुए वर्त्तमानकी पथ-प्रशस्ति करनेके स्थानपर, वे सदैव अतीतकी भूलोंके सम्बन्धमें सोचनेमें ही व्यस्त रहते हैं ! 'यदि ऐसा न हुआ होता तो आज हम कितने सुखी होते !' इस प्रकारके वाक्य सदैव उनके मुखसे विनिर्गत होते रहते हैं ! वर्त्तमान और भविष्य उनके लिये अस्तित्वहीन हो जाते हैं और अतीत ही एक कठोर सत्य !

वे अतीतके ज्ञानसे नूतन कार्य करनेकी प्रेरणा प्राप्त करनेके स्थानपर आंसुओंका वरदान पाते हैं—वह वरदान, जो कविताके अतिरिक्त अन्य समस्त क्षेत्रोंमें शाप ही सिद्ध होता है।

वे अतीतके अनुभवोंकी मशालसे वर्त्तमान और भविष्यको ज्योतित करनेके स्थानपर उन्हें जलाना आरम्भ कर देते हैं और इतना जलाते हैं कि उनका साराका सारा जीवन जलकर खाक हो जाता है!

उदासी और अन्तर्वेदना उनकी चिर सहचरियाँ बन जाती हैं! उनका सारा उल्लास नष्ट हो जाता है। उनके जीवन-क्षितिज को सदैव तम-श्यामल वारिदमालाएँ ग्रसित करनेको तैयार दीखती हैं!

अश्रुपात करनेके अतिरिक्त और दीर्घश्वास लेनेके अतिरिक्त अन्य किसी भी कार्यके योग्य वे नहीं रह जाते!

वर्त्तमानके नहीं, वे कुहेलिकासे आच्छन्न अतीतके व्यथामय अधिवासी बन जाते हैं।

जीवन उनको देखकर आंसू बहाता है, मरण मुसकराता है!

अतीतकी स्मृतिका दुरुपयोग उनके लिये सर्वथा घातक सिद्ध होता है! उनका जीवन आंसुओंकी एक सुदीर्घ कहानी बनकर रह जाता है!

हृदय सदैव उन दिवसोंकी यादका आघात सहते-सहते जर्जरित हो जाता है, जो सृष्टिके इतिहासमें कदापि नहीं लौट सकते!

कल्पना-शक्तिका भी इसी प्रकारका दुरुपयोग अनेकानेक व्यक्तियोंके द्वारा होता है। स्मरण-शक्तिका दुरुपयोग करनेवाले जिस प्रकार अतीतको अपने वर्त्तमानका मित्र न बनाकर शत्रु बना लेते हैं, उसी प्रकार ये अपने भविष्यको प्रतिक्षण अपना शत्रु बनाते रहते हैं!

तरह-तरहकी आसन्न विपत्तियोंकी कल्पना उन्हें सदैव संत्रस्त करती रहती है।

काल्पनिक रोगोंसे आक्रान्त व्यक्तियोंकी संख्या कम नहीं है! ये लोग सदैव चिकित्सकोंकी खोजमें भटकते रहते हैं। और इनका शरीर नानाविधि औषधियोंका भण्डार बनता जाता है।

भय-मिश्रित कल्पनासे रोग बादमें सचमुच हो जाते हैं और परिणाम यह होता है कि भविष्यको ज्योतित करनेकी क्षमता रखनेवाली यह शक्ति जीवन-यात्रीको ही अन्धकारित गर्त्तमें गिराने लगती है।

वरदान मूर्खोंकी मूर्खताके कारण यदि शाप सिद्ध होते हों तो वह दोष न वरदानका है न वरदान देनेवालेका! दोष मूर्खका है।

मुझे पूर्ण विश्वास है, तुम जीवनके इस यात्रा-पथमें सदैव विवेकितासे काम लोगे और अदृश्यशक्तियोंको अपने ऊपर हँसने का मौका कभी न दोगे।

तुम्हें कमी किस बातकी है युवक !

स्वस्थ-शरीर तुम्हारे पास है ! यौवनकी आग्नेय शक्तियाँ हैं !—शक्तिशाली मस्तिष्क है !

जिन लोगोंने तुम्हारे मस्तिष्कको अशक्त कहा है, वे अविवेकी हैं। क्या जानें वे तुम्हारे मस्तिष्ककी शक्तियोंको !

ठीक तरहसे अपनी शक्तियोंको सञ्चालित न करनेके कारण ही तुम्हारी बौद्धिक किरणें संसृति-पथको अभी तक आलोकित नहीं कर पायी हैं !

अपनी शक्तियोंको यदि तुम ठीकसे नियोजित करो तो वे विस्मयसे पागल हो जायें जो आज तुम्हारी बौद्धिक शक्तियोंकी अवमानना कर रहे हैं।

भीतर कितनी ही ज्योति क्यों न हो यदि लैंपका शीशा स्वच्छ न होगा तो क्या वह ज्योति अंधकारको दूर कर सकती है !—क्या उस ज्योतिसे कोई भी परिचित हो सकता है ?

तुम अपनी बुद्धिकी ज्योतिको भी इसी तरह अवरुद्ध किये हुए हो ! कुसंस्कारोंके मैलको साफ कर डालो ! फिर देखो कितनी दीप्ति आ जाती है !

तुम वैज्ञानिक क्षेत्रमें कदम रखो, तो आईस्टाइन हो सकते हो।

दार्शनिक क्षेत्रमें कदम रखो तो प्लेटो हो सकते हो,—कपिल और कणाद हो सकते हो।

कविताके क्षेत्रमें कदम रखो तो कालिदासके समान अनेकानेक कवियोंके पथद्रष्टा बन सकते हो !

राजनीतिक क्षेत्रमें कदम रखो तो मकियावेली सरीखे राजनीतिज्ञोंको परास्त कर सकते हो !

तुम अपने प्रति इतनी अनास्था कबसे रखने लगे अभिनव जीवन-यात्री ! शक्तियोंके स्रोत हो तुम !

कल्पना-शक्ति, तर्कना-शक्ति, धारणा-शक्ति और इच्छा-शक्ति ये चार शक्तियाँ ही बौद्धिक महलके चार स्तंभ हैं।

और ये चारों शक्तियाँ प्रचुर मात्रामें तुममें विद्यमान हैं। अविश्वास और संशयके द्वारा उन्हें हतवीर्य न करो !

संशय बौद्धिक शक्तियोंका सबसे बड़ा शत्रु है।

अभ्यासके द्वारा अपनी बौद्धिक शक्तियोंको नूतन तेज और दीप्ति प्रदान करो !

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि तुम्हारे अधिकांश कार्य आदतोंके कारण हो रहे हैं !

बुरी आदतें जिस प्रकार प्रगति-पथमें कण्टकोंकी वर्षाके साथ ही साथ अन्धकारका भी आमंत्रण करती हैं, उसी प्रकार अच्छी आदतें पुष्पोंकी अनवद्य वर्षाके साथ ही साथ आलोक किरणोंका आनयन।

जितनी हितकर आदतें उत्पन्न करोगे, उतनी ही सुविधाएँ बढ़ेगी !—तुम्हारी शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों का उतना ही कम अपव्यय होगा ।

साधारण कार्योंको सुचारु रूपसे सम्पन्न करनेकी जब आदत पड़ जाती है तो वे कार्य स्वतः होने लगते हैं, –मस्तिष्कको उन्हें सम्पन्न करनेमें श्रम नहीं करना पड़ता, फलत· उसकी वह शक्ति जो उस साधरण कार्यमें नष्ट होती, महत्वपूर्ण कार्योंके संपादनके लिये बच जाती है ।

समस्त प्रगतियाँ अभ्यासपर आधारित हैं ।

मानव-जीवनके समस्त विभिन्न स्वरूपों का निर्धारण विभिन्न प्रकारके अभ्यासों के कारण हुआ है !

जब तुमने लिखना सीखना शुरू किया था, उस समयकी अवस्थासे और आजकी अवस्थासे तुलना करो !

उस समय तुम्हारी बौद्धिक शक्तियाँ अक्षरों के लेखनमें नियोजित रहती थीं ! तुम लिखते समय अन्य विषयों पर विचार कदापि नहीं कर सकते थे !

आज तुम्हें लिखनेका इतना अभ्यास हो गया है कि तुम्हारा मस्तिष्क अक्षरों के सम्बन्धमे न सोच कर महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार करता रहता है और लेखनी स्वतः ही परिचालित होती रहती है ।

नवीन भाषाएँ सीखते समय शब्दों के लिये मस्तिष्कको कितना प्रयास करना पड़ता है किन्तु उस भाषाके अच्छी तरह

सीख लेनेके उपरान्त शब्द स्वतः ही विचारोंके पीछे-पीछे दौड़े चले आते हैं।

जो व्यक्ति साइकिल चलाना सीखना आरंभ करता है, वह उस समय कोई विषय नहीं सोच सकता। उसकी समस्त बौद्धिक शक्तियाँ साइकिल चलानेके कार्यमें ही नियोजित रहती हैं।

किन्तु उसका जब अभ्यास हो जाता है तो फिर साइकिल चलाते समय वह चाहे जो सोचे, चाहे जो गाना गाये। उसकी बौद्धिक शक्तियाँ मुक्त रहती हैं।

इसीसे कहता हूं, अभ्यासके द्वारा अपनी शक्तियोंको अधिकाधिक उन्नत स्तरपर ले जाओ।

जितने अच्छे अभ्यास डाल लोगे, तुम्हारा प्रगति-पथ उतना ही प्रशस्त होता चलेगा। तुम्हारी शक्तियाँ उतनी ही कम नष्ट होंगी।

जिस प्रकार एक पत्रको किसी स्थानपर मोड़ देनेसे पुनः वह उसी स्थानपर मुड़ना चाहता है, वही अवस्था इस पार्थिव यन्त्रकी भी है।

एक बार किसी कार्यको करनेमें कठिनाई होती है किन्तु दूसरी बार उसको करनेमें पहली बारसे कुछ कम कठिनाई होती है और कई बारकी आवृत्तियोंके उपरांत तो वह कार्य सर्वथा सरल हो जाता है। मस्तिष्कको उससे कोई प्रयास नहीं करना पड़ता।

अभ्यासका यह प्राकृतिक नियम जिस प्रकार वरदान है उसी प्रकार यह शाप भी सिद्ध होता है।

अभ्यासके द्वारा यदि जीवन-यात्री अपनी अग्रगतिकी शक्तिको सहस्रगुणित करनेमें समर्थ हो सकता है तो इसके द्वारा वह चरणोंमे लौह शृङ्खलाएँ भी डाल सकता है !

एक वार ये लौह शृङ्खलाएँ पड़ गयीं तो फिर उन्हें तोड़नेमें जीवन-यात्रीकी समस्त शक्तियोंकी परीक्षा हो जाती है।

मैं जानता हूं, असावधानीके कारण तुमने अनेकानेक ऐसी आदतें अपनेमे डाल ली हैं जो रह रहकर तुम्हारी गतिको अवरुद्ध करने लगती हैं !

मैं यह भी जानता हूं कि तुमने उन्हें नष्ट करनेका भी प्रयास किया है किन्तु सफलता तुम्हें नाममात्रको भी नहीं मिली है !

एक वार कोई अहितकर अभ्यास पड़ जाता है तो उसे दूर करना सचमुच वहुत कठिन है ! किन्तु असम्भव नहीं !

मैं तुम्हे पहले वतला चुका हूँ कि अन्तर्वेगकी शक्ति असाधारण है ! जो कार्य प्रज्ञा-शक्तिसे वर्षोंमे सम्पन्न नहीं हो सकते, उन्हें अन्तर्वेग क्षणोंमे सम्पन्न कर डालता है !

बिल्वमंगल ब्राह्मणके गृहमें उत्पन्न हुआ था अत. वहां उसे भक्ति एवं वैराग्यकी बातें सुनने और पढ़नेको न मिलती हो, यह असम्भव है। दर्शन शास्त्रके अध्ययन करनेका भी मौका उसे मिला ही होगा। किन्तु नारी-रसके आस्वादनको आदतपर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा ' भक्ति और वैराग्यके समस्त उपदेशोंका प्रहार अभ्यास और पाशविक प्रवृत्तिकी लौह शृंखलाओंको तोड़नेमे असमर्थ हुआ ! किन्तु रूपाजीवाके कतिपय वाक्योंने जो

अन्तर्वेग उसके प्राणोंमें जागृत किया, उसने कितनी त्वरित-गतिसे उसके वासनात्मक संस्कारोंकी जंजीरें तोड़कर उसमें वैराग्य उत्पन्न कर दिया, यह अन्तर्वेगकी शक्तियोंसे अनभिज्ञ व्यक्तिके लिये सर्वथा विस्मयकर है। अन्तर्वेगके प्रचण्ड वज्राघातसे अभ्यास आहत हो गया और उसकी शक्तियाँ भी म्रियमाण हो चुकी थीं किन्तु फिर भी वह पूर्णतया शक्ति विहित नहीं हो सका था!—पूर्णतया उसका विनाश नहीं हो पाया था! फलतः धन-पतिकी रूपवती पत्नीको देखकर पुनः उसकी कामुकता बलवती हो उठी और वैराग्यकी भावनाको अशक्त करके उसके रोम-रोममें मन्मथके मधुपानकी लालसा सन्निविष्ट होने लगी। वहाँ रूपा-जीवाके वाक्योंसे जगाये गये अन्तर्वेगने पुनः द्विगुणित शक्तिके साथ अपने शत्रुपर प्रहार किया और उसका जो परिणाम हुआ, वह सर्वविदित है। अपने चक्षुओंसे इस मायालोककी रंगीनियों को देख-देखकर मुग्ध होनेवाला और मन्मथके केशर-शरका स्वयं आह्वान करनेवाला विल्वमंगल सुरदास बनकर भक्ति-रससे ओतप्रोत काव्यकी सर्जना करने लगा!

अभ्यासोंकी अपराजेय शक्तिके साथ यदि शीघ्रातिशीघ्र लोहा ले सकता है तो वह अन्तर्वेग ही है।

महान् स्वार्थी व्यक्ति भी जब अन्तर्वेगसे आक्रान्त होते हैं तो परोपकारके ऐसे-ऐसे कृत्य कर बैठते हैं जिन्हें देखकर सदाके परोपकारी भी दातोंतले उँगली दबा लेते हैं!

अपने स्नेह पात्रोंको खतरेमें देखकर महान् कायर व्यक्तियों की भी कायरता नष्ट हो जाती है और वे साहसिकोंको भी विस्मयान्वित कर डालनेवाले संकटोंको मोल लेनेमें हिचकते नहीं।

अन्तर्वेगोंके जागृत हो जानेके कारण ही अनेकानेक लुटेरे सन्त बन गये हैं!

कहनेका तात्पर्य, अभ्यासोंकी सामूहिक प्रचण्ड शक्तिके सामने अच्छी तरह जागृत किया गया अन्तर्वेग बड़े मजेमें टिक सकता है और यदि उसे स्थायित्व किसी प्रकार दे दिया गया तो वह चिरागत संस्कारोंको भी पराजित करनेमें समर्थ हो सकता है!

अन्तर्वेग किस प्रकार जगाये जा सकते हैं और उनसे किस प्रकार अपनी पथ-प्रशस्ति की जा सकती है, इस सम्बन्धमें तुम्हें बतला चुका हूं!

तुम्हारे लिये अहितकर आदतोंको दूर करनेके लिये जो अन्तर्वेग सबसे अधिक हितकर होगा, वह है मंजिलका प्यार।

जब किसी बुरी आदतको दूर करनेका कार्य आरम्भ करो तो सबसे पहले प्रज्ञाकी सहायतासे उसकी समस्त हानियोंपर अधिकाधिक गम्भीरतापूर्वक विचार करो। उस आदतके प्रति जितनी प्रचण्ड घृणाका उद्रेक अपने मानसमें कर सको, करो!

कल्पना करो कि तुम्हारे जीवन-यात्रा पथमें वह एक प्रचण्ड शाप बनकर तुम्हारे पास आयी है!

बुरी आदतके प्रति उत्पन्नकी गयी घृणा तुम्हें उससे परित्राण पानेमें बड़ी सहायता प्रदान करेगी।

बुरी आदतोंसे परित्राण पानेके लिये तुम्हें तीन बातोंपर विशेष ध्यान देना होगा। पहली बात तो यह है कि उनके विरुद्ध तुम्हारा युद्ध अच्छी तरहसे सन्नद्ध होनेके उपरान्त ही होना चाहिये अन्यथा पराजयकी सम्भावना अत्यधिक है और जिस प्रकार मानवी शत्रु विजयी होनेपर अधिक शक्ति-शाली हो जाते हैं उसी प्रकार ये आन्तरिक शत्रु भी। अतः सदैव इसी बातका प्रयास करना चाहिये कि युद्ध आरम्भ होनेके बाद इन शत्रुओंकी लाशपर ही विश्राम किया जाय।

युद्ध आरम्भ करनेके पहले यदि तुम कुछ ऐसे प्रबन्ध कर लो जिससे परिश्रान्त होनेपर भी तरह-तरहसे आहत होनेपर भी तुम रणस्थली छोड़कर भागो नहीं।

इस प्रकारके युद्ध आरम्भ करना सरल है किन्तु आहत होकर भी उनमें विजय प्राप्तितक संलग्न रहना बहुत ही कठिन।

अनेकानेक व्यक्ति अपनी कतिपय बुरी आदतोंकी हानि समझकर उन्हें दूर करनेकी प्रतिज्ञा करते हैं किन्तु दो-चार दिनों के उपरान्त ही उनकी प्रतिज्ञा शून्यमें विलीन हो जाती है—जल वाष्पकी तरह।

इस प्रकारके प्रयासोंसे लाभके स्थानपर हानि होती है। अपने प्रति अविश्वास तो बढ़ता ही है, साथ ही बुरी आदतोंकी विवर्धित हो जाती है।

एक व्यक्तिको मान लो, देरतक सोनेकी आदत पड़ गयी है! वह इसे छोड़ना चाहता है औरब्राह्म मूहूर्त में ही जागनेकी स्वास्थ्यप्रद आदत डालना चाहता है तो उसे चाहिये कि वह अपनी इस प्रतिज्ञाको अपने उन समस्त मित्रोंसे कह दे जो ब्राह्म मूहूर्त में जागकर वायु सेवनके अभ्यासी हो चुके हैं! साथ ही यह भी कसम खाले कि ब्राह्म मूहूर्त में वह शय्या त्याग न कर सका तो उस दिन सिर्फ फलाहार करके रहेगा!

इस प्रकार वह रणस्थलीसे भागनेके समस्त द्वार अपने लिये बंद कर देगा और तब उसकी पराजय असम्भव हो जायगी!

उसे यह भी चाहिये कि वह दो एक ऐसे मित्रोंको ठीक कर ले जो उसे ब्राह्म मूहूर्त में आकर जगा दिया करें।

अन्य बुरी आदतोंको दूर करनेके लिये भी इस प्रकारकी अनेकानेक तैयारियाँ की जा सकती हैं!

दृढ़ निश्चय यहाँ भी सबसे बड़ी चीज है! अधिकाश व्यक्ति बुरी आदतोंको दूर करनेका निश्चय तो करते हैं किन्तु उस निश्चय में दृढ़ताका अभाव रहता हैं और इसी कारण पुरानी आदतोंका एक ही आघात उनके निश्चयको कम्पित कर डालता है!

बुरी आदतके विपक्षमें और अच्छी आदतके पक्षमें जितनी ही वस्तुएँ हों, सबोंके साथ सम्बन्ध-स्थापनाका प्रयास करो! परिपार्श्विक वातावरण यदि बुरी आदतोंके पक्षमें हो तो उस वातावरणको परिवर्त्तन कर दो।

बुरी आदतोंकी शक्तियोंके साथ तुम्हारी नई आदतें तभी लोहा ले सकेंगी जब उनके साथका सैन्य-दल शक्तिशाली भी होगा और संस्थामें भी काफी होगा !

दूसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम कभी भी किसी अवस्था में भी पुरानी आदतकी आवृत्ति न होने दो ! एक बार उसे दूर भगाकर यदि तुमने क्षण भरके लिये भी पास आने दिया तो प्रवञ्चित हो जाओगे।

वह एक बार फिर अनेक बार हो जाता है !

'एक बार करके फिर सदाके लिये छोड़ दूंगा। इतने दिनोंके बाद यदि एक बार फिर करूंगा तो क्या हो जायगा !' इस प्रकार के वाक्य शैतानके द्वारा प्रमोदित है ; अन्तर्देवता के द्वारा नहीं ! उनसे सदा सावधान रहो !

पर्वत-शिखरकी ओर चढ़ता हुआ पथी यह सोचकर अपने कदमोंको ढीला नहीं करता कि एक ही बार तो वह अपने कदमों को इतनी देरकी चढ़ाईमें ढीला कर रहा है! क्योंकि वह जानता है कि दूसरा परिणाम इसके लिये बहुत ही भयावह सिद्ध हो सकता है और वह एक बार की भूल उसके सारे परिश्रमको नष्ट कर सकती है !

इस 'एक बारमें क्या होता है।' के प्रलोभन ने क्या जाने कितने व्यक्तियोंकी बुरी आदतोंको पहलेकी अपेक्षा अधिक बल प्रदान किया है और उनसे परित्राण पानेकी आशापर सदाके लिये तुषारपात हो गया है !

तीसरी महत्वपूर्ण बात यह है कि तुम सदैव यह सोचते ही न रह जाओ कि तुम्हें अपनी बुरी आदतोंसे परित्राण पाना है! शीघ्रातिशीघ्र उनके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दो!

युद्धकालमें यह कभी न भूलना कि तुम एक ऐसे शत्रुके साथ युद्ध कर रहे हो, जो कूटनीतिमें तुमसे कहीं आगे है। कब किस समय किस प्रकार उसका आक्रमण तुमपर हो जायगा, कुछ ठीक नहीं।

अतः सदैव सावधान रहनेकी आवश्यकता है!

अपने शत्रुकी शक्तिकी गरिमा पर विचार करते हुए कहीं निराश न हो जाना। निराशा तुम्हारे लिये लज्जाजनक होगी!

तुम शक्तियोंके केन्द्र हो।

केवल दोष तुममे यही है कि तुम अपनी शक्तियोंका ठीक तरहसे उपयोग करना नहीं जानते!

शक्तिके इस अविवेकितापूर्ण उपयोगके ही कारण तो ये बुरी आदतें तुममें उत्पन्न हो गयी हैं जिसके कारण तुम्हारी अग्रगति इतनी अतिमन्द हो रही है!

---

[३०]

देखो, रुको मत !

इन आँधियोंको वृक्षपर झेलते हुए मेरे साथ बढ़े चलो !

मैं तो अब अधिक दूर तुम्हारे साथ जाऊँगा नहीं ! तुम्हें एकाकी ही आगेके संकटोंका सामना करना पड़ेगा !

मेरी बातें ध्यानपूर्वक सुनते चलो ! इन्हें भूलना मत !

यही समय है जबकि तुम अपने भविष्यका निर्माण कर सकते हो !

यही समय है, या तो तिमिर-देशमें तुम्हारे लिये स्थान निर्मित हो या आलोकके देशमें ।

या तो आज, या फिर कभी नहीं ।

कल कभी नहीं आता !

जीवन कलका नाम नहीं है, आजका नाम है ।

सदैव आते रहने वाले आजको ही जीवन कहा जाता है ।

अपनी त्रुटियोंके दूरीकरण का प्रयास अभी से आरम्भ कर दो ।

अभी नहीं, तो कभी नहीं !

अपनेको इस योग्य बनाना अभीसे आरम्भ कर दो कि तुम्हें देखकर अन्य जीवन यात्री श्रद्धासे अवनत हो जायें !—तुम्हारा अस्तित्व प्रकाश-पुञ्ज बन जाय !

त्याग और तपस्याकी महिमासे तुम अभी उतने प
नहीं हो पाये हो, इसीलिये रह-रहकर इस पथके कांटे तुम्हें
दे जाते हैं! किन्तु जब इनकी महिमाको अच्छी तरह
जाओगे और तुम्हें यह अच्छी तरह विदित हो जायगा कि
विलास एवं ऐश्वर्यका जीवन किस महा-भयंकर कुम्भी प
ओर ले जानेवाला है तब तुम ऊँचे-ऊँचे महलोंकी ओर दे
भी नहीं चाहोगे!

युवक अपना होश सम्हालो! चेतनापर मायाने य
तम-श्यामल आवरण डाल रखा है, इसे प्रज्ञाकी शक्तियोंके
विदीर्ण कर डालो!

यह आवरण ममताका रूप धरकर जीवन-यात्रियोंको
भ्रमित करता रहता है!

ममताका वन्धन वड़ा मीठा होता है युवक! किन्तु वह
किस कामकी जो क्षणोंमें ही कटुतामें पर्यवसित होनेवाली हो

वह क्षीर-पात्र किस कामका जिसके भीतर गरल
पड़ा हो!

इस मृहकी घृणामयी ममतासे बचो!

यह ममता तुम्हें कहीं का न रखेगी!

तोड़ डालो इन समस्त घृणित वन्धनोंको! तुम दूर
राही हो! तुम्हारा इनसे क्या सम्बन्ध!

मैं यह भी जानता हूं, मानव दुर्बलताओंसे पूर्णतया मुक्त नहीं हो सकता—कम-से-कम इस पार!

किन्तु वह अपनी दुर्बलताओंको पराभूत न करके यदि उन्हें पुचकारता है और उनका दास बन जाता है तो क्या यह उसकी आत्मद्रोहिता नहीं है।

ऐसे आत्मद्रोही न बनो!

पारिपार्श्विक वातावरण यदि तुम्हें अपना दास बनाये हुए है,—यदि तुम्हारे कुसंस्कार तुम्हें सदैव नाच नचाते रहते हैं —यदि तुम अपनी प्रज्ञाको सदैव औरोंके द्वारा आहत होता देखकर भी मौन रहते हो और उसका प्रतिकार नहीं करते तो क्या यह कम लज्जाकी बात है!

मैं चाहता हूँ तुम्हारे द्वारा नरक-लोकमें स्वर्गिक किरणोंका प्रसार हो!

मैं चाहता हूँ तुम ज्योतिर्पिण्ड बनो!—अन्धकारकी मूर्त्तियोंके दासानुदास नहीं!

मैं चाहता हूँ, तुम इस पृथ्वीपर किसी दूरवर्त्ती ज्योतिर्मय लोककी देदीप्यमान याद बनकर रहो!—मृत्तिकाके पुतले बनकर नहीं!

मैं चाहता हूँ, दुर्भाग्य तुम्हें छूकर सौभाग्य बन जायें!

मैं चाहता हूँ, तुम्हारा कर-स्पर्श शापको वरदानमें परिणत कर दें!

मैं तुम्हें इस युगके ज्योतिके रूपमें देखना चाहता हूं!

मैं नहीं चाहता कि तुम उस ओरके उन सहस्रों जीवन-यात्रियोंकी तरह इस यात्रा-पथपर चलते चलो और एक दिन मरणके तम-श्यामल अंचलकी हवासे तुम्हारा दीपक निर्वापित हो जायें।

सुन रहे हो मेरी बातें।

इस राहमें मैं तुम्हारे साथ इतनी दूरतक आया हूँ, और कुछ दूर अभी और जाऊँगा, इसमे मेरा जो समय लगा है कहीं वह व्यर्थ न चला जाय।

कहीं तुम्हें छोड़कर जब मैं वापस लौटने लगूँ तो पथ-पार्श्ववर्त्ती वद्रुमोंके विहंगम आपसमें कानाफूसी करते हुए यह न कहने लगें कि आज मैंने एक ऐसे युवकके प्राणोंमे बल भरनेका प्रयास किया है जो प्राणहीन है।—जड़ है।

---

[३१]

मैं नहीं जानता, किसका प्यार तुम्हारे नेत्रोंको रह-रहकर अश्रु-मौक्तिकसे शृंगारित कर डालता है!

प्यार इस विश्वकी सर्वाधिक पवित्र वस्तु है।

मैं भी किसीको प्यार करता हूँ।

मेरा अन्तर्व्योम भी किसीकी स्मृति-चन्द्रिकासे निशिवासर ज्योतित रहा करता है।—मेरा मानस-चकोर भी किसीकी छवि-ज्योत्स्नाके लिये तरसा करता है!

लेकिन, तुम्हें मालूम नहीं, मैं किसे प्यार करता हूँ।

तुम नहीं जानते, किसके किरण-निर्झर चरणोंपर मेरा जीवन पुष्प निवेदित हुआ है।

उसे एक बार देख लो तो फिर किसीको देखना न चाहो।

उसकी वाणी एक बार सुन लो तो फिर विश्वकी मधुरतम स्वर-लहरी सुननेको तुम्हारी इच्छा न हो।

उसका श्वास-सौरभ यदि एक बार तुमतक आ जाय तो फिर पारिजात-काननके सर्वाधिक श्री सम्पन्न सुमनोंके सौरभसे तुम्हें विरक्ति हो जाय।

उसका एक स्पर्श अन्तर्वीणामें युग-युगतक झंकार उत्पन्न करता रहता है!

वह अनुपमेय है !—संसारकी सारी श्री उसके एक लघुतम अंशसे निर्मित है !

उसकी ज्योतिका एक क्षुद्रतम अंश ही कोटि-कोटि सूर्योंके रूपमें इस विश्वके नानाविध ग्रहोंका केन्द्र बना हुआ है !

उसकी मुसकानसे जो चन्द्रिका प्रसृत होती है, उसका एक क्षुद्रतम अंश पूर्णिमा-यामिनीमें राकेश धरित्रीके निवासियोंको दिखलाकर उन्हें विमुग्ध कर डालता है !

काश ! तुम उसे जान पाते !

काश ! तुम्हारे अन्तर्देशमें उसके रूपका जादू घर कर लेता !

काश ! तुम भी उसे प्यार कर पाते !

उसके प्रेममें ईर्ष्याकी भावना नहीं !

मैं चाहता हूँ, इसके दर्शनो उत्सुकोंकी संख्या अधिकसे अधिक बढ़े !—अधिकसे अधिक संख्यामें जीवन-यात्री उसके प्रणयके पीयूषका पान करके सच्चे अर्थोंमें अमर हो जायँ !

अस्थि मासकी इन पुत्तलिकाओंको फिर तुम स्वप्नमें याद न करो ! सिर्फ एक बार उसकी झलक मिल जानेकी जरूरत है !

उसकी रूप श्री अमर है, शाश्वत है !

मरण उसकी किरणोंका स्पर्श पाकर जीवन बन जाता है !

उसके प्रेमकी पावनता संसारकी समस्त कठोराकठोर तपस्याओंसे अधिक है !

अस्थि-मांस-चर्मकी ये पुतलियाँ सुन्दर नहीं, तुम्हें सुन्दरता का भ्रम हो गया है ! इनके चर्मके भीतरका जो रूप है, जरा उसे तो अपने प्रज्ञा-चक्षुओंसे देखो !

घृणासे सिहर उठोगे !

उसका प्रेम प्रेम नहीं, एक प्रवञ्चना है !

स्वार्थ उसका आधार है !

उसीके प्रेमका नहीं, इस प्रकारके समस्त प्रेम-व्यापार स्वार्थपर आधारित होते हैं !

जबतक तुम्हारे द्वारा उसे, और उसके द्वारा तुम्हें ज्ञात या अज्ञात रूपसे सुख प्राप्त होता रहेगा, तभीतक प्रेम भी जीवित है !

जिस दिन सुखकी प्राप्तिका अन्त हुआ, उसी दिन वह मिथ्या प्रेम विरक्तिमें पर्यवसित हो जायगा !

यहाँका प्रेम ऐसा ही होता है।

यह देश प्रेमके लिये नहीं बना है !

संसार-विटपीमें प्रेमका जो सुन्दर फल तुम्हें दिखलायी दे रहा है, वह ऊपरसे ही मधुर है, अन्दर अतिशय कटु है।

यहाँका रूप क्षणोंमें जीवन-यात्रीको उपलब्ध करके तिरोहित हो जाता है !

वार्धक्यका चित्त तो जरा देखो !

आजकी स्नेहमयी रसवन्तीका कल जो रूप होगा, उसका चित्र अपनी प्रज्ञाके द्वारा अंकित कराओ ! हृदय इस कार्यमें सफल नहीं हो सकेगा। प्रज्ञा ही यह कार्य सफलतापूर्वक कर सकेगी।

प्यार !··· ··· ····

जलके इच्छुक ! सिकता-कणोंसे तुम्हारी पिपासाका प्रशमन न हो सकेगा !

मेरे उस चिरसुन्दर प्रियतमके श्री-चरणोंकी स्मृतिकी पतवार बनाओ !

दुःखोंके सागरसे सन्तरण करनेका यही सर्वश्रेष्ठ उपाय है !

जिसने भी उसको प्यार किया, अमर हो गया !

इस सङ्कटापन्न यात्रा-पथमें उसका तुम्हें निरन्तर नूतन बात प्रदान करेगा !

डगमगाते चरणोंको उसकी याद्-शक्ति प्रेम जब निविड़तम हो जायगा, तुम उस अनदेखेके कोमल करोंका स्पर्श अनुभव करोगे।

निशीथकी नीरवतामें तुम्हारे शय्या-शिरोभाग पर उसका श्वास-सौरभ प्रसृत होने लगेगा !

उस अलख, अगोचर दिलदारके इश्कका राज जिस दिन तुम्हें मालूम हो जायगा, तुम्हारा हृदयन्तराल आलोककी स्वर्गिक किरणोंसे भर जायगा।

भीषणतम अन्धकारसे आक्रान्त प्रदेश तुम्हारे लिये किरणोज्वल हो जायगा !

लेकिन उसको प्रेम करना खेल नहीं।

'यह प्रेमको पंथ कराल महा, तरवारकी धारपै धावनो है !'

असि-धारा-पथगामी होना पड़ेगा तुम्हें !

जो इस माया लोककी क्षणभङ्गुर वस्तुओंसे आसक्त रहता हुआ भी अपनेको उसका 'आशिक' कहता है, वह मिथ्यावादी नहीं तो क्या है ?

'प्रेम गली अति साँकरी, तामें दो न समाहिं !'

उस चिर सुन्दरको प्यार करनेके लिये तुम्हें अपनी समस्त त्रुटियोंको दूर करना पड़ेगा ! ..फिर तो स्वतः तुम्हारी त्रुटियाँ दूर होने लगेगी ! उसके प्रेममें कुछ ऐसी ही शक्ति है !

जो उसे सच्चे अर्थोंमें प्यार करता है, वह निर्भीक होता है ! किसी प्रकारकी भीति उसे संत्रस्त नहीं कर सकती !

भला, सारे विश्वके अधिपतिको प्यार करनेवाला किस वस्तुसे डरे !

सारा विश्व उसका हो जाता है !

वह बादशाहोंका बादशाह बन जाता है !.

पृथ्वीके ये रक्त-पिपासु सम्राट उसकी चरणधूलिका की भी समता नहीं कर सकते !

.... 'जो तू मेरा, जहाँ मेरा, अरब मेरा, अजय मेरा'

उसको किसी बातकी कमी नहीं होती !

उस त्रिभुवनाधिपतिके प्राणसखाको किस बातकी कमी हो !

अस्थि-मासकी पुतलियोंका प्यार भयकी भावनाको विवर्धित करता है ; कम नहीं !

'कहीं मेरी प्रेयसी प्रेमसे रुष्ट न हो जाय !

'कहीं मैं इसके प्रेमसे हाथ न धो बैठूँ !,

'कहीं मैं दरिद्र न हो जाऊँ, अन्यथा इसकी और मेरी आवश्यकताओंकी पूर्ति कैसे होगी!'

कहीं हम दोनोंमेंसे किसी एकका भी स्वास्थ्य न नष्ट हो जाय!'

'कहीं वार्द्धक्य न आ पहुँचे!'

'कहीं कोई देख न ले!'

'कहीं मृत्युके हिम-शीतल अन्धरोंको चूमना न पड़ जाय!'

इस प्रकारकी भीतियोंसे वे सदैव आक्रान्त रहते हैं!

भीति, संशय तुम्हारे मानसिक स्वास्थ्यके सबसे बड़े शत्रु हैं! बौद्धिक शक्तियोंपर इनका वही प्रभाव पड़ता है जो कमलिनीपर तुषारका!

वहां किस बातका भय! ..उस अलख, अगोचरके प्रेममें किस बातका संशय।

वहाँ न मृत्यु है, न वार्द्धिक। न दारिद्र्य है, न अभाव!

वहाँ वियोग भी नहीं होता! . यह तुम्हारा भ्रम है कि वह तुमसे दूर है।

अन्तर्चक्षु खोलो, तुम्हारे सामने वह मुसकराता हुआ नजर आयेगा!

प्रेममें निविड़ता आने दो, उसके कोमल आलिङ्गनका अनुभव तुम्हें कदम-कदमपर होगा!

कभी वह चांदके साथ कीड़ा करता हुआ तुम्हें पूर्णिमाकी सौभाग्यवती यामिनीमें दृष्टिगत होगा, कभी सांध्य प्रतीची-

क्षितिजके रक्त-श्वेत-पीत बादलोंके समीप आहत एवं परिश्रान्त अंशुमालीको आश्वस्त करता हुआ।

उसके प्रेममें जो रस है, वह अनुभव करनेकी चीज है!

अस्थि-मांसकी पुतलियोंका प्यार तुम्हारे चरणोंको शिथिल कर डालेगा।—तुम्हारे अन्तर्देशमें अग्नि-कण भरकर तुम्हें विक्षुब्ध कर डालेगा!

द्विविधा तुम्हारी चिरसंगिनी बन जायगी!

उस अलख, अगोचरको अपना प्राण सखा एक बार बनाकर तो देखो! फिर किस प्रकार तूफ़ानोंसे होड़ लेते हुए तुम आगेको बढ़ते हो!—किस प्रकार खाइयों, खोहोंको लांघते हुए तुम मंजिलकी ओर अग्रसर होते हो!

उसका प्रेम तुम्हें विजयका वह मंत्र सिखला देगा, जो पराजय जानता ही नहीं!

उसे प्रेम करनेवालेने संसारमें कहीं भी किसी भी शक्तिके सामने आजतक घुटने नहीं टेके!

पराजय शब्द उसके कोषमें होता ही नहीं!

संसारके क्षणभंगुर भोगोंकी ओर जो आकर्षित होता रहता है, वह भी अपनेको उसका प्रेमी कहनेको अधिकारी नहीं।

पीयूष-पात्रका प्रेमी क्या कभी भी मदिराके पात्रको अधरोंसे चुम्बित करनेके लिये बेचैन हो सकता है!

सुन्दर, सौरभित मार्गके पथिकको क्या कभी भी कर्दमाक्त और दुर्गन्धपूर्ण मार्ग प्रिय लग सकता है?

कमलके रसका आस्वादन करनेके पहले भ्रमरी चाहे जिसके पीछे दौड़ती फिरी हो, किन्तु एक वार कमल-रसका पान करनेके उपरान्त वह उसे छोड़कर और कुछ नहीं चाहती !

मरणलोककी मरीचिकाओंसे विमोहित युवक ! होश सम्हालो। अभी भी कुछ विगड़ा नहीं है ! अन्यथा जब इस लोकके सौंदर्य और प्रेमकी वास्तविकता तुम्हारे नयनोंको अश्रु-सजल करती हुई तुम्हारे सामने स्पष्ट होगी तो सिहर उठोगे !

तब तुम्हारे मुखसे भी वेदनापूर्ण स्वरमें 'निकलेगा—Pulchritudo tam antiqua et tam nova, sero te amavi' ....'हे चिर नूतन और चिर पुरातन रूप-श्री ! मैंने तुम्हें प्यार किया किन्तु वहुत देरसे !'

उसको प्राण-सखा वनाकर तुम ऐश्वर्यके शिखरपर पहुंच जाओगे !

लेकिन उसको तुम्हें सच्चे अर्थोंमें प्राण-सखा वनाना होगा !

राजा और भिखारीमे मैत्रीका सम्बन्ध तभी हो सकता है जब भिखारीमे कोई विशेषता हो ! मैत्री होनेके वाद भले ही भिखारी भीख मागना छोड़ दे।

तुम भी अपने समस्त दुर्गुणोंको दूर करो ! अपनेको इस योग्य वनाओ कि उसके सखा वन सको !

उनका सखा वननेके लिये क्यों उतावले हो रहे हो, जिनके प्रेमका कोप चिररिक्त है !

तुम्हारा अस्तित्व इस मायालोकमें 'सत्यं शिवं और सुन्दरम्' की एक सजीव जय-ध्वनि हो !

तुम ज्ञान और शक्तिके चिर जागरूक प्रतीक बनो !

मानवता तुम्हारे आचरणोंको अपना आदर्श माने !

तुम्हारी वाणी युगयुगान्ततक पथभ्रान्त यात्रियोंके भग्न होते हुए नैराश्यतिमिराक्रान्त हृदयोंको आश्वस्त करे !

तुम्हारी स्मृति-पर्वत-शिखरकी ओर जाते हुए यात्रीके डगमगाते कदमोंको नूतन बल प्रदान करे !

तुम्हारे चरण-चिह्न इतिहासके पृष्ठोंपर अमर हों !

ऐसे बनो तुम।

तुम्हारी पवित्रता विश्व-विश्रुत हो !

भोगके लिये नहीं, उसके प्रेमके लिये जीवित रहो !

अपने कलमषोंको निर्दयतापूर्वक विदूरित करो !

निष्ठुरतापूर्वक आत्म-विश्लेषण करो।

अपने दोषोंको पहचान लेना उतना सरल नहीं जितना अक्सर समझा जाता है।

बहुतसे व्यक्ति यह समझते हैं कि उनमें मिथ्यावादिताका दोष नहीं। किन्तु जब कोई ऐसा अवसर आ पहुंचता है जब सत्य भाषणसे उनके यशको या उनके धनको आघात पहुंचता है तो उनकी दुर्बलता स्पष्ट हो जाती है।

सिर्फ प्रश्नोंके द्वारा आत्म-विश्लेषण करनेसे आत्म-परिज्ञान न हो सकेगा। तरह-तरहसे परीक्षा लेनी होगी।

बहुत-से व्यक्ति यह समझते हैं कि उनमें आलस्य नाममात्र को भी नहीं ; किन्तु यदि वे कभी प्रातःकाल तीन बजे उठनेका निश्चय करें, और नींद टूट जानेपर जब बाहरके शीतकी और बिछौनेपर पड़े रहनेके सुखकी परस्पर विरोधिनी भावनाओंमें संघर्ष होना आरम्भ हो जाय, तब उन्हें अपनी दुर्बलताका ज्ञान होता है !

कभी-कभी केवल अपनी परीक्षा लेनेके लिये अपनेको किसी प्रकारका शारीरिक कष्ट दिया करो और देखो कि तुम्हारा शरीर तुम्हारा अनुवर्त्ती है या आलस्यका !

यदि स्वास्थ्यको किसी प्रकारकी हानि पहुंचनेकी सम्भावना न हो तो कभी कभी सिर्फ अपनी इच्छा-शक्तिकी और आलस्यकी परीक्षा होनेके लिये रातको दो बजे उठकर घंटे भरतक अध्ययन करनेका निश्चय किया करो।

इस प्रकार सदैव अपनी दुर्बलताओंको पहचानकर उन्हें दूर करनेका प्रयास करते रहा करो तभी तुम उस योग्य बन सकोगे !

मानता हूं कई बार तुम अपनी दुर्बलताओंको पहलेकी अपेक्षा अधिक स्पष्ट रूपमें देखोगे और शायद अपनी दुर्बलतापर भीति-संत्रस्त भी हो उठो !

किन्तु युवक ! हिम्मत हारनेकी कोई बात नही है ! मानसिक जगतके नियमोंसे अनभिज्ञ रहनेके कारण और दृष्टिकोण ठीक न रहनेकेकारण ही तुम्हारी दुर्बलताएँ इतनी बढ़ गयी हैं कि आज तुम उनको दूर नहीं कर पा रहे हो !

उनके बढ़नेमें समय लगा है ।

उनके दूर होनेमें भी समय लगेगा ।

धैर्य रखो !

मकानके गिरनेमें देर कम लगती है ; बननेमें अधिक । धैर्य और साहसके साथ क्षति-पूर्तिका कार्य करते चलो । तुम्हारे आन्तरिक शत्रुओंको पराजय होगी !

---

[३९]

तुम्हारे मार्गमें जो प्रलोभन आते हैं, वे तुम्हारी परीक्षाके प्रश्न हैं ?

देखा जाय, सब मिलाकर तुम्हारे लब्धाङ्क कितने होते हैं।

"मंजिलकी ओर या मेरी ओर ?" पूछता हुआ एक प्रलोभन तुम्हारे सामने आता है !

तुम्हारा पशु उसकी ओर आकृष्ट होता है, पूर्णवेगके साथ ! इसमें उस अभागेका दोष भी क्या है। उसका स्वभाव ही ऐसा है !

लेकिन तुम्हारी शक्तिका परिचय तो तब मिलेगा जब तुम उसे अपने वशमें कर सको और उसके उत्तरको खण्डित करके बल-पूर्वक कह सको—"मंजिलकी ओर !"

पशुके उत्तरको खंडित करनेकी शक्ति तुममें तभी आ सकेगी, जब तुम अपनी प्रज्ञाको अध्ययन, मनन, निदिध्यासन, चिन्तन प्रभृतिके द्वारा कुशाग्र कर लोगे !

जीवनके इस बन्धुर यात्रा-पथमें पहले भी अनेकानेक यात्री चले हैं और उन्होंने अपने अनुभवोंको लिपिबद्ध किया है ! उनसे लाभ उठाओ !

वाणीका वरदान इस ग्रहका सर्वोत्कृष्ट वरदान है !

लक्ष्मीके मन्दिरमें जो चाक चिक्य है, वह सरस्वतीके मन्दिर में नहीं मिलेगा, किन्तु वहाँ जो पावनता है, जो किरणोज्वल श्री-सुषमा है, उसका सहस्रांश भी लक्ष्मीके उपासना-निकेतनमें नहीं मिलेगा ।

सरस्वतीके मन्दिरके प्रवेश-द्वारपर लक्ष्मीके मन्दिरके प्रवेश-द्वारकी अपेक्षा बहुत कम भीड इस ग्रहमे है, यह इस बातपर पर्याप्त प्रकाश डालता है कि मानव-जातिका साभ्यतिक एवं सांस्कृतिक विकास अभी कितना कम हुआ है

तुम सरस्वतीकी समाराधनाके द्वारा अपनी प्रज्ञाको अधिकाधिक सशक्त करो ताकि सत्य-असत्य शिव-अशिव सुन्दर असुन्दर में पार्थक्य कर सको !

यात्रा-पथमेंजरा-जरा-सी दूरीपर ये जो मोड आ रहे हैं, वहाँ सरस्वतीकी आराधना ही तुम्हारी सहायता कर सकेगी !

सरस्वतीकी उपासनासे तुममें वह शक्ति आयगी कि तुम अपना ही मार्ग ज्योतित नहीं कर सकोगे, अपितु औरोंके सर्वोपित दीपोंको भी पुनः प्रज्वलित कर सकोगे !

---

[३३]

क्या हुआ यदि तुम्हें किसीके कोमल कर इस यात्रा-पथमें नहीं मिले।

क्या हुआ यदि एकाकी ही तुम्हें यह बन्धुर और कण्टकाकीर्ण मार्ग पार करना पड़ रहा है।

क्या हुआ यदि किसीके स्नेहसिक्त स्वर इस पथ-नीरवताको भंग करते हुए तुम्हारे मन-प्राणमें वासंती आह्लाद नहीं जागृत कर रहे!

क्या हुआ यदि निशीथके दिगन्तप्रसर, अन्धकारमें किसी का वक्ष तुम्हारे वलसे रूपसे कम्पनको नहीं मिलाता?

क्या हुआ यदि आज तुम्हारे साथ तुम्हारा दिलदार नहीं है?

बावले, यात्रा-पथकी परि समाप्ति होने दो!

तुम्हारे मनका मीत तुम्हें अवश्य मिलेगा।

प्रेमकी वास्तविकतासे तुम यात्रा-पथकी परि समाप्तिके उपरान्त ही परिचित हो सकोगे।—तभी तुम्हें विदित हो सकेगा कि प्रेमकी ज्योत्स्ना कितनी पावनी है।—कितनी स्वर्गिकता है उसमें!

इस देशमें प्रेम है कहां! यहां तो उत्तप्त कल्पनाका ममत्व निरन्तर पथिकोंको जललासके पीछे प्रधावित करता रहता है!

यहां सौंदर्य एक छाया-मात्र है!

यहां प्रेम एक सपना है और वह भी मिथ्या! क्षणोंमें तिरोहित हो जानेवाला!

यहां वालोंके प्रेमकी गाथा सुनोगे तो घृणासे सिहर उठोगे!

यहां प्रेमका आधार स्वार्थ त्यागपर नहीं! अपितु स्वार्थ-सिद्धिपर है!

रोज कितने ही प्रेमपात्र यहां घृणाके पात्र बनते हैं!

यह देश प्रेमके लिये बना भी नहीं है!

तुम अपने एकाकीपनके लिये चिन्तित न हो युवक! जिनका पारस्परिक प्रेम देखकर तुम अपने एकाकीमनकी यंत्रणासे रह-रहकर कराह उठते हो वह प्रेम नहीं है, कुछ और ही वस्तु है!

उसे प्रेम कहना, प्रेमदेवका अपमान करना है!

यह देश संघर्षके लिये है मैं तुम्हें कई बार कह चुका हूँ।

प्रेम यहां नहीं है—नहीं है! व्यर्थकी मृगमरीचिकाके पीछे प्रधावित होकर अपना अहित न करो!

माना, एकाकीपनकी पीड़ा असह्य होती है।

माना, परिश्रान्त कलेवर किसीका मधुर स्पर्श चाहता है!

माना, नव गिरि-शिखरोंको अपनी अन्तिम किरणोंकी जय-माला पहनाता हुआ जब अंशुमाली संध्यासे वार्त्तालाप करना

आरम्भ कर देता है, उस समय किसीके रसभरे बोल सुनकर अपनी सारी श्रान्ति मिटानेकी इच्छा बलवती हो उठती है।

मैं मानता हूँ, युवक! कि जीवन-यात्रा पथमें एकाकी चलना बड़ा दुस्सह है! साथमें जबतक कोई ऐसा हमदम नहीं होता जो स्वेद-कणोंको पोंछ दे तबतक प्राण कराहते रहते हैं!

किन्तु किया क्या जाय' विवशता से।

यही यात्रा-पथ प्रेमके लिये बना ही नहीं!

यहाँ संगीहीन ही चलना पड़ता है! एकाकी ही संघर्ष करना पड़ता है!

एक हाथसे काँटे निकालते चलो और दूसरे हाथोंसे अव-रोधक वृक्षोंकी शाखाएँ तोड़ते चलो!

एक हाथसे लड़ते चलो, दूसरे हाथसे स्वेद-कण पोंछते चलो।

यही प्रणाली है इस पथमें चलने की!

यह प्रेम-पथ नहीं है पथिक! संघर्ष-पथ है।

किसीको शसीम बाँहें न मिलीं तो न सही उसकी स्मृतिकी माधुरी तो साथ है!

एकाकीपनके ये दुःखभरे दिवस अमर नहीं हैं बावले! शीघ्र ही ये कुंदनमय दिन अतिमापित हो जायंगी!

शैशवके दिन कहाँ खो गये!

कहाँ खो गया कौमार्य तुम्हारा

उस समय विश्वास होता था कि इतनी जल्दी तुम युवक हो जाओगे !

इसी तरह यौवन तिरोहित हो जायगा !– जीवनका मध्याह्न संध्याकी लालिमामें पर्यवसित हो जायगा।

मरणके तम-श्यामल देवताकी पगध्वनियां किस क्षण सुनायी दे जायँ, कुछ ठीक नहीं। किस क्षण वह अपनी अनिंद्य मुसकान के द्वारा पारिपार्श्विक वातावरणको अभिनव श्री प्रदान करता हुआ आ पहुंचे, इसका कोई निश्चय नहीं।

आह, कितना सुकुमार है वहाँ !

यात्रा-पथके स्वेद-सीकर उसका स्पर्श पाकर धन्य हो जाते हैं !

उसका परिधान श्यामली अवश्य है, किन्तु वह स्वयं कनक-कान्ति है !

उसे देख लो तो मुग्ध हो जाओ उसकी रूप-राशि पर !

पथ भ्रमित जीवन-यात्रियोंके प्राणोंका कातर क्रन्दन उसके हिम-शीतल अधरोंके एक चुम्बनसे ही प्रशन्नित हो जाता है।

जीवन-पथके अविवेकिता पूर्ण चाक-चिक्यकी जिस वास्त-विकताको मनीषी अपने जीवन भरके परिश्रमसे भी औरोंको नहीं समझा पाते हैं उसे उसकी एक मुसकान स्पष्ट कर देती है !

मायाका व्यामोह तिमिर उसके द्वारा ज्योतित तो नहीं होता किन्तु उसकी वास्तिविकता अवश्य दृगोंके सामने स्पष्ट हो जाती है !

इस बन्धन लोकमें यदि वह सदैव कार्यव्यस्त न रहा होता तो जीवन कितनी दुस्सह वेदनाओंका क्रन्दन-स्थान नहीं हो गया होता !

यहांके सुख-दुःखसे नाता न जोड़ो निपट निराले राही !
बड़ी विचित्र राह है यह !
जादूका देश कहो इसे !
कदम-कदम पर यहां जादूगरनियां मिलती हैं !

---

[३४]

मंजिल तक वही पहुंच सकता है, जिसमें कष्ट सहनकी अपार क्षमता रहती है !

सुख वैभवकी कुर्बानियां ही जीवन-यात्रीको उसके गन्तव्य स्थानतक पहुंचाती हैं !

विलासिता असफलता और पतनकी चिरन्तन सहचरी है !

जिस व्यक्तिमें विलासिता आयी, सफलता उससे दूर हो गयी !

जिस राष्ट्रमें विलासिताका समावेश हुआ, उसका पतन हो गया !

इतिहासके पन्ने उलटो और देखो कि किस प्रकार विलासिता ने शासकोंको बन्दी गृहोंकी सूखी रोटियां अन्तमें खिलायी हैं !—किस प्रकार पर्वतके उच्चतम शिखर तक पहुंचकर संसारको आलोक प्रदान करनेकी क्षमता रखनेवाले व्यक्तियोंको पतनके अन्धकारित गर्त्तमें गिराकर उन्हें कहींका भी नहीं रखा है। किस प्रकार सहस्रों नर-नारियोंकी भावी आशाओंके ज्योतिर्मय केन्द्रोंको तिमिरग्रस्त करके नैराश्यकी यामिनी बुला दी है !

जीवन वैभव-विलासके लिये नहीं है।

जीवन मखमली गद्दोंमें बैठकर व्यतीत करनेके लिये नहीं है !

जीवन किसीके सुखस्पर्श क्रोडमें सिर रखकर सुखके मधुमय स्वप्न देखनेके लिये नहीं है!

जीवन एककठोर परीक्षा है।

जीवन एक ऐसा यात्रा-पथ है, जहाँ तुम्हारी शक्तियोंको अपना समुचित परिचय देनेका अवसर मिलता है!

अनेकानेक दार्शनिकोंने जीवनको भोग-विलासमें यापित करनेकी सलाह मानवोंको दी है!

'खाओ, पियो, मौज करो' - यह उनका उपदेश रहा है!

जनताने उनके उपदेशको स्वीकार भी किया है! ऐसा उपदेश किसे अच्छा नहीं लगेगा?

कहनेको दुनिया जो कहे, अधिकसंख्यक मानवोंके क्रियाकलाप यह सिद्ध करते हैं कि वे इसी सिद्धान्तके अनुयायी हैं!

योगिश्वर कृष्णने ऐसा नहीं कहा था!

हजरत मुहम्मदने ऐसा नहीं कहा था!

जीसस क्राइस्टने ऐसा नहीं कहा था!

महात्मा बुद्धने ऐसा नहीं कहा था!

कनक्यूशियसने ऐसा नहीं कहा था!

लेकिन इन लोगोंको अपना पथपुष्टा कहनेवालोंके क्रियाकलाप क्या सिद्ध कर रहे हैं?

कृष्णने कहा था—संसार दुःखालय और अशाश्वत है अतः निष्काम रूपसे मुझे याद करते हुए युद्ध करो!

जीसस क्राइस्टने तो यहाँतक कह दिया था कि जो अपने कंधोंपर क्रास रखनेकी क्षमता रखता हो, वही मेरे पीछे-पीछे चला आये।

लेकिन आज कृष्णको अपना उपास्य कहनेवालोंकी जीवन चर्यापर दृष्टपात करो!

जीसस क्राइस्टको ईश्वरका एक लौता लड़का माननेवाले व्यक्तियोंकी हिंसा भरे कृत्योंकी ओर तो देखो!

महात्मा बुद्धके अनुयायियोंकी अवस्थापर तो एक नजर डालो!

सर्वत्र चतवकि पन्थी चली हुई है!

यावज्जीवेत् सुखं जीवेत् ॠणं कृत्वा घृतं पिवेत्
भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः ?

वाली फिलासफी सर्वत्र कार्य रूपमें परिणत हो रही है!

कोई भी अपनेको चार्वाकका अनुयायी नहीं कहता। अनुयायी सब अपनेको बुद्ध कृष्ण और क्राइस्टका ही बतलाते हैं!

लेकिन अभागे संसार-मरुस्थलमें सुखकी मरीचिकाके पीछे दौड़ते ही रहते हैं, वह उन्हें मिलता नहीं!

एक प्याला पीकर साकी छिप जाता है!

ये अतृप्त, रस लालस चीत्कार कर उठते हैं—"साकी! दया करो! एक प्याला और! फिर कभी न मांगूगा! इससे प्यास न बुझी! इस बार उफ जायगी। रहम करो!

साकी मुसकराता हुआ फिर प्रकट होता है और इनके रिक्त पात्रमें कुछ आसव ढालकर फिर तिरोहित हो जाता है !

मद्यपोंकी पीपासा फिर भी प्रशमित नहीं होती ! पुनः वही आर्तपुकार—और दो। साकी ! ओर दो ! दया करो !

दयाकी भीख माँगते-माँगते और चीत्कार करते-करते ही इन अभागोंकी जीवन-धारा सूख जाती है !

अंशुमाली अस्त हो जाता है और इन्हें मरणका सुकुमार मन-मोहनदेवता दूसरे देशमें जानेको विवश कर देता है !

क्या तुम भी इन्हीं अविवेकियोंमें अपनी गणना करना चाहते हो ?

क्या तुम्हें भी साकीके दरवाजे पर दयाकी भीख माँगना पसंद है,—उस साकीके दरवाजे पर जिसकी मदिरा विषका ही एक दूसरा रूप है !

बावले युवक !—भोले युवक !

साकीकी मदभरी चितवनसे अपने मन-प्राणोंको मदान्वित करनेका न तुम्हारे पास समय है और न अधिकार ही !

उसकी मदिराकी एक बून्द भी यदि तुमने पी ली तो याद रखना, सदाके लिये कलंक-कालिमा तुम्हारे मुखपर पुत जायगी !

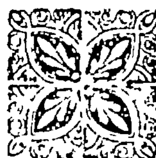
विश्राम तो दूर रहा, तुम्हें विश्रामका भी अधिकार नहीं !

शरीरको जितने विश्रामकी आवश्यकता है, उससे अधिक विश्राम भी तुम्हारे लिये लज्जास्पद है !

अविश्राम गति !— अनवरत संघर्ष !— इसीमें तुम्हारी गौरव-गरिमा सन्नहित है !

भला, जिसकी प्रेयसी अश्रु-सजल चक्षुओंसे प्रतिक्षा कर रही हो, उसके चरण कहीं विश्राम सुखका अनुभव करनेको रुकते हैं !

तुम्हारी मंजिल तुम्हारी प्रेयसी है !— तुम्हारी प्रेयसी तुम्हारी मंजिल है !



[३५]

तो, मेरे तेजस्वी युवक। तुम्हें ही क्या, मानवमात्रको भोगासक्तिका अधिकार नहीं! वासनाओंको नियंत्रित रखना और प्रज्ञाके द्वारा अपने समस्त कार्योंको सञ्चालित करना ही उसके लिये श्रेयस्कर है।

पशुओंको प्रकृतिकी ओरसे इसका अधिकार है कि वे योग-वासनासे प्रेरित होकर क्रियाशील हों!

मनुष्य इस अधिकारसे वञ्चित है, यह उसका दुर्भाग्य नहीं! ... प्रज्ञा-शक्ति जो उसे मिली है!

समस्त प्रकारके जीवन जो इस संसृतिमें दृष्टिगत होते हैं, विभिन्न तत्त्वोंसे निर्मित हैं और इनका विकास तभी सम्भव है जब प्रधान तत्त्वकी सुरक्षा एवं विकासके लिये अन्य समस्त तत्त्वोंकी क्रियाएँ हों।

वनस्पति-जीवन जड़ तत्त्वोका उपयोग करता है। जड़, शाखा, पत्र, पुष्प, टहनियाँ प्रभृति नानाविध कार्योंका सञ्चालन करती हैं और खनिज जगतसे अपनी आवश्यकताओंकी पूर्त्ति करती हैं!

वनस्पति-जीवन खनिज-जीवनको अपने अनुकूल बनाता है। अपनी आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिये उनको ग्रहण करता है। उन पर अपनी छाप डालता है! उसकी परिधि आनेके उपरान्त उसका

नियम और धर्म खनिज तत्वोंका नियम धर्म बन जाता है। खनिज जगतके तत्वोंको इस प्रकार सदैव अपने अधिकारमें लाकर अपनी आवश्कताओंकी पूर्त्ति करनेकी शक्ति इसमें विद्यमान रहे तो इसका विनाश असम्भव है। जितने अंशोंमें इस संघर्ष में उसकी पराजय होती है, उतने अंशोंमें उसका ह्रास होता है! और जब वह न तो अंश उसकी पूर्ति कर पाता है, जिसकी उसे आवश्यकता होती है और न उसपर नियन्त्रण रख पाता है, जो उसके अधिकार-क्षेत्रमें आ जाता है, तब उसकी मृत्यु हो जाती है।

अपनी निम्न-शक्तियोंको नियंत्रित न करनेसे ही पतन होता है और फिर विनाश!

कई बार मैं तुमसे कह चुका हूँ, जीवन संघर्ष है!

संघर्षमें जो विजयी होता है, वह जीवनके प्रकाशका वरण करता है और जो पराजित होता है वह मृत्युके अन्धकारको!

अब पशु-जीवनपर दृष्टपात करो!

पशु-जीवन वनस्पति-जीवनसे अधिक Complex है, इसमें कोई सन्देह नहीं। जीवनके विकास क्रममें वनस्पति-जगतसे उसका स्थान भी ऊपर है!

पशु-जीवन वनस्पति-जीवनका उपयोग करता है, अपने अंगोंको सशक्त एवं क्रियाशील रखनेके लिये,— अपने जीवनको उसकी वास्तविक एवं सुस्थ स्थितिमें रखनेके लिये!

पशु-जीवनकी गति और चेतनाका जीवन कहां। इसके लिये अंगों, शिराओं, धमनियोंकी महती आवश्यकता है।

वनस्पति-जीवनको अपनेमें मिश्रित करके पशु-जीवन उसे उन्नत स्तरपर उठाता है, उसमें चेतनाका सन्निवेश करता है।

लेकिन यह तभी सम्भव है जब पशु-जीवन उसको अपने धर्मके अनुकूल बनाये और उसको नियन्त्रित करे! नियन्त्रणके अभावमें यह असम्भव है।

जिस प्रकार खनिज शक्तियोंको वनस्पतिके उपयोग और नियन्त्रणमें रहना पड़ता है। उसी प्रकार Organic शक्तियोंको पशु-जीवनकी सेवामें।

क्षुद्रतम जीव-बिन्दुकी ओर ध्यान दो। मृतक जीव-बिन्दुमें सब कुछ अस्त-व्यस्त, छिन्न-भिन्न रहता है! जीवितमें सब कुछ नियंत्रित। सूक्ष्म वीक्षण यंत्रसे उसे देखनेवाला और उसकी बनावटका अध्ययन करनेवाला वैज्ञानिक न उसकी उत्पत्तिके सम्बन्धमें कुछ जानता है, न उसके भविष्यके ही सम्बन्धमें! चाहे वह एक साधारण कीट हो, चाहे, पौधा, चाहे पशु, किन्तु वह जीव-बिन्दु जानता है!

उसके पास एक नियामक शक्ति (L'idee directrice) है और वह उसका अनुकरण करता है। उसका विनाश बलपूर्वक कर दिया जा सकता है लेकिन उसकी समस्त शक्तियाँ अपने धर्मके पालनमें नियोजित होती हुई संघर्षशील रहती हैं!

अपने निर्धारित लक्ष्यकी ओर अर्थात् प्राणि-जीवनकी पूर्णताकी ओर पहुंचनेके लिये इनकी समस्त अपने धर्मके अनुसार नियोजित होती हैं!

जब यह नियन्त्रण कम होता है, जीवनका ह्रास होने लगता है!

जब कोई पशु अचेतन हो जाता है,—जब उसकी आंखें अशक्त हो जाती हैं, जब उसकी क्षुधा उसे आहारके लिये उत्प्रेरित नहीं करती, तब अव्यवस्थाके साथ ही साथ मृत्युका भी आवाहन होने लगता है। उस समय कोई नियंत्रण नहीं रह जाता, कोई सामञ्जस्य नहीं रहता, और तब विभिन्न तत्त्व किसी नियमका अनुवर्त्तन नहीं करते और परिणाम स्वरूप अशक्ति और मृत्युका आगमन होता है!

वनस्पति-जगत्की ही तरह पशु-जगत्के लिये भी जीवनका अन्श होता है—सामञ्जस्यकी स्थापना, नियंत्रण और शासन करना, विभिन्न प्रवृत्तियोंसे संघर्ष करके उन्हें अपने लक्ष्यकी ओर उन्मुख करना!

यहां भी, जीवन संघर्ष ही है !

प्रज्ञा सम्पन्न प्राणी होनेके कारण मानव पशुओंसे काफी ऊपर उठता है लेकिन सदैव इसमें सफल नहीं होता! मानव विशुद्ध आत्मा नहीं है क्योंकि शरीर उसके साथ है और जब तक वह इस कारागारमें बन्दी है तब तक शरीरका उसपर प्रभाव पड़ता ही है!

किन्तु उसका अस्तित्व भी सार्थक है, जब वह अपनी समस्त शक्तियोंको प्रज्ञाकी अनुवर्त्तिता बनाकर अपने लक्ष्यकी ओर उन्मुख करे!

इस कार्यमें उसे अपने पशुका नाश नहीं करना पड़ता, उसे उन्नत करना पड़ता है ! जिस प्रकार वनस्पति-जगत् खनिज जगत् के तत्त्वोंको अपने अनुकूल बनाता है, उनका प्रणाश नहीं करता,— पशु-जगत् वनस्पति-जगत्के तत्त्वोंको उन्नत करता हुआ अपने अनुकुल बनाता है उसी प्रकार मानव भी पाशविक शक्तियोंको प्रनष्ट न करे, उन्हें अपने अनुकूल बनाये, प्रज्ञाशक्तिके द्वारा नियंत्रित करता हुआ !

दर्शन साहित्य और विज्ञान प्रभृतिके द्वारा वह उन्नत तर स्तरपर पहुंचता जाता है।

किन्तु यह तभी सम्भव है जब वह सहजात पाशविक प्रभृत्तियों और भोपोगभोगकी लालसापर नियंत्रण करे ! शारीरिक शक्तियोंका स्वभाव है दुःखसे भागना और सुखकी ओर उन्मुख होना। जबतक प्रज्ञा इनपर नियंत्रण नहीं करती, समस्त क्रियाओंका पथ प्रदर्शन नहीं करती,—जबतक वह इन निम्न पाशविक शक्तियोंकी अपेक्षा अधिक शक्तिशालिनी नहीं हो जाती तबतक सच्चे अर्थोंमें मानव जीवनकी ओर उन्मुख नहीं होता !

सच्चे अर्थोंमें मानवको इन्द्रियोंसे सेवित प्रज्ञा कहा जा सकता है !

अन्य स्थानोंकी तरह यहाँ भी उच्च शक्तिको अर्थात् प्रज्ञाको निम्न शक्तियोंको अर्थात् पाशविक शक्तियोंको नियंत्रित करना पड़ता है !

मनुष्यमें अशु और आत्मा दोनों हैं अतः आत्माकी प्रज्ञा पशुके द्वारा परास्त हो जानेपर मनुष्य अपने स्थानसे नीचे गिर जाता है! फिर वह मानवका जीवन पशुका जीवन हो जाता है, जब प्रज्ञाके स्थानपर भोग-लालसासे उसके समस्त क्रिया-कलाप सञ्चालित होने लगते हैं! सहजात प्रवृत्तियाँ उसे पथ-भ्रष्ट कर डालती हैं, उसकी तेजस्विता नष्ट होने लगती है,—सामञ्जस्यका विनाश हो जाता है!

प्रज्ञाको उन्नततम स्थानकी ओर ले जाना में ही मानवका जीवन है। उसके समस्त क्रिया-कलाप प्रज्ञाके द्वारा नियंत्रित एवं सञ्चालित होने चाहिये,—जीवनमें एक नियम हो,—एक प्रज्ञाधारित संविधान हो!

निम्न पाशविक प्रवृत्तियोंसे संघर्ष करके उनपर विजय प्राप्त करना मानवके लिये अत्यावश्यक है!

जो लोग जीवनके उसपार पर विश्वास नहीं करते, उनके लिये इतनी व्याख्या पर्याप्त है किन्तु तुम तो जीवनके उसपार पर विश्वास रखते हो! तुम्हें तो भोग-लालसाकी हानि और अनुपादेयता स्वतः ज्ञात हो जानी चाहिये।

भोगासक्तिसे संसारकी असक्ति विवर्धित होती है। मन सदैव इस मायालोककी छलनाओंके पाशमें फँसा रहता है! ज्योतिमय लोकोंके प्रति आसक्तिका अभाव आत्मिक अवनतिका प्रधान कारण है।

एक म्यानमें दो तलवारें नहीं रह सकती!

या तो प्रकाशको प्यार करो, या अन्धकारको !

या इस मायालोकमें आसक्त होओ या उन लोकोंमें जो तुम्हारे चिरन्तन आवास-स्थल हैं, जहांकी ज्योति कभी परिमंद नहीं होती !

मन्मथका वन्दी अपने कर्त्तव्यका पालन नहीं कर सकता !

मन्मथका उपासक प्रकाशके देवताकी उपासना नहीं कर सकता !

मन्मथके भिखारीको कोई अधिकार नहीं है कि उस देवताके द्वारपर जाकर खड़ा हो, जहां स्वर्गिक आलोककी स्वर्णमि किरणें सदैव वितरित होती रहतीं हैं !



जब-जब तुम्हारा आन्तरिक शत्रु तुम्हें सांसारिक क्षणभंगुर भोगोंकी ओर आकृष्ट करनेका प्रयास करे, तुम कल्पना करना आरम्भ कर दो कि यदि तुमने उनका आस्वादन किया तो अन्धकारितगर्त तुम्हारे लिये तैयार है! तुम प्रकाशमय-पथसे निर्वासित होकर वहाँ गिरा दिये गये हो और आकाशचारी तुम्हारी दुर्दशा देख-देखकर अश्रुपात कर रहे हैं!

पार्थिव भोगोंके आस्वादनके परिणामकी वह कष्टकर कल्पना तुम्हारी सहायिका सिद्ध होगी!

जीवनके अन्तिम क्षणोंतक तापस कुमारका-सा जीवन व्यतीत करने पर जो उन्नत प्रकाशद्योत स्थान तुम्हें प्राप्त होगा और सर्वत्र तुम्हारी जो जयध्वनि गुञ्जित होगी, उसकी कल्पना भी तुम्हारे प्राणोंको आश्चर्यजनक बल प्रदान करेगी।

युवक! तुम प्रज्ञासम्पन्न हो और तुम्हारी प्रज्ञाकी सार्थकता तभी है, जब तुम उसके अनुसार आचरण करते हो!

सेनाधिपका अस्तित्व तभी सार्थक समझा जायगा जब सैन्य-दल उसकी आज्ञाका अनुवर्त्तन करता हो! अन्यथा सेनाधिपका होना न होना बराबर है!

विजय तभी सम्भव है, जब सैनिक सेनानीके आदेशोंका अनुकरण करते हो! उसकी प्रत्येक आज्ञापर जीवन होम देनेके लिये बद्धपरिकर रहते हो!

जहाँ साधारण सैनिक सेनानीके विरुद्ध षडयंत्र ही नहीं रचते हों अपितु प्रकट रूपसे उसकी आज्ञाओंका उल्लंघन करते हों, और उसका अवमानना करनेका बहुविध प्रयास करते हों, वहाँ विजयके स्वप्न देखना अज्ञता है !

तुम्हारे आंतरिक जीवनको भी एक सैन्यदलसे उपमित किया जा सकता है जिसका अधिपति है तुम्हारा विवेक।

यदि तुम्हारे उस आंतरिक सैन्यदलके अधिनायकके आदेशके अनुकूल समस्त कार्य सम्पन्न हो रहे हो तब तो ठीक है अन्यथा पतन और पराजय अवश्यम्भावी है।

तुम्हारी कामनाएँ, तुम्हारी कल्पनाएँ, तुम्हारे संवेदन, तुम्हारे हर्ष-विषाद, तुम्हारा प्रेम और तुम्हारी घृणा सब प्रज्ञाशक्तिके द्वारा नियंत्रित होती रहे, तभी तुम्हारा कल्याण है।

मनुष्योंमें और इस ग्रहके अन्य जीवन-यात्रियोंमें यहाँ ही तो प्रभेद है।

पशु प्रज्ञासे नहीं सुखकी भावनासे नियंत्रित होते हैं। उनकी सहजात प्रवृत्तियाँ उनपर शासन करती हैं।

लेकिन तुम उनमें नहीं हो। प्रज्ञाशक्ति तुम्हारे साथ है, उससे लाभ उठाओ !

पशुकी जीवन-चर्यामे और तुम्हारी जीवन चर्यामें महान् अंतर है !

आजकल एक विचित्र और हानिकारक प्रवृत्ति चल पड़ी है कि लोग मानव-सम्बन्धित प्राकृतिक नियमोंका परिज्ञान पशुओंके आचरणसे प्राप्त करना चाहते हैं !

जितने अंशोंमें जीवन-यात्री अपनेको इस पाशविक प्रवृत्तिका दास बनाता है, उतने ही अंशोंमें वह हतवीर्य होता है,—निपतित होता है।

सहजात प्रवृत्ति और सुखान्वेषिणी वासना पशुओंकी शिक्षि-काएँ होती हैं, लेकिन मानव-शिशुके लिये वे शिक्षा-पथमें सर्वाधिक बाधक सिद्ध होती हैं!

इनसे मुक्त हुए बिना कोई भी विद्यार्थी प्रगति नहीं कर सकता। उसे कष्टसहिष्णु होना ही पड़ेगा!

अनेकानेक तरुण, जिन्हें प्रतिभाका वरदान मिला था, कष्ट-सहिष्णुताके अभावमें सदाके लिये बरबाद हो गये! उनकी प्रतिज्ञा सदाके लिये नष्ट हो गयी। जिनके सम्बन्धमें यह आशा की जाती थी कि ये कभी देशके आलोकदानी महापुरुष बनेंगे वे तिमिरपथी व्यक्तियोंसे भी अधिक पतित हो गये।

'भोग कामनासे ऊपर उठो! प्रज्ञा-शक्ति तुम्हारी पथ दर्शिका है!' समस्त मानवोंको प्रकृतिपुकार-पुकार कर यह कह रही है!

और फिर तुम! ..

तुम्हारे लिये तो कहा ही क्या जाय!...

कितना गुरुत्वपूर्ण कार्य है तुम्हारा!

कितना भार है तुम्हारे सिरपर कर्त्तव्यका!

और, कितनी दूर जाना है तुम्हें!

सुखान्वेषी नहीं, सत्यान्वेषी बनो!

सुख और दुःखसे ऊपर उठो और अपने कर्त्तव्यका पालन करो!

जो यौवन सुखकी बलिवेदी पर कर्तव्यकी बलि देता है, इस लोकका अणु-अणु उसपर हँसता है !

भोगकी पुकार तुम्हारी अपनी पुकार नहीं है। तुम्हारे साथ जो पशु है उसकी पुकार है !

इसमें उसका कोई दोष भी तो नहीं। वह अपने स्वभावके अनुसार आचरण करता है !

लेकिन ओ प्रकाश-पुत्र ! तुम क्यों अपने स्वाभाविक आचरणोंसे विरत होते हो !

तुम क्यों उनके समान आचरण रह-रहकर करने लगते हो, जो प्रज्ञाशक्तिकी छायासे भी दूर हैं !

सुख और दुःख नहीं, सत्य, शिव और सुन्दरका ध्यान रखो !

भोग विलासकी लालसाओंसे ऊपर उठकर मंजिलकी ओर देखो और उस ओर कदम बढ़ानेकी चेष्टा करो !

भोग-विलास तुम्हारे चरणोंकी लौह शृंखलाएँ बन जायँगी !

एक भी कदम आगे नहीं बढ़ा सकोगे।

विश्वास करो मेरी वाणीपर !

तुम इस ग्रहपर मृत्तिकाकी पुतलियोंके साथ आलिङ्गन-पास में बद्ध होने, क्रीड़ा-कल्लोल करने,—हेम-हर्म्यके सुसज्जित दीपोज्ज्वल कक्षमें निधुवन-सुख लूटने नहीं आये हो।

अपने काँटोंके ताजकी ओर तो ध्यान दो !

---

[३७]

इस देशमें तुम्हारी पिपासा नहीं मिट सकती !

व्यर्थ ही क्यों इधर उधर भटकना चाहते हो !

जिस पियूष-पात्रकी तुम्हें आवश्यकता है, वह मंजिलमें ही मिल सकता है, इस राहमें नहीं !

उन पागलोंका अनुकरण न करो, जो अपनी वासनाओंकी पूर्त्तिका बहु विध प्रयास कर रहे हैं, और सारा-का-सारा जीवन इसीमे अतियापित कर डालते हैं !

उनकी कोई भी वासना तृप्त नहीं होती।

प्रज्वलित अनल-कुण्डको वे अविवेकी घृताहुतिके द्वारा शान्त करना चाहते हैं।

बालुकासे वे तेल निकालना चाहते हैं।

शरीर उनका बच्चोंका-सा नहीं, किन्तु बुद्धि बच्चोंकी-सी ही है !

बच्चोंके खेलमें और उनके व्यापार-कार्यमें कोई प्रभेद नहीं !

बच्चे छोटे हैं, इसलिये छोटे खिलौनोंसे खेलते हैं, वे बड़े हैं, इसलिये बड़े खिलौनोंसे खेलते हैं !

उनकी मोटरें, उनके रेडियो, उनके ग्रामोफोन खिलौने ही हैं !

बच्चे कौड़ियां या इसी प्रकारकी अन्य चीजें एकत्रित करते हुए फूले नहीं समाते, ये चांदी और सोनेके टुकड़ोंको अपनी तिजो-रियोंमें भरते हुए प्रसन्न होते हैं !

किन्तु इनकी अन्तरात्मा सदैव सिसकती रहती है।

इनका पशु इन्हें सदैव नाच नचाता रहता है।

मदिरा न पीकर भी ये मदपायियों-सा आचरण सदैव करते रहते हैं।

इनका जीवन वेदना और के बीच सदैव झूला झूलाता रहता है !

इनकी वासना द्रौपदीका चीर बन जाती है !

ये बड़े-बड़े महलोंका निर्माण करते हैं !

अपने कक्षोंमें विलासकी सामग्रियां एकत्रित करते हैं। सुन्दर नारियोंको अपने वेश्यमे बुलाते हैं।

किन्तु जो चाहते हैं, वह पाते नहीं !

इस देशमे आजतक कोई पायी नहीं सका !

तुम यह समझो कि तुम्हारा ही जीवन रसहीन है,—तुम्हीं अंधड़ों और तूफानोंके साथी बने हुए हो।

जरा उनके हृदयकी अवस्थापर भी तो दृग्पात करो ' अरमानों की चितासे वहां सदैव लपटें उठा करती हैं !

इस देशमें सुखके पीछे दौड़ना आत्मघात करना है !

तुममें और उनमें विभेद यही है कि वे न तो मंजिलतक ही पहुंच सकेंगे और न इस देशमें ही उस वस्तुको प्राप्त कर सकेंगे,

जिसके अभावमें उनकी अन्तरात्मा चीत्कार करती रहती है और तुम इस यात्रा-पथके बाधा-विघ्नोंका सामना करते हुए,— पर्वतमालाओंको लांघते हुए वहां पहुंच जाओगे जहां पहुंचनेके बाद आंखोंके आंसू सदाके लिये सूख जाते हैं।

इस देशमें आंखोंके आंसू कभी नहीं सूख सकते !

यह आंसुओंका देश जो ठहरा !

गीताके उस श्लोकको सदैव याद रखो —

आ ब्रह्म भुवनाल्लोकाः पुनरावर्त्तिनोऽर्जुनः !
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम !

वह परम धाम तुम्हें तभी प्राप्त हो सकेगा, जब तुम इस जादू के देशसे तुम्हें उपरति हो जायगी !

बीती हुई बातोंसे शिक्षा अवश्य ग्रहण करो, किन्तु उनपर अश्रुपात न करो !

अश्रुपात करनेसे कोई लाभ भी नहीं।

व्यर्थ नहीं समय नष्ट होता है, हृदयकी शक्तियां भी आहत होती जाती हैं !

माना, तुमने पहले कुछ ऐसी गलतियां की हैं, जिन्हें यदि न करते तो आज तुम सहस्रगुणित वेगसे आगेकी ओर कदम बढ़ाते !

माना, कई बार तुम्हारी सफलता असफलतामें परिणत हो गयी है !

किन्तु जीवन-यात्री! इस यात्रा-पथमें यह कोई नई बात नहीं।

धैर्य और आशा—ये दो गुण इस पथमें विजयी होनेके लिये अनिवार्य हैं!

तुम्हारा अभी क्या बिगड़ा है, अभी तो यात्रा-पथका आरम्भ ही है।

क्या जाने कितनोंकी आशा-लतिकापर भीषण रूपसे यहाँ करका पात हुआ है और फिर भी वे हृदयको अकम्पित रखते हुए आगे बढ़े हैं।

क्या जाने कितनोंका अन्तर्पुष्प दुर्भाग्यके वज्र-चरणोंसे निर्ममतापूर्वक रौंद डाला गया है, यदि वे तुम्हारी तरह धैर्य खो बैठते तो उनका क्या होता!

न्यूटनसे, जिसने गुरुत्वाकर्षणके सिद्धान्तके द्वारा वैज्ञानिक जगत्‌में क्रान्ति उत्पन्न कर दी थी; शिक्षा ग्रहण करो। बीस वर्षके अक्लान्त परिश्रमसे उसने एक पुस्तक लिखी थी; एक दिन उसकी अनुपस्थितिमें उसके कुत्तेने उस ग्रन्थकी पाण्डुलिपिपर लैंप गिरा दिया। परिणाम यह हुआ कि सारी पाण्डुलिपि जल गयी।

तुम्हीं सोचो, एक वैज्ञानिककी बीस वर्षकी कठोर साधनाका फल क्षणोंमें नष्ट हो गया!

यदि तुम होते तो शायद मूर्च्छित हो जाते!

लेकिन न्यूटनका धैर्य देखो। उसने उस कुत्तेका कोई अनिष्ट नहीं किया! एक विवेकीकी शान्ति मुखपर लिये हुए केवल इतना ही कहा—'डायमंड, तुम नहीं जानते तुमने मेरा कितना बड़ा अहित किया है!'

कितना महान् व्यक्ति था वह!

इस प्रकारके महान् व्यक्तियोंकी स्मृतिसे सदैव अपने प्राणोंको बल प्रदान करते रहो!

तुम्हारे स्मृति-देशमें विद्यमान जिन व्यक्तियोंका चित्र रहता है, उनका तुम्हारे ऊपर असाधारण प्रभाव पड़ता है।

अरस्तू, प्लेटो, सुकरात, वेदव्यास, वाल्मीकि, कपिल, कणाद, सूर, तुलसी, जॉन ऑफ आर्क, गैलिलियों, कोपर निकस कनफ्यूशियस प्रभृति व्यक्तियोंके चित्रोंको अपने स्मृति-जगत्में स्थान दो!

तुम्हारे चरित्रपर इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा।

जब-तब इस प्रकारकी कल्पना किया करो कि जीसस क्राइस्ट जनताको ईश्वर-प्रेमका उपदेश दे रहा है और उसपर पत्थर फेंके जा रहे हैं। फिर भी वह अविचलित है! उसकी अन्तर्दीप-शिखा अकम्पित है! उसके कन्धेपर क्रॉस रखकर उसे ज्ञानके शत्रु कोड़ोंका प्रहार करते हुए ले जा रहे हैं! मार्गमे थककर वह गिर पड़ता है! स्वेदसे औह रक्तसे उसका शरीर सिञ्चित हो रहा है!

फिर भी, वह प्रशान्त है।—विश्वास और प्रेमकी दीप-शिखा अकम्पित ही है!

क्रॉसपर उसे लटकाया जाता है और हाथों, पांवोंमें लोहेकी कीलें ठोंकी जा रही हैं ! आँखें ऊपर किये हुए वह अपनेको इस मायालोकमें प्रेषित करनेवालेसे विकलतापूर्वक पूछता है—'एला एला, लामा सावाक्त हानी ?'

इस प्रकारकी कल्पना तुम्हारे डगमगाते हुए चरणों को बल देगी।—तुम्हें बतायेगी कि मंजिलतक पहुंचनेके लिए कितनी कुर्बानियां करनी पड़ती हैं ! सुख-वैभव जब-जब तुम्हें अपनी ओर आकृष्ट करें तब-तब तुम उस महामहिम व्यक्तिकी इस प्रकार कल्पना किया करो !

जब-जब तुम्हें महलों भी माया आकृष्ट करे तुम वेद-व्यास प्रभृति ऋषियोंकी याद करो ! कल्पना करो कि शान्त सरिता-तट-पर उटजमें कुशासनपर महर्षि बैठे हुए हैं और चेहरेपर स्वस्तिक शान्ति छायी हुई है !

जब-जब तुम्हारा धैर्य स्खलित होने लगे, तुम उस डार्विनका चित्र अपनी स्मृतिके सामने लाओ जो मानवी उत्पत्तिकी वास्तवकता जाननेके लिये वर्षोंतक जंगलोंकी खाक छानता फिरा था !

कल्पनाका चरित्रपर जो प्रभाव पड़ता है, वह साधारण नहीं !

तुम इसे जानते ही हो।

---

[३८]

यह क्या ? तुम हिचकिचा क्यों रहे हो ? सिर्फ इसीलिये कि तुम्हारे सामने जलपूर्ण सरिता आ गयी है और कहीं कोई नाविक नहीं दिखलायी दे रहा !

बावले ! युवक होकर भी सरिताकी लहरोंसे जूझनेकी प्रवृत्ति तुममे उत्पन्न नहीं हो रही !

यौवन तो संकटोंको ढूढ़ता फिरता है !

संघर्षसे जो क्षण खाली जाता है उसे वह घृणाकी दृष्टिसे देखता है।

उत्ताल तरंगमालाओंसे जो यौवन घबड़ा जाय, वह यौवन क्या ?

यौवन भी कहीं नाविककी राह देखता है ! और वह भी सिर्फ एक छोटी-सी सरिताके उस पार जाने के लिये ?

अपने नाविक स्वयं बनो, युवक !

इस मार्गमें कोई किसीकी तरणीको खेनेवाला नहीं !

प्रत्येक जीवन यात्रीको अपनी तरणी आप ही खेनी पड़ती है !—अपने ही भुजबलपर दूसरे तटपर चरण रखने पड़ते हैं !

नाविककी प्रतीक्षामें सारी रात बिता दोगे, फिर भी वह न आयेगा !

प्रभातकी स्वर्णिम किरणोंसे धरित्रीका रिक्त अंचल भरता हुआ कोई गन्धर्व कुमार तुम्हारी किंकर्त्तव्य विमूढ़तापर उपेक्षा-भरी हँसी हँस देगा !

विहंगम आश्चर्यान्वित तुम्हारी ओर देखेंगे और कहेंगे, युवक होकर एक नन्ही-सी सरिताके पार भी न जा सकता ।

यात्री, क्यों अपना उपहास कराते हो ।

माना, रैन, अँधेरी है !

माना हाथको हाथ नहीं सूझता !

यह भी माना, कि बादलोंने आकाशके तारक-प्रदीप भी बुझा दिये हैं और अश्रु-वर्षण न जाने किस वेदनासे व्यथित होकर आरम्भ कर दिया है !

फिर भी युवक, तुम यह क्यों भूल जाते हो कि तुम्हारी शक्तियाँ सामान्य नहीं :—तुम शक्तिके ज्योतिर्मय उत्स हो ! बढ़ो और अपने भुजबलपर विश्वास करो !

इस मार्गमें तुम्हीं पहले नहीं आये हो ।

और भी अनेकानेक यात्री आये और चले गये हैं !

तुम्हारी ही तरह थे वे भी !

कोई व्रजसे उनका शरीर नहीं निर्मित हुआ था !

उनके मार्गमें भी इसी तरह कण्टक बिखरे रहते थे ! स्वर्गकी अप्सराएँ पाटल-पुष्प विकीर्ण करने नहीं आया करती थीं !

इसी तरह जब-तब सघन श्यामवारिद मालाएँ उनके व्योममें भी गर्जना करने लगती थी ! सदैव शरच्चन्द्रिका ही वर्षित नहीं होती रहती थी !

फिर भी वे हताश नहीं हुए !

फिर भी वे रुके नहीं।

उनके चरण बढ़ते ही रहे !—

रक्त-स्वेदसे लथपथ !!

अभी तुम्हारी यात्राका तो यह आरम्भ ही है !

अभी तो ऐसी क्या जाने कितनी सरिताएँ पार करनी हैं !

क्या जाने कितनी-कितनी पर्वत मालाओंको लाँघना है।

मंजिलतक पहुंचना खेल नहीं है युवक !

यह देश आलोकका नहीं, अन्धकारका है !

अमृतका नहीं, विषका है !

ज्ञानका नहीं, अज्ञानका है !

सौंदर्यका नहीं, असौंदर्यका है !

इस दिगन्तप्रसर मोह-मरुस्थलकी मरीचिकासे विमोहित न हो जाना, अन्यथा तुम कहींके न रहोगे !

जल-बुदबुदकी तरह है यहाँके दृश्य।

इस क्षणिक यात्रा-पथको सुखमय बनानेके प्रयासमें चिरन्तन आवासकी ज्योतिकी कहीं नष्ट न कर बैठना !

यह प्रवञ्चनामय पथ है !

राही, सम्हल-सम्हलकर चलाना ! यहाँ चारों ओर पाश बिखरे पड़े हैं !

मंजिलतक शीघ्रातिशीघ्र पहुंचनेकी आशाका मशाला सदैव प्रज्वलित रखो !

अपनी शक्तियोंपर अविश्वास न करते हुए, सदैव ऊपर उठते हुए प्रतिरोधियोंको दिखला दो कि तुम्हारा पथावरोध करना असम्भव है !

तुम वह महाहुताशन हो, जहाँ समस्त अवरोधक शक्तियाँ भस्मसात् हो जाती हैं !

तुम वह तूफान हो, जिसकी राहके कांटे स्वतः पथ छोड़ देते हैं !

रह-रहकर वे कौन हैं जो तुम्हें पुकार रहे हैं ।

उनकी पुकारपर ध्यान दो । वे स्वयं तो वरबाद हो ही चुके, अब तुम्हें भी कहींका न रखनेका प्रयास कर रहे हैं !

माना, उनकी गठरीमें स्वर्ण और रजतके टुकड़े भरे पड़े हैं !

माना, उनके पास कोमलकान्त रूपसियाँ सोयी हुई हैं !

माना, अविवेकी मानव-समाज उन्हें सब प्रकारकी सुविधाएँ प्रदान कर रहा है ।

लेकिन जरा उनके अन्दर तो झांककर देखो ।

घृणासे सिहर उठोगे !

करुणासे तुम्हारी आँखें अश्रु-सजल हो जायँगी !

महलोंके वे निवासी नालीके कीड़ोंसे भी अधिक घृणित जीवन बिता रहे हैं !

मंजिल तो उन्हें क्या खाक मिलेगी, उनका मार्ग भी जो औरोंको पुष्प-सङ्कुल प्रतीत हो रहा है, दुर्गन्धपूर्ण कर्दमसे पूर्ण है !

उनकी पुकार है तुम भी उनका साथ दो और अपने यात्रा-पथके इतिहासको सदाके लिये कलङ्कित कर डालो।

छोड़ो उन्हें!

उनकी मंजिल और है, तुम्हारी मंज़िल और!

कौन हैं वे तुम्हारे!

क्या कहा वे मेरे सम्बन्धी हैं।

बावले जीवन यात्री! कौन किसका है यहाँ!

इस देशमें सब स्वार्थके संगी हैं। सब मतलबके मीत हैं!

मनका मीत यहाँ नहीं मिलेगा! व्यर्थ ही क्यों उसके अन्वेषणमें अपना समय और अपनी शक्तियाँ नष्ट कर रहे हो।

तबतक तुम्हारे चरणोंमें गति नहीं आ सकती, जबतक तुम इनकी पुकारपर ध्यान देते रहोगे!

क्या कहा, 'ये मेरे साथी हैं!,

बावले, इस राहमें कोई किसीका साथी नहीं!

औरोंका साथ निभानेके फेरमें कहीं अपने इस प्रदीपका साथ न छोड़ देना, जो तुम्हें इस तिमिराकीर्ण बन्धुर जीवन-मार्ग पर सदैव प्रकाश प्रदान करता आया है!

इस प्रज्ञा-प्रदीपको ही अपना साथी समझते हुए आगे बढ़े चलो।

कहीं यह बुझ न जाय!

यह बुझा और तुम्हारी समस्त आशाएँ चीत्कार कर उठेंगी।

इस प्रज्ञा-प्रदीपको सदैव प्रज्वलित रखनेके लिये ही अनेकानेक ऋषि महर्षियोंने सघन कातारोंमें निवास किया है और समस्त प्रकारके शारीरिक कष्टोंका वरण किया है !

व्यापारिक वातावरण इसका सबसे बड़ा शत्रु है !

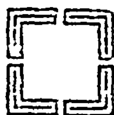
व्यापारका वर्त्तमान स्वरूप मानवी सभ्यताका शत्रु है !

मानवी संस्कृति व्यापारिकताकी वर्त्तमान रूप-रेखाके कारण निरन्तर पदानत हो रही है !

तुम इस झंझासे अपने प्रज्ञा-प्रदीपकी सदैव रक्षा करते रहो !

संसारका सारा स्वर्ण एक ओर और तुम्हारा प्रज्ञा-प्रदीप एक ओर !

चक्रवर्त्तित्वको ठुकरा देना, किन्तु यह निर्वापित न होने पाये !



[३६]

कष्टोंसे जो नहीं विचलित होता, महान् वही है।

यह यात्रा-पथ कष्टोंसे समाकीर्ण है। जो कष्टोंसे विचलित होता है, वह कभी भी प्रगति नहीं कर सकता।

कष्टोंकी ओर मुसकुराते हुए देखो और अविचलित भावसे उनका स्वागत करो!

सुखकामुक न बनो! सुखकामुक मूर्ख ही नहीं, आत्महन्ता भी है!

इस यात्रा-पथमें सुख नहीं है!

दुःख और विमनस्कताके बीच यह जिन्दगीका झूला है!

दुःखोंको सहना कठिन अवश्य है, किन्तु आदर्शकी ज्वाला सारी कठिनताएँ विदूरित कर डालती है!

प्रिय-पथके काँटे भी कष्टकर नहीं होते।

दुःखोंको उस अदृश्य दिलदारके वरदान समझो जिसने तुम्हें इस विचित्र यात्रा-पथमें भेजा है।

जबतक कष्टोंका सामना मुसकराते हुए करनेकी क्षमता तुम अपनेमें उत्पन्न न कर लो, क्षणभरके लिये भी यह न सोचो कि तुम उस ओरके अन्धकार-प्रिय जीवन-यात्रियोंसे ऊपर उठे हुए हो।

कदम-कदमपर काल्पनिक भीतियाँ तुम्हें संत्रस्त करती हैं! रह-रहकर भविष्यका तिमिराक्रांत-चित्र तुम्हें प्रकम्पित कर डालता है! नानाविध अविवेकितापूर्ण कल्पनाओंका झंझावात कदम-कदमपर तुम्हारे अन्तर्विटपीकी शाखाओंको झकझोर कर चला जाता है!

और, फिर भी तुम कहते हो, तुम उनसे आगे हो!

मिथ्या अभिमान है यह तुम्हारा युवक!

मैं तुम्हारी शक्तियोंका अपमान नहीं करता! शक्तियाँ तुममें अनन्त हैं!

मैं तुम्हारे यौवनकी भर्त्सना नहीं करता: तुम्हारा यौवन अग्निमुखी है!

लेकिन तुम्हारी पद्धतियाँ ठीकनहीं! उन्होंने ही आज तुम्हें इतना विपन्न कर रखा है!

कभी तुम अतीतके शवपर अश्रुपात करते हो तो कभी अनागतकी दुस्सह यातनाओंकी कल्पना पर!

क्या पागलपन है!

रह-रहकर रुक जाते हो और सोचने लगते हो, कहीं ऐसा न हो जाय! कहीं मेरे सारे अरमान धूलमें न मिल जायँ!

क्या यौवन इसी प्रकार सोचता है?

कितनी दुर्बलताका समावेश तुम्हारे हृदयमें हो रहा है युवक!

मैं चाहता हूँ, तुममें भीतिका क्षुद्रा क्षुद्र अंश भी न रहे!

मैं चाहता हूँ, तुम तूफानोंके सहचर बनो!

मैं चाहता हूँ आँधियाँ तुम्हारी बलाएँ ले!

मैं चाहता हूँ, आकाशके सघन-श्याम बादल तुम्हें देखकर तुम्हारे चरण चूमनेको व्योम-पथमें विद्रोह कर उठे।

तब तुम्हारे यौवनकी सार्थकता है!

खड्ग लेकर भी यदि कोई व्यक्ति शत्रु-सैन्यका उतना ही अहितकर पाता है जितना अहित एक आशाहीन व्यक्ति करता है तो उस शस्त्रधारीकी महत्ता क्या रही?

कहाँ तुम्हारे बौद्धिक शक्तियाँ और कहाँ उस ओरके वे कोटि-कोटि-अक्षम जीवन-यात्री!

तुम्हें यदि इस बातका अभिमान है कि तुम इस दुर्गम गिरि-पथमें भी उनकी अपेक्षा अधिक त्वरित गतिसे आगेको बढ़ रहे हो तो यह अभिमान निराधार है।

तुम्हें अभीकी अपेक्षा कहीं अधिक वेगसे आगेको बढ़ना होगा।

सिंह यदि इस बातका अभिमान करे कि वह एक साधारण वन-पशुसे कुछ अधिक वीरताका कार्य कर रहा है तो उसका अभिमान क्या सार्थक है।

तूफान यदि एक-दो अशक्त व्रततिबालाओंको वृक्षालिङ्गनसे विरहित करके धाराशायी कर दे और मलयानिलको ऐसा करनेमें असमर्थ देखकर गर्वसे प्रसन्नमत्त हो उठे तो क्या यह उसको शोभा देता है!

अभिमान तुम तभी कर सकोगे जब तुम्हारी समस्त दुर्बलताएँ नष्ट हो जायगी जब तुम्हारे विचार शक्ति और सौन्दर्यसे परिपूर्ण होने लगेंगे—जब तुम्हारी इस पार्थिव यात्राके विक्रमको देखकर व्योमचारी भी ईर्षा करने लगेंगे—जब इस ग्रहका अणु-अणु तुम्हारे जैसे जीवन-यात्रीको पाकर अपने अस्तित्वपर अभिमान करने लगेगा !

आज तुममें अनेकानेक त्रुटियाँ है !

आज कदम-कदमपर तुम मन्मथके केशर-शरोंके द्वारा आहत होते हो,—मन्मथके उन केशर-शरोंके जिनका अस्तित्व ही तुम्हारे लिये नष्ट हो जाना चाहिये था !

रह-रहकर अविवेकी संसारियोंके रजत-शृङ्गारित महलोंकी माया तुम्हारे चित्रको अपनी ओर आकर्षित करने लगती है,—उन महलोंकी माया जिनमें और शतजीर्ण उटजोंमें तुम्हारे लिये कोई पार्थक्य ही नहीं रह जाना चाहिये था !

आज तुम किरणोंका आवाहन अवश्य कर रहे हो किन्तु उनके लिये सुखोंको कुर्बान करते हुए तुम्हारा हिया काँप उठता है,—उन सुखोंको कुर्बान करते हुए जिनसे अब तक तुम्हें प्रचण्ड वितृष्णा हो जानी चाहिये थी !

युवक ! वेदनाके विद्यालयमें जो विद्या प्राप्त होती है वह अन्यत्र नहीं।

आँसुओंसे अन्तपुस्तिका पर जो लिखा जाता है, वह जीवनके अवसान तक साथ देता है !

जो दुःखोंको प्यार नहीं कर सकता, वह मंजिलतक पहुंचनेका अधिकारी नहीं !

श्रीराम चौदह वर्षोंतक वनोंमें भटकते फिरे थे ! समृद्धिशाली होते हुए भी कष्टोंका वरणन करते हुए क्या उन्हें तनिक भी संकोच हुआ था ?

कर्त्तव्यकी बलिवेदी पर उन्होंने क्या-क्या कुर्बान नहीं किया राज्य-सुखको ही एक सुदीर्घ अवधिके लिये परित्यक्त नहीं किया, अपितु अपनी प्राण-प्रिया श्रीका भी परित्याग कर दिया।

श्रीराम और सीतका परित्याग।... ... जरा सोचो तो सही कितनी क्रन्दनमयी वेदना श्रीरामके हृदयमें नहीं जागृत हो उठी होगी !

दोनोंका प्रेम साधारण नहीं था युवक !

किन्तु कर्त्तव्यके लिये सब कुछ करना पड़ता है।

मैं तुम्हें कई बार कह चुका हूँ, यह लोक प्रेम-लीलाके लिये नहीं, कर्त्तव्य पालनके लिये है। जीवनका यह यात्रा-पथ अभिसार-पथ नहीं संघर्ष-पथ है !

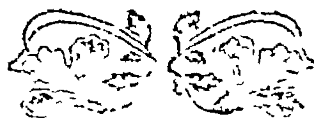
महान् वह है जिसकी आँखोंमें आँसूकी एक भी बून्द न आये। केवल चरणोंका शोणित पथ-कन्टकोंको पिलाता हुआ जो आगेको बढ़ता चले—तूफानोंको खुले वक्षपर झेलता हुआ।

जिस समय सुखोपभोग कामना तुम्हारे मानसमें उद्वेलित होने लगती है, क्या उस समय अनेकानेक आँखे तुम्हारी ओर भर्त्सनाभरी दृष्टिसे नहीं देखती ?

क्या उस समय विपिन-पथमे नंगे पैरों वनचारियोंके वेषमें चले जा रहे श्रीरामकी याद तुम्हारे हृदयमे अपनी सुख-लालसा के प्रति घृणा उत्पन्न नहीं करती ?

क्या उस समय क्रॉसपर लटके हुए जिसस क्राइस्टके हाथों और पैरोंसे होनेवाले रक्त-स्रावकी स्मृति तुम्हें बेचैन नहीं कर डालती ?

क्या उस समय अनेकानेक शहीदोंकी सुधिकी धूनी एकाएक तुम्हारे प्राण-प्रदेशमें नहीं धधक उठती ?



[४०]

अब विदा दो।

चला मैं ! मुझे बहुत-से काम है। जीवनकी अनेकानेक गहराइयोंकी थाह लेनी है। अनेकानेक समस्याओंका समाधान करना है !

मुझे समय नहीं है ! यह तो तुम थे, जो मैं इतनी दूर तुम्हारे साथ चला आया !

मेरा विश्वास है, अब तुम अकम्पित गतिसे आगे बढ़ सकोगे झंझानिलका कोई भी निष्ठुर झोंका तुम्हारी अन्तर्दीप-शिखाको निर्वापित करनेमें समर्थ न हो सकेगा।

युवक प्रवीर। मेरी बातें न भूलना। इस अन्धकाराच्छन्न बन्धुर जीवन-मार्गमें वे तुम्हें सदैव प्रकाश प्रदान करती रहेंगी।

जीवन-क्षितिज जब-जब भीमकाय मेघमालाओंसे आक्रान्त होने लगे, तब-तब तुम उन्हें याद करके अपनी पथ प्रशस्तिका प्रयास करना !

तुम्हारी विजय निश्चित है !

एमर्सनका वह वाक्य अपने हृदय-पटलपर अंकित करलो—
There is no defeat but from within.

विजयका दृढ़ निश्चय यदि अपराजय रहा तो, पराजय असम्भव है !

क्षणिक असफलताको कहीं भूलसे पराजय न समझ बैठना !

तो मैं चला !

बढ़े चलो तुम !

मस्तक उन्नत किये हुए, स्फीत वक्षस्थल लिये हुए, यौवनकी ज्वालासे मार्गकी बाधाओंको भस्मसात करते हुए निरन्तर आगे बढ़े चलो।

मंजिल तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है !

